पांचवां अध्याय

इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानी : सामाजिक न्याय का दलित संदर्भ

5.1 भूमिका : दलित संदर्भ : सामाजिक अन्याय

दलित संदर्भ के अंतर्गत दलित वर्ग के संघर्ष, उत्पीड़न, शोषण और विद्रोह को इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानियों में अभिव्यक्ति मिली है। इक्कीसवीं सदी में सामाजिक न्याय की अवधारणा में दलित विमर्श प्रमुख है। इक्कीसवीं सदी का मानव सदियों पुरानी दलदल में फंसा हुआ है। वर्तमान में अनेकों परिवर्तनों के बावजूद भी दलितों को समाज में उचित मान-सम्मान प्राप्त नहीं हुआ है। भारतीय समाज में आज भी चतुर्वर्ण व्यवस्था कायम है जिसके अंतर्गत-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र आते हैं। अंतिम वर्ण 'शूद्र' जो आज 'दलित' शब्द के नाम से प्रचलित हैं। दलित शब्द का अर्थ 'टूटा हुआ, दबा हुआ व कुचला हुआ माना जाता है। दलित वर्ग प्राचीन काल से ही शोषित व पीड़ित वर्ग रहा है।

दलितों के मसीहा बाबा भीमराव अम्बेडकर जिन्होंने दलितों की स्थिति को सुधारने के लिए कड़े प्रयास किये उन्होंने दलितों पर अत्याचार व उत्पीड़न के कारण धर्म-परिवर्तन करवाया परंतु दलितों के द्वारा बौद्ध धर्म को अपना कर भी उनकी स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आया। आज भी दलितों के साथ अस्पृश्यता व घृणित व्यवहार किया जाता है। धर्म-परिवर्तन व शिक्षित होने के बावजूद भी दलितों को अपमान व अन्याय का सामना करना पड़ता है। हिंदू धर्म में जाति-व्यवस्था होने के कारण दलित धर्म-परिवर्तन के बावजूद भी समाज में शोषण का शिकार होते है। उनकी स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आया, उनके प्रति घृणा का भाव ज्यों का त्यों बना रहता है। इस तथ्य को भगवान दास स्पष्ट करते हुए कहते हैं-"हमारे यहां बहुत से दलित और आदिवासी यह सोचकर बौद्ध, मुसलमान, सिख या ईसाई बने कि धर्म बदल लेने पर उन्हें समाज में मान मिलेगा। लेकिन हम देखते हैं कि ऐसा नहीं हुआ। धर्म बदल लेने पर भी जात-पात बनी रहती है और मनुष्य अपमान का शिकार होता रहता है।"[1]

इक्कीसवीं सदी के समाज में भी जाति को ही सर्वोपरि माना गया है। स्वतंत्र भारत में शिक्षा के स्तर पर भी लोगों की मानसिकता में जातिगत भावना ज्यों की त्यों बनी हुई है। दलित चाहे आर्थिक स्तर से मजबूत हो या शिक्षा के स्तर से फिर भी जाति के आधार पर पीड़ित व शोषित है। कवँल भारती भारत में जाति की गहरी जड़ों पर चिंता जताते हुए लिखते हैं-'जिस देश में करोड़ों लोग जाति के आधार पर मानवाधिकारों से वंचित रखे गए हों, वह देश सभ्य कैसे कहला सकता है? एक देश की समाज-व्यवस्था में एक सवर्ण हमेशा सवर्ण क्यों रहता है? एक अछूत हमेशा अछूत क्यों रहता है? यह व्यवस्था अपरिवर्तनीय क्यों हैं? यह कैसी व्यवस्था है, जिसमें व्यक्ति की योग्यता कोई मायने नहीं रखती है और जाति ही योग्यता का मापदंड है?"[2] समाज में दलित वर्ग जाति-व्यवस्था के अंतर्गत बुरी तरह से फंसा हुआ है। समाज में सवर्ण वर्ग कहे जाने वाले उच्च जाति के लोग निम्न जाति के लोग दलितों से हर क्षेत्र में जाति के आधार पर भेदभाव करते है। भगवान दास 'उत्पीड़ितों के मानाधिकार के संदर्भ' में दलित शोषण के प्रति अपने अनुभव को व्यक्त करते है कि दलित पढ़-लिख कर तिरस्कृत होता है वे स्वयं कहते है कि मैं भारतीय होने के बावजूद भी अछूत समुदाय में पैदा हुआ उन्होंने बहुत अपमान व अन्याय को सहना पड़ा, दलित होने पर उन्हें भारत में कभी मान-सम्मान नहीं मिला, वे कहते है-"मुझे अमरीका, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड आदि देशों में जाने पर जो मान मिलता है, वह मुझे अपने देश में नहीं मिलता। मैं सर्वोच्च न्यायलय में वकालत करता हूँ और हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी में लिखता हूँ और मैं समाज के लिए जीवन भर कुछ न कुछ करता रहा हूँ। लेकिन इसके बावजूद अपनी जाति के कारण मुझे अपमानित होना पड़ता है।"[3]

इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानियों में भी दलित शोषण उभर कर सामने आता है जिसके अंतर्गत दलित-उत्पीड़न, अन्याय, अत्याचार की समस्या को अभिव्यक्त किया गया है। समाज में दलित चाहे शिक्षित हो, योग्य हो, गुणवान हो परन्तु जाति-व्यवस्था व निम्न वर्ग के कारण उत्पीड़ित किया जाता है। वर्तमान हिंदी कहानियों में दलित शोषण सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व धार्मिक स्तर पर सामने प्रकट हुआ है। वर्तमान समाज में दलितों के साथ अस्पृश्यता की भावना, मैला ढ़ोने

की प्रथा, दास प्रथा, घृणित व अपमानित जीवन जीने पर विवश किया जाता है। इस प्रकार के शोषण का परिणाम निम्न वर्ग की जाति से है। इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानियों में दलित शोषण स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है जो इस प्रकार से निम्नलिखित है।

5.1.1 अस्पृश्यता के स्तर पर :

भारतीय समाज में दलित वर्ग के प्रति अस्पृश्यता की भावना आज भी बनी हुई है। समाज में अस्पृश्यता का मूल कारण ऊँच-नीच की भावना से है। जाति-व्यवस्था के कारण ही वर्तमान में भी दलितों के प्रति अस्पृश्यता की घटनाओं के दर्दनाक व भयानक विचित्र रूप हमारे सामने आ रहे है। भारतीय संविधान की धारा 17 के अंतर्गत अस्पृश्यता को समाप्त कर दिया गया है परन्तु वह लिखित रूप में ही सिमट कर रह गया है। समाज में आज भी सवर्ण वर्ग द्वारा दलितों से उचित व्यवहार नहीं किया जाता और उन्हें अस्पृश्यता की भावना से देखा जाता है। दलित वर्ग सदियों से ही न्याय के प्रति वंचित रहा है।

इक्कीसवीं सदी में भी दलित वर्ग प्रत्येक क्षेत्र में अपने प्रति अन्याय को लेकर पीड़ित है। अस्पृश्यता की समस्या को दूर करने के लिए भारतीय सरकार ने 1955 में 'अस्पृश्यता (अपराध) अधिनियम पारित किया गया था। इस अधिनियम के अंतर्गत अस्पृश्यता को व्यवहार में लाने कारावास व जुर्माने की सजा दी जा सकती है। अस्पृश्यता का निवारण पूर्णत: कानून के बल पर नहीं हो पाया है। संविधान के अनुसार भले ही अस्पृश्यता का अंत हो गया हो परंतु सामाजिक स्तर पर उच्च वर्ग की मानसिकता निम्न वर्ग के प्रति अपरिवर्तनीय है। रत्नकुमार सांभरिया की कहानी 'बदन दबना' में अस्पृश्यता को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। कहानी का दलित 'पूछाराम' 'हल्का सिंह' की हवेली पर एक नौकर के रूप में कार्य करता है। 'पूछाराम' के परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण उसके पिता 'रेमाराम' हेवली पर काम करने के लिए छोड़ आते है। 'रेमाराम' को अपनी पुत्री का विवाह करने के लिए रूपयों की जरूरत होती है वह 'हल्कासिंह' से दस हजार रूपये लेकर अपने होनहार पुत्र 'पूछाराम' को पांच साल के लिए 'हल्का सिंह' की हवेली पर गुलामी की जंजीरों में जकड़ कर आ जाता है। हवेली में दलित

'पूछाराम' के साथ अस्पृश्यता का भेदभाव व्यक्त किया जाता है। 'पूछाराम' निम्न जाति से सम्बन्धित होने के कारण हवेली में रखी वस्तुओं को स्पर्श नहीं कर सकता है। हवेली में 'पूछाराम' से पहले 'अमरिया' भी नौकर के रूप में काम करता था। 'पूछाराम' को जाति के आधार पर अस्पृश्यता की भावना से अन्याय का सामना करना पड़ता है। 'पूछाराम' गरीबी के कारण अन्याय सहने के लिए विवश है। 'हल्काराम' दलित 'पूछाराम' के प्रति अस्पृश्यता को स्पष्ट करता हुआ कहता है-

'सामने पेहड़ी पर अमरिया की मटकी रखी है।
उसी पर गिलास है। कोने में हैण्डपंप है।
प्यास लगे, पानी खींच लाना।"
"सुन।"
"जी।"
"अलमारी की तरफ न हाथ बढ़ाना, न देखना।"
"जी।"
"रोटी हम अपने हाथ देंगे।"[4]

श्योराज सिंह बेचैन की कहानी 'ओल्डएज होम' का 'तेजगुलाम' अपनी जाति व नाम से दुखी रहता है कि उसके माँ-बाप ने उसके नाम के पीछे गुलाम क्यों रख दिया है। 'तेजगुलाम' की विवाह होने के पश्चात् वह अपने माँ-बाप को 'ओल्डएज होम' आश्रम में रहने के लिए छोड़ आता है। 'तेज गुलाम' के वृद्ध माँ-बाप को अपनी निम्न जाति के कारण भेदभाव सहना पड़ता है। आश्रम में सवर्ण वर्ग के वृद्ध उनसे जाति को लेकर बातें करते व पूछते रहते हैं। कर्मचारी भी 'तेजगुलाम' के वृद्ध माँ-बाप के कार्य नहीं करते बल्कि उन्हें स्वयं काम करने के लिए कहते है उनके साथ अस्पृश्यता का भी भेदभाव होने लगता है। आश्रम में सवर्ण वर्ग के वृद्धों को पहले भोजन दिया जाता है बाद में निम्न जाति के वृद्धों को। 'तेजगुलाम' के मां-बाप दोनों डायरी लिखते है जिसमें उन्होंने अपने साथ हुए दुर्व्यवहार को व्यक्त किया हुआ है। 'तेजगुलाम' की माता 'सीता' डायरी में लिखती है कि आश्रम में सवर्ण जाति की स्त्रियाँ उसके साथ अस्पृश्यता की भावना रखते हुए भेदभाव करती है उसे निम्न जाति के कारण पानी को स्पर्श करने नहीं दिया गया वे लिखती है- "रामकली अहिरन, है तो सूद्र पर उसने भी मुझे अपने घड़े से

पानी नहीं पीने दिया। पूजा के वक्त सबके कान में कहा कि यह तो अछूतिन है।"[5]

समाज में सवर्ण वर्ग निम्न वर्ग के साथ अस्पृश्यता को लेकर अन्याय करता है। स्वयं जातिगत मानसिकता रखने वाले सवर्ण वर्ग दूसरों को भी मानसिकता में जाति का जहर गहराई से घोलते जाते है। वे अपनी संतान को भी पीढ़ी दर पीढ़ी जाति का पाठ पढ़ाते जाते है जिससे वे दलित वर्ग के प्रति अन्याय को कायम रख सकें। समाज में अस्पृश्यता के विविध आयाम प्रत्यक्ष रूप से प्रस्तुत हो रहे है। समाज में उच्च वर्ग द्वारा निम्न वर्ग को जाति के आधार पर घर व परिवार में भी प्रवेश नहीं करने दिया जाता है। सुशीला टाकभौरे की कहानी 'संघर्ष' का 'शंकर' कक्षा में सवर्ण सहपाठियों से अपमानित होता है। कहानी में 'शंकर' की नानी मैला ढ़ोने का कार्य करती है। अछूत होने के कारण उन्हें अन्याय का सामना करना पड़ता है। सवर्ण वर्ग छुआछूत की भावना रखते हुए 'शंकर' के घर में नहीं आते है परन्तु 'शंकर' एक दिन उच्च वर्ग के घर में प्रवेश कर जाता है, तो घर के लोग व 'शंकर' के सवर्ण मित्र उसे तिरस्कृत करके भगाते हुए कहते है-"घर में मत आ..... बाहर भाग.... बाहर दूर खड़ा होकर बात कर....."[6] 'शंकर' स्वभाव का जिद्दी होने के कारण गांव में जानबूझ कर किसी व्यक्ति या वस्तु को स्पर्श कर देता है तो लोग 'शंकर' को झिड़कते हुए मारने को दौड़ते है और कहते है-"अरे...अरे...,हट...हट, चल भाग... छूत कर रहा है।... पाजी कहीं का....कुता.... सुअर..."[7]

आज भी समाज में दलित वर्ग को सदियों पुरानी परंपराओं, रूढ़ियों का सामना करना पड़ रहा है। अस्पृश्यता की भावना भारतीय समाज में जाति के परिणाम से है। वर्तमान में भी निम्न वर्ग द्वारा सवर्ण वर्ग एवं उनकी वस्तुओं को स्पर्श कर लेने से अस्पृश्यता का एक यह रूप भी सामने आता है। एस॰ आर॰ हरनोट की कहानी 'सवर्ण देवता दलित देवता' में पात्र का पिता जो शहनाई मास्टर है। शहनाई मास्टर ने अपने लड़को को भी शहनाई बजाने के गुण बताये, उसे 'लीलादास शर्मा' के घर में देवताओं की पूजा व सेवा करने के लिए भेजा गया। रात को सर्दी बढ़ जाने के कारण सवर्ण बिरादरी के लोग रजाईयां, कम्बल लेकर

सो रहे थे। दलित वर्ग के लिए 'लीलादास शर्मा' ने कोई बन्दोबस्त नहीं किया। कहानी का पात्र रथ के साथ सोए पुजारी पर डाली दो रजाईयों में से एक रजाई ले आता है। रजाई लेने के कारण से पुजारी दलित लड़के पर भड़क जाता है कि उसने रथ और रजाई को छू कर अपवित्र कर दिया और गुस्से में पुजारी कहता है-"ओ छोकरे ! तेरा दमाग खराब हो गया है। दिखता नहीं तेरे को। यहां रथ रखा है। उसे छू दिया तैने। तेरी हिम्मत कैसे हुई यहां आने की और रजाई में हाथ लगाने की।"[8] 'लीलादास शर्मा' जातिगत अन्याय करते हुए अस्पृश्यता को लेकर गुस्से से कहता है-"सालों ने आठ जमात क्या पास कर ली, आसमान में चढ़ने लग गए। तेरे को दिखता नहीं कि नई रजाईयां है। तेरे छूने के बाद मैं इन्हें कहां डालूंगा।"[9]

इसी प्रकार से अस्पृश्यता की भावना को चित्रा मुद्गल की कहानी 'डोमिन काकी' में दिखाई देता है। इस कहानी में निम्न जाति की 'रतनी' सवर्ण जाति के घर सफाई का काम करने आती है। कहानी की पात्रा 'बिट्टो' अपनी दादी के कहने पर 'रतनी' को अनाज देने के लिए कहती है। दो-चार मुट्ठी अनाज जमीन पर गिर जाने पर 'बिट्टो' 'रतनी' की सहायता करने लगती है तभी 'बिट्टो' की दादी गुस्से से चिल्लाती हुई कहती है-"बेशऊर मूरख --- छू लिया तूने रतनी को?"[10] 'बिट्टो' की दादी उसे अच्छी तरह नहला कर, गंगाजल छिड़कने के बाद भी 'बिट्टो' को गुस्से से चेतावनी देती हुई कहती है- "आइन्दा" ख्याल रहे बिट्टो, रतनी को कुछ भी देने के लिए कहूँ तो ऊपर से कोंछ में फेंक देना, खबरदार उसे छूना मत ---।"[11]

इस प्रकार संविधान तथा समाज के विभिन्न नैतिक कानूनों के बावजूद समाज में दलितों के साथ अस्पृश्यता और घृणा की भावना विद्यमान है। इसी प्रकार का भेदभाव रत्नकुमार सांभरिया की कहानी 'मुक्ति' में दलित 'नानकराम' और उसका बेटा पहलवान 'चांद सिंह' उर्फ चंदू होता है। कहानी में मंदिर का महन्त' जो धर्म के नाम पर पाखण्ड करता है। मन्दिर में मूर्ति का स्वर्णमुकुट स्वयं चोरी करके अपनी 'खास' की लड़की की शादी में गहने बनवा देता है। स्वयं 'महन्तं' चरित्रहीन व्यक्ति है। 'नानकराम' धर्म में विश्वास रखता है। 'महन्त' जब अपनी सवारी लेकर

रास्ते में होता है तो आगे सांड अड़ जाता है। 'महन्त' 'नानकराम' से कहता है कि सांड को भगा कर महाराज की सवारी के लिए रास्ता बनाओ और धर्म की रक्षा करो क्योंकि महाराज की सवारी पीछे नहीं मुड़ेगी। 'नानकराम' का एकलौता पहलवान बेटा 'चंदू' सांड के आगे खुद की बलि देकर धर्म की रक्षा करता है। महाराज का रथ मंदिर के प्रवेश द्वार पर रूकता है तो 'नानकराम' रथ से मूर्ति उतारने लगता है तो महन्त जातिगत मानसिकता रखते हुए ऊँचे स्वर में 'नानकराम' से कहता है- "अरे नानकिया मेहतर है तू। झाड़ू वाले हाथ मूर्ति नहीं छूते।" "तेरी तो।"[12] 'नानकराम' सवर्ण वर्ग धर्म की रक्षा के लिए अपने पुत्र तक को बलिदान कर देता है परन्तु नीच जाति का होने के कारण उसे मूर्ति स्पर्श नहीं करने दिया जाता है। एक तरफ उसे अपने पुत्र को खोकर अन्याय का सामना करना पड़ता है दूसरी ही तरफ अस्पृश्यता के कारण अपमानित होना पड़ता है। सामाजिक न्याय की अवधारणा के अंतर्गत आज भी दलितों के प्रति अन्याय हो रहा है। सुरेन्द्र कटारिया सामाजिक न्याय के अंतर्गत अपने विचार रखते हुए कहते है- "सभी व्यक्ति जन्म से एक समान है और सभी में मानवीय गरिमा तथा गौरव को भाव है। किसी एक व्यक्ति के व्यक्तित्व को अन्य व्यक्तियों के व्यक्तित्व का साधन मात्र नहीं समझा जा सकता है। धर्म, वंश, प्रजाति, नस्ल, जाति, लिंग तथा अन्य आधारों पर व्यक्ति-व्यक्ति के बीच भेद करना, सामाजिक न्याय के विरूद्ध है।"[13]

भारत में जाति-व्यवस्था होने के कारण दलित वर्ग हिंदू धर्म की कुरीतियों एवं ऊँच-नीच की भावना से पीड़ित वर्ग रहा है। समाज में निम्न जाति होने के कारण दलित वर्ग मान-सम्मान का अधिकारी नहीं माना जाता अपितु उन्हें निम्न जाति के कारण जातिसूचक शब्दों से अपमान ही मिलता आया है। अस्पृश्यता का भेदभाव सूरजपाल चौहान की कहानी 'तीन चित्र' में 'राजबीर' के घर में बैठक के दौरान ऊँच-नीच की कुप्रथा पर चर्चा हो रही होती है। गांव में 'फूल सिंह' सफाई का कार्य करता है। सभी उसे 'फुलिया' कहकर पुकारते है। जो जाति से दलित है। 'राजबीर' 'फुलिया' को चाय पीने के लिए बुलाता है। 'फुलिया' के चले जाने के बाद 'राजबीर' अपनी 'अम्मा' को अस्पृश्यता की भावना को व्यक्त करता हुआ स्पष्ट कहता है-"अरे-अरे अम्मा, यह फुलिया का कप।"

'अम्मा' जातिगत मानसिकता रखते हुए कहती है-"हाँ हाँ, मोय पतौ है, इतनी बुद्धु ना हूँ कि फुलिया का जूठौ कप दूसरे कपों में मिला दूँगी।" 'राजबीर' तुरन्त कहता है- "अब इतनौ तो ध्यान रखनो ही पड़ेगौ कि जूठौ कप चूहड़े कौ है।"[14] 'राजबीर' व उसकी 'अम्मा' की बातें सुन उन्हीं के घर में बैठे लोग हैरान हो जाते है कि अभी तो जात-पात को लेकर इस बुराई पर चर्चा हो रही थी। समाज आज जाति को लेकर अपनी मानसिकता में परिवर्तन लाने में असमर्थ है। जिससे छुआछूत की भावना, अन्याय व शोषण दोबारा से स्थापित होने जा रहा है।

वर्तमान में कड़े कानून व्यवस्था, संविधान, पुलिस प्रशासन, सामाजिक न्याय की अवधारणा होने के बावजूद भी आज समाज जाति से निजात पाने में असफल दिखाई दे रहा है जिसके कारण अस्पृश्यता की भावना को बढ़ावा मिल रहा है। हाल ही में हिसार (हरियाणा) के दौलतपुर गांव की घटना में सनियाना गाँव के 'राजेश कुमार' ने खेत में रखे मटके से पानी पी लिया था तो दलित जाति का होने के कारण पानी को स्पर्श कर लेने से उसका हाथ काट दिया गया था। प्रत्यूष रंजन बालव 'अस्पृश्यता' को लेकर अपना कथन प्रस्तुत करते है-"अस्पृश्यता जाति का ही परिणाम है मनोवैज्ञानिक रूप से जाति प्रथा और अस्पृश्यता आपस में गुंथी हुई है। जाति-प्रथा और अस्पृश्यता एक ही सिद्धांत पर आधारित है। यदि एक व्यक्ति छुआछूत का व्यवहार करता है, तो इसका अर्थ है कि जाति-व्यवस्था में विश्वास रखता है।"[15] देश में जाति के कारण अस्पृश्यता की जड़े बहुत गहरी है। सूरजपाल चौहान की कहानी 'मंगल पाण्डेय का लौटा' 'अस्पृश्यता' को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया है (सन् 2007 में 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम के डेढ़ सौ वर्ष पूरे होने पर) कहानी में सवर्ण जाति के मंगल पाण्डेय' जो दलितों के प्रति अस्पृश्यता के भेदभाव को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया है। यह कहानी सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के जनक वीर योद्धा 'मातादीन हेला' की है। इसमें सवर्ण जाति के 'मंगल पाण्डेय' द्वारा दलित जाति के 'मातादीन' के साथ अस्पृश्यता का घिनौना रूप सामने आता है कि जब 'मंगल पाण्डेय' को 'मातादीन' की जाति का पता चलता है तो 'मंगल पाण्डेय' 'मातादीन' के साथ बुरा व्यवहार करता है। लेकिन पहले 'मंगल पाण्डेय' 'मातादीन' के साथ देश-प्रेम, एकता, समानता की बातें करता है। 'मातादीन'

'मंगल पाण्डेय' से पीने के लिए पानी माँगा और लोटा पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया कि तभी 'मंगल पाण्डेय' आक्रोश में आकर 'मातादीन' पर चिल्लाता हुआ एवं अपमानित करता हुआ कहता है- "अरे भंगी मेरा लोटा छूकर अपवित्र करेगा क्या?"[16]

'मातादीन' हैरान होकर 'मंगल पाण्डेय' से पूछता है- "क्या हुआ तुम्हें, तबीयत तो ठीक है?"

"कुछ नहीं हुआ मुझे और मेरी तबीयत भी ठीक है, अंग्रेज फौज से नौकरी करने के बाद तू अपनी जाति ही भूल गया, अपनी खाल में रहा कर भंगी।" 'मातादीन' कहता है- "यार पाण्डेय तुम जब भी मिलते हो तो एकता, देश-प्रेम, समता व समरसता की बातें करते हो।" 'मंगल पाण्डेय' जातिगत भावना रखते हुए कहता है- "मैं एकता व समरसता बठाने की बातें मुसलमानों व देश की दूसरी कौमों के साथ के लिए करता हूँ, हेला भंगियों के साथ नहीं।"[17] सूरजपाल चौहान की कहानी 'कारज' में 'मगनलाल' जाति भेद के कारण से गांव में आकर रहना नहीं चाहता 'मगनलाल' अच्छी तरह से जानता है कि आज भी गांव में नीची जाति के साथ अस्पृश्यता का भेदभाव व अपमानित किया जाता है। 'मगनलाल' बैंक में कार्य करता है वह शहर में मकान बनाने के लिए बैंक से लोन लेता है। लेकिन 'मगनलाल' की पत्नी 'कमला' गांव में रहने के लिए कहती है। वह अपने पति 'मगनलाल' को कहती है कि गांव में अब छुआछूत व ऊँच-नीच भावना ज्यादा नहीं है जो थोड़ी बहुत है वह धीरे-धीरे समाप्त हो जाएगी। 'कमला' की बातें सुनकर 'मगनलाल' कहता है- "देख पढ़े लिखे लोगों जैसी बातें मत कर, मेरे ऑफिस के बड़े-बड़े अफसर और बाबू छुआछूत पर ऐसी ही लम्बी-लम्बी बातें करते हैं, लेकिन वे अन्दर से कितने गहरे तक जाति-व्यवस्था से जुड़े हैं, यह मैं अच्छी तरह से जानता हूँ।"[18]

देश में आज भी दलित वर्ग के साथ अस्पृश्यता के कारण हो रहे अन्याय में बढ़ोतरी हो रही है। आज भी दलित वर्ग के साथ अस्पृश्यता के 154 प्रकार से उत्पीड़न व अपमानित कर अन्याय हो रहा है। "तीन जुलाई 2006 की तारीख। भीलवाड़ा का भगवानपुर गांव। दो दलित बच्चों बंटी और मोनू ने आईसक्रीम कप में

आईसक्रीम खाई। दुकानदार ने बच्चों से उनकी जाति पूछी। जैसे ही उसे पता चला कि बच्चे दलित हैं तो उसने उनके हाथों से आईसक्रीम कप छीन लिए और उन्हें गालियां देने लगा। बच्चे नहीं जानते थे कि उन्होंने क्या खता की है उसकी सजा उनका पूरा समाज भुगतेगा। रात के अंधेरे में सवर्णों ने दलितों को उनके घरों से निकालकर पीटा। उनकी महिलाओं से बदसुलूकी की गई। ये जुल्म अंग्रेजों ने नहीं किया था। जुल्म की यह इबारत 60 साल के आजाद भारत में लिखी गई थी। इस आईसक्रीम की सजा आज भी इस समाज के माथे पर लिखी हुई है। वे आज भी समाज से बहिष्कृत है। वर्ष 2009 तक भी दोषियों को सजा नहीं मिली जबकि अनुसूचित जाति एवं जनजाति अधिनियम को बने 20 साल हो चुके हैं। मगर आज भी दलित जानवरों से बदतर जिंदगी जी रहे है।"[19]

वर्तमान में सवर्ण जाति द्वारा निम्न जाति के प्रति भेदभाव ज्यों का त्यों बना हुआ है। जाति के अंतर्गत सवर्ण वर्ग दलित वर्ग के साथ अस्पृश्यता के भिन्न-भिन्न प्रकार से अन्याय व अपमानित करते है। सुशीला टाकभौरे की कहानी 'बदला' में 'कल्लू' जो सवर्ण जाति के लड़कों से हमेशा अपमानित किया जाता है। कहानी में कल्लू पहलवान पर सवर्णजाति के लड़के शोषित व पीड़ित करते है। समाज में निम्न जाति के कारण पग-पग पर सवर्ण वर्ग द्वारा अपमानित होना पड़ता है। कहानी में सवर्ण जाति का सुनील 'कल्लू' पहलवान को अपमानित व पीड़ित करता हुआ कहता है-"ऐ पहलवान.... कहाँ जा रहा है?.... डरकर क्यों भाग रहा है?....." दूसरे मित्र व्यंग्य से अपमानित करता हुआ कहता है।-"वह अपनी नानी का दूध पीने जा रहा है" "क्यों कल्लूराम, भूख लगी है क्या?

जूठन खाने से ज्यादा ताकत आती है क्या?"[20]

देश में सामाजिक न्याय की अवधारणा के अंतर्गत भी दलित वर्ग अन्याय का सामना करता आ रहा है। दलित वर्ग के साथ संविधान में अस्पृश्यता का अंत होने के बावजूद भी अस्पृश्यता कायम है। देश में संविधान व कानून का कोई असर दिखाई नहीं पड़ता है। जिसके तहत दलित वर्ग के प्रति अन्याय व अत्याचार बढ़ते जा रहे है। एक गैरसरकारी संस्था नेशनल दलित मूवमेंट फार जस्टिस ने एक सर्वे कराया है जिसके अंतर्गत संस्था के सचिव सिरिवेला प्रसाद दलितों के प्रति अन्याय

को व्यक्त करते हुए कहते है-"दलितों के साथ उत्पीड़न के नए तरीके ईजाद कर लिए गए हैं। करीब 70 फीसदी अत्याचार नए ढंग से हो रहे है। पुलिस दलित उत्पीड़न की सिर्फ 23 फीसदी शिकायतें दर्ज करती है। इसके मुताबिक देश में आज भी दलितों के साथ 154 तरीकों को छुआछूत हो रहा है। मिसाल के लिए 64 फीसदी गांवों में दलित गांव के कुओं से पानी नहीं भर सकते और 78 फीसदी गांवों में दलितों को मंदिरों में जाने की इजाजत नहीं।"[21] सूरजपाल चौहान की कहानी 'झूठ के दो चेहरे' में 'बलवान सिंह' के माता-पिता सवर्ण मानसिकता रखते हुए झूठ के दो चेहरे बनाए रखते है। एक तरफ तो उनके घर में काम करने के लिए 'सुक्को' आती है उसे दिखावा मात्र ज्यादा काम करवाने के लिए अच्छा व्यवहार किया है दूसरी तरफ जाति को लेकर भेदभाव भी किया जाता है। एक दिन 'बलवान सिंह' जब 'सुक्को' को देखकर 'सुक्को भंगिन' कहकर पुकारता है तब उसके माता-पिता 'सुक्को' के सामने 'बलवान सिंह' को डाँटते फटकारते है कि गाँव की बड़ी-बूढ़ी को इस तरह से बोलते है? 'बलवान सिंह' अपने माता-पिता के विरोध पर विचार विमर्श करता हुआ कहता है-"यदि सुक्को गाँव में किसी की ताई, चाची या किसी की भाभी है तो फिर उसके बेटे मुक्खा को गाँव की पाठशाला में दूसरे बच्चों से अलग क्यों बैठाते है? मेरे बापू और अम्मा मुझे मुक्खा के संग खेलने क्यों नहीं देते? एक ओर सुक्को मेरी ताई लगे तो फिर दूसरी ओर यह छुआछूत क्यों?"[22]

समाज में कानून व संविधान सवर्ण जाति की मानसिकता में कोई भी परिवर्तन लाने में असमर्थ रहा है। सुशीला टाकभौरे अस्पृश्यता को लेकर दलित वर्ग के प्रति सामाजिक अन्याय को व्यक्त करती हुई कहती है-"अस्पृश्यता अदृश्य है। वह पूरे देश के जनमानस में व्याप्त है। लोक व्यवहार के रंग बदलते प्रपंचों के सामने कानून अंधा-बहरा और गूंगा बन जाता है। लोक व्यवहार स्थिति में स्वतंत्र प्रजातंत्र देश का संविधान ठगा-सा देखता रह जाता है। यही कारण है कि दलित-अछूतों की बस्तियाँ अभी भी शहरों और गांवों के बाहर हैं। अभी तक यह देश सवर्णों का देश रहा है। दलित अछूत सेवक वर्ग है। वह गांव के बाहर रहकर देश की सेवा का कार्य कर रहा है।"[23] इक्कीसवीं सदी के समाज में भी

अस्पृश्यता का घिनौना रूप हमें देखने को मिलता है। कानून, संविधान व सामाजिक न्याय की अवधारणा के अंतर्गत जिसमें सभी मनुष्यों को समान समझा जाता है चाहे वे किसी भी वर्ग, धर्म, सम्प्रदाय, क्षेत्र व जाति के हों परंतु सदियों से केवल दलित वर्ग ही सामाजिक न्याय से वंचित रहा है। "आजकल हर जघन्य बीमारी का इलाज संभव है। ऐसी बीमारी से पीड़ित या संसर्गपूर्ण रोग से पीड़ित रोगियों को भी लोग अपने से अलग या बस्तियों से बाहर नहीं रखते है। मगर अस्पृश्यता ऐसी बीमारी है जिसका इलाज अभी तक संभव नहीं हो सका है। न साधु सन्तों की वाणी से, न समाज सुधारकों के प्रयत्नों से, न अंग्रेजों की मानवतावादी तर्कपूर्ण हिदायतों से, न देश की स्वतंत्रता से और न ही संविधान से।"[24]

5.1.2 मैला ढ़ोने के स्तर पर :

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14-18 के अंतर्गत समानता का अधिकार प्रदान किया गया है। इसके अंतर्गत धर्म, जाति, लिंग, स्थान आदि के भेदभाव का अंत कर दिया गया है परंतु आज भी वर्तमान में दलित वर्ग सामाजिक न्याय के लिए पीड़ित है। दलित वर्ग को समाज में समानता का अधिकार नहीं दिया गया है। समाज में दलित वर्ग जो निम्न जाति से सम्बन्धित है। उन्हें आज इक्कीसवीं सदी में भी मैला ढ़ोने के कार्य करके अन्याय का सामना करना पड़ रहा है। सूरजपाल चौहान की कहानी 'बदबू' में 'संतोष' अत्यंत मेधावी व आधुनिक विचारों वाली लड़की है। उसके पिता 'किशोरीलाल' उसे उच्च शिक्षा न दिलवाकर उसकी शादी नौवी फेल 'रजिन्दर' से कर देते है। शादी के बाद 'सन्तोष' को ससुराल में पुश्तैनी काम करने के लिए विवश किया जाता है। 'सन्तोष' का पति व उसकी सास उसे मैला ढ़ोने का काम करने के लिए कहते है। ससुराल में 'सन्तोष' की सास उसे कहती है- "अब कितने दिन नयी-नवेली दुल्हन बनकर घर में बैठी रहेगी... कल से मेरे साथ मोहल्ले कमाने चला कर।"[25] 'सन्तोष' अपनी सास की बातें सुनकर हैरान हो जाती है वह अपने पति 'रजिन्दर' से विरोध करती है किन्तु उसका पति भी उसे मैला ढ़ोने का कार्य करने के लिए कहता है-"क्यों नहीं जाएगी, घर में हाथ पर हाथ रखे कब तक बैठी रहेगी, आज नहीं तो कल तुझे माँ का काम संभालना ही है।"[26] 'सन्तोष' की सास उसे व अपनी चौदह वर्षीय बेटी को पखाना साफ

करने के काम से सुबह अपने साथ ले जाती है और 'संतोष' को कहती है-"बहु, अच्छी तरह से देख ले, अब तुझे ही ये पाखाने साफ करने होंगे।"

आगे कहती है-"देख बहू काम से नफरत ना करें, यह तो म्हारा खानदानी काम है.... यदि यह काम हम नहीं करेंगे तो भला कैसे गुजारा होगा म्हारा (हमारा)।"[27] 'संतोष' मैला ढ़ोने का कार्य करना नहीं जानती है क्योंकि यह काम कभी उसके माँ-बाप ने भी नहीं किया। लेकिन ससुराल में उसे यह कार्य करने के लिए बाध्य किया जाता है। 'सन्तोष' फिर से अपने पति को मैला ढ़ोने के कार्य करने से मना करती है। उसका पति गुस्से में आग-बबूला होते हुए 'सन्तोष' को कहता है-"तू नहीं करेगी तो क्या तेरा बाप करने आयेगा?" 'सन्तोष' पर अन्याय व अत्याचार करते हुए अपमानित करता हुआ कहता है-"साली, तू कौण सी बणिया या बामण की जाई है जो यह काम ना करेगी?"[28] 'सन्तोष' अपने प्रति हुए अन्याय व अपमान को सहन करते हुए फिर से मैला ढ़ोने के कार्य न करने के लिए विरोध करती है कि वह पढ़ी-लिखी है इस तरह का गन्दा कार्य करना उसे नहीं आता और न ही वह करना चाहती है। उसका पति 'रजिन्दर' 'सन्तोष' को कहता है-"पढ़ी-लिखी है तो क्या हुआ, ऐसी कौण-सी अनोखी बात है, मैं भी तो नवीं फेल हूँ, बीस हजार रिश्वत के दिये थे काम पाने के बदले तब कहीं जाकर लगी म्यूनिस्पल्टी में झाड़ू की नौकरी, अरे हम भंगी है भंगी, म्हारा पेशा ही है झाड़ू लगाना।"[29]

समाज में जाति का जहर इतनी गहराई मनुष्यों में बस चुका है कि वह स्वयं अपने पुश्तैनी कार्य से निजात पाना नहीं चाहता इसका एक ही कारण है वह जाति व्यवस्था जो सदियों से परम्परागत रूप से चली आ रही है। समाज में चतुर्वर्ण व्यवस्था के कारण निम्न वर्ग के प्रति अन्याय ही होता है। कहानीं में 'सन्तोष' व 'रजिन्दर' की बहस में आस-पड़ोस के लोग इकट्ठे हो जाते है। वे सभी 'संतोष' के खिलाफ होकर उसे व्यंग्य से कहते है-"ऐसा लगे कि बहू भंगिन नहीं कोई पण्डिताइन है, अरे, सास के साथ काम पर नहीं जाएगी तो क्या सारा दिन पलँग तोडेगी।"[30] 'रजिन्दर' 'संतोष' को समझाते हुए कहता है-"सन्तोष, बस एक दो दिन दिक्कत आएगी, फिर धीरे-धीरे अपने आप आदत पड़ जाएगी, एक बार शुरू तो

कर, सब ठीक हो जाएगा।"[31] 'सन्तोष' पखाने साफ करने के काम को लेकर रात भर बेचैन रहती है। सुबह होते ही उसकी सास 'सन्तोष' को आवाज लगाते हुए कहती है- "अरे अब कब तक सोती रहेगी, चल उठ और जल्दी से हाथ-मुँह धोकर मेरे साथ काम पर चल।" 'रजिन्दर' अपनी पुरुष प्रधानता दिखाते हुए 'सन्तोष' को अपने विचार व्यक्त करता हुआ कहता है-"जा अम्मा के साथ, और अब मैं तेरी शिकायत सुनना ना चाहूँ, अम्मा के साथ काम में मन लगाना शुरू कर दे, इसी में तेरी भलाई है।"[32]

समाज में जाति के कारण ही सवर्ण लोगों की मानसिकता ने निम्नवर्ग की मानसिकता को बुरी तरह से जकड़ा हुआ है कि समाज में निम्न वर्ग को ही निम्न कार्य करने का अधिकार है यह कार्य निम्न जाति को ही करना होगा। जिसके तहत निम्न जाति के कहे जाने वाले लोग इस परम्परा से पूर्ण तरह से प्रभावित है और उन्हें इस जकड़न से बाहर निकलने का रास्ता दिखाई नहीं दे रहा है जिसके कारण वे सदैव अन्याय के भागीदारी रहे हैं। सुशीला टाकभौरे की कहानी 'संघर्ष' में 'शंकर' को स्कूल में सवर्ण जाति के सहपाठी उसे अपमानित करते है कि स्कूल में 'शंकर' की नानी मैला ढ़ोने का कार्य करती है। शंकर के सहपाठी जाति के कारण उसके साथ अन्याय व अत्याचार करते है जिसके कारण एक दिन 'शंकर' हैडमास्टर के पास जाकर सवर्ण लड़कों की शिकायत करता हुआ कहता है-"सर, लड़के मुझे बहुत तंग करते है, रोज मुझे मारते है, पढ़ने नहीं देते है।" स्कूल का हेडमास्टर 'शंकर' को ध्यानपूर्वक देखते हुए उससे पूछते है-"तुम किसके बेटे हो? तुम्हारे पिता जी क्या करते हैं? तुम कहाँ रहते हो? अच्छा.... अच्छा.... तुम जमादारन के नाती हो?.... तुम्हारी नानी को मैं रोज यहाँ से आते-जाते देखता हूँ।.... हाँ, तो लड़के तुमसे क्या कहते हैं?...."[33] 'शंकर' हैरान होकर हेडमास्टर के बारे में सोचता हुआ कहता है- "अरे, यहां तो बड़े सर भी वही बात कह रहे हैं जो लड़के कहते हैं।"[34]

सुशीला टाकभौरे की अन्य कहानी 'छौआ माँ' में 'छौआ माँ' साठ साल की वृद्ध महिला है जो गांव में दाईपना का काम करती है। सारा गांव प्रसूति कार्य में 'छौआ माँ' को ही बुलाता है। एक दिन सोमवार को वह तहसील गई तो रात को

अपनी बहन के घर रूक गई। उस रात गाँव वालों को 'छौआ माँ' की जरूरत होती है, लोग 'छौआ माँ' को बुलाने उसके घर जाते है। घर पर उसके बेटी 'तुलसा' और उसके छोटे बच्चे होते है। गांव वाले 'तुलसा' को अपने साथ ले जाने के कहते है-'दाई माँ कहां है?.... छौआ मां को बुलाओ.... दाई मां को बुलाओ....।" 'तुलसा' कहती है-"भैया जी, मां तो अब सवेरे ही आयेगी। तुम डॉक्टर को बुला लो -"[35] गांव वालों को विश्वास है कि छौआ मां की बेटी 'तुलसा' को भी दाईपना का काम आता है। वे कहते है- "बाई, तु चल.... तू अभी चल.... आज तो ये काम तुम्हें ही सम्भालना पड़ेगो....."[36] 'तुलसा' गांव वालो की समझाते हुए कहती है-"भैया, मैं ये जचकी के काम कछु नहीं जानूं। मैं जाकर का करूंगी मोहे कछु नहीं आये" "बाई तुम अभी चलो.... तुम्हें चलनो पड़ेगो...." 'चलनो पडेगो.... ऐसे कैसे नहीं जायेगी?.... तुमरो काम है, तुम नहीं करोगी तो कौन करेगो?.... तुम्हीं को करनो पडेगो...." "ऐसे कैसे नहीं जायेगी.... चलना पड़ेगा.... 'दाई' की बेटी को 'दाईपना' नहीं मालुम.... ऐसा कैसे हो सकता है।"[37] 'तुलसा' गांव वालों की बातें सुन कर चिन्तित होते हुए अपनी मां को कोसने लगती है और कहती है- "खुद जिन्दगी भर पूरे गांव का नरक उठाती रही. ... सबका दलिद्दर समेटती रही। अब मेरे पीछे ये मुसीबत लगा रही है। ये सब उसी के कारण हो रहा है। लोगों को आदत डाल दई है-वही करेगी.... उसके बिना नहीं होयगो....। रात दिन दौड़ती फिरे है, सबके लिए मरी जाये है....। अब मोहे भी गिरा रही है जई दल-दल में-पीढ़ी-पीढ़ी परम्परा चलाते रहे, अब ये परम्परा मेरे गले को फंसा रही है...."[38] आंगन में खड़े गांव वाले 'तुलसा' को घेर लेते है और कहते है कि तुझे तो हमारे साथ चलना ही होगा। 'तुलसा' मन ही मन सोचती है कि वह यह गन्दा काम कैसे सम्भाल पायेगी। सुबह जब 'छौआ मां' को पता चलता है कि उसकी बेटी को गांव वाले जबरदस्ती ले गये है तो उसे बुरा लगता है तो गांव वालों पर अपनी नराजगी जताने लगती है। 'छौआ मां' की बातें सुनकर गांव वाले उसे जाति के कारण गन्दगी का काम निम्न जाति के ही लोग करते है और गुस्से में आकर कहते है-"तो का हो गओ? जचकी का काम बेटी से करा ही लियो तो का हो गओ? .... वा क्यों नहीं करेगी तेरो काम? जो तू करती आई है, वही तेरी मोड़ी करेगी। जो तुमरो कर्म है वही तुमरो धरम है। कैसे नहीं

करेगी वा ये काम? तेरी मोड़ी का बामन-बनिया की छोरी है? गन्दगी उठाने का काम तुमरी जात के लोग ही करे है।"[39]

इक्कीसवीं सदी में भी दलित वर्ग मैला ढ़ोने के कार्य को करने में अभिशप्त है। सदियों से चली आ रही मैला ढ़ोने की प्रथा का आज भी अंत नहीं हो पाया है। निम्न जाति के कहे जाने वाले लोग वर्तमान में भी मैला ढ़ोने के कार्य को रोजगार के साधन बना कर अपना घृणित व अपमानित जीवन जीने के लिए मजबूर है। सामाजिक न्याय की अवधारणा इन लोगों के लिए कहीं भी स्थापित नहीं है। सुशीला टाकभौरे की कहानी 'जन्मदिन' का 'मुन्ना' नौंवी कक्षा में पढ़ता है। 'मुन्ना' का घर गांव के बाहर है। 'मुन्ना' 'गाड़ीखाना' मोहल्ले में सफाई कर्मचारी 'प्रेम राठौर' के बेटे के जन्मदिन पर जाता है। 'मुन्ना' पहली बार 'गाड़ीखाना' मोहल्ले में जाता है जहां मैला ढ़ोने का कार्य किया जाता है। जहां पर मैलागाड़ियाँ रखते है। 'मुन्ना' 'प्रेम भैया' से पूछता है कि आप मैला ढ़ोने का कार्य कैसे करते है। 'प्रेमभैया' 'मुन्ना' को बताता है-"बेटा, तुमको तो मालुम है, अपनी जाति के लोग जो नगरपालिका में नौकरी करते हैं, वे बस्ती में सफाई का काम करते है। बड़े-बड़े मोहल्ले या एरिया बनाकर सफाई करने के लिए सफाई कर्मचारियों के सुपूर्द कर दिये जाते है।" वह आगे कहता है- "कुछ लोगों को झाड़ू का काम दिया जाता है। सड़के गलियाँ अहाते, मैदान, गड्डे, नालियाँ-सबकी सफाई की जिम्मेदारी उनकी होती है। कुछ लोगों को मैला सफाई का काम दिया जाता है। वे लोग मोहल्लों के घरों की कच्ची संडासों की सफाई करके मलमूत्र से बड़े-बड़े डले या टोकने भरते हैं। मलमूत्र के उन डलों को एक-एक करके, अपने सिर पर उठाकर, वे एक निश्चित जगह पर पहुँचाते है। वहाँ निश्चित समय पर गोरेलाल मैला ढ़ोने वाली भैसागाड़ी लेकर आता है। वे लोग मैले से भर अपने अपने डले उठाकर मैलागाड़ी में रख देते हैं।"[40]

सामाजिक न्याय से वंचित दलित वर्ग निम्न जाति के कारण मैला ढ़ोने से, अस्पृश्यता से गांव में इन लोगों के घर बाहर होते है। समानता का व्यवहार न करके इनकी बस्ती अलग से बसी होती है। निम्न जाति के कारण ये दलित वर्ग समाज से अभिन्न अंग मान लिये जाते है। जाति व कार्य की प्रथा को लेकर

घृणित व्यवहार समाज के सवर्ण वर्ग द्वारा निम्न जाति के प्रति सदैव चला आ रहा है। जिसके अंतर्गत छुआछात व ऊँच-नीच के भेदभाव का अपनाया जाता है। संविधान के अंतर्गत सामाजिक न्याय की अवधारणा के अनुसार जाति के आधार पर भेदभाव निषेध माना गया है। परन्तु वर्तमान समाज संविधान द्वारा बनाये गये कानून को नहीं मानता है। कहानी में 'प्रेम' 'मुन्ना' को मैला ढ़ोने के कार्य में बताता है कि समाज द्वारा यह गन्दा काम निम्न वर्ग को ही सौंपा गया है। वह बताता है-"गोरेलाल मैलागाड़ी लेकर दूर नाले की तरफ जाता है। वहाँ गाड़ी खड़े करके, वह एक-एक टोकन को अपने कंधों पर उठाता है और मैला नाले में फैंकता है। खाली टोकने गाड़ी में रखकर, गाड़ी लेकर वह फिर उसी निश्चित स्थान पर पहुंचता है। सड़ासों की सफाई करने वाले आदमी और औरतें वहां फिर से भरे हुए टोकने लेकर तैयार मिलते हैं। 'गोरेलाल' खाली टोकने उन्हें सौंपकर भरे टोकने मैला गाड़ी में रखवा लेता है। ऐसा चक्कर कभी चार या पांच बार लगाना पड़ता है।"[41] 'प्रेम भैया' 'मुन्ना' को बताता है कि निम्न वर्ग की नौकरी मैला ढ़ोने का काम ही है। अगर वह यह नौकरी नहीं करेगा तो उसका घर कैसे चलेगा। 'प्रेम भैया' 'मुन्ना' को बताता है कि यह काम आजीविका कमाने के लिए आवश्यक है। 'प्रेम भैया' 'मुन्ना' को आगे बताते हुए कहता है- "बदबू के कारण नाक बिल्कुल ही सड़ जाती है। कभी तो मैले की भी बास नहीं आती और कभी हर चीज से मैले की दुर्गन्ध आती है। बड़ा कठिन काम है भैया। अब क्या करे? नौकरी करना है तो यह सब करना ही पड़ता है। नौकरी नहीं करेंगे तो खायेंगे क्या?[42] 'प्रेम भैया' अपने साथी 'गोरेलाल' के बारे में बताता हुआ कहता है-"गोरेलाल ऐसा कौन सा बड़ा काम करता है? नाले के किनारे गाड़ी खड़ी करता है, नाक और मुंह कपड़े से लपेटकर, मलमूत्र के भारी टोकने अपने कंधों पर उठाता है। टोकने उठाने और मैला फैंकने के समय गन्दगी उसके हाथ पैर और कंधों को लग जाती है तो भी क्या करे? काम ही ऐसा है...."[43] 'प्रेम भैया' 'मुन्ना' को समझाते हुए कहता है कि मैला ढ़ोने के काम करने से समाज के उच्च जाति के लोग उन्हें घृणा की भावना से देखते है और अस्पृश्यता का भेदभाव रखते है। 'प्रेम भैया' कहता है-"बेटा, 'गोरेलाल' तो मैले के टोकने कंधों पर उठाकर, चार कदम चलकर मैला फैंक देता है। मगर उनकी क्या कहें, जो घर-घर की संडास से मैले का ढेर हाथ

के पंजर से खींचकर टोकने में भरते हैं। गन्दगी से भरे टोकने अपने सिर पर उठाकर एक मोहल्ले से दूसरा मोहल्ला पार करते हुए बड़ी देर तक, दूर तक चलते है। लोग उन्हें देखते ही दूर हट जाते है। उन्हें देख, अपनी नाक से कपड़ा लगाकर नफरत से मुंह फेर लेते है।"[44]

स्वतंत्रता के बाद भी सदियों पुरानी गुलामी में दलित वर्ग आज भी जकड़ा हुआ है। आज भी मनुष्य द्वारा मनुष्य गुलाम बनाया जाता है। मैला ढ़ोने का कार्य केवल उसे निम्न जाति से मिला हुआ है। दलित वर्ग समाज के सवर्ण वर्ग के हाथों की कठपुतली बन रह गया है। कहानी में 'प्रेम भैया' 'मुन्ना' को बताते है कि मैला ढ़ोने के घृणित कार्य में उन्हें क्या-क्या उठा कर ले जाना पड़ता है जिसे करना असहनीय है वह 'मुन्ना' से कहता है- "कचरे के ढेर में क्या-क्या नहीं रहता? गाय-भैंस का सड़ा, बदबूदार, इल्लियों वाला गोबर उसमें रहता है। कुत्ता-बिल्ली का मैला उठाकर झाड़ूवाले कचरे में डाल देते है। यदि कहीं कुत्ता या बिल्ली मरे पड़े हों तो उसकी सड़ी-गली लाश को भी कचरे की गाड़ी में डाल दिया जाता है। मरे-सड़े चूहे तो न जाने कितने रहते है। उन सब की सड़ी दुर्गन्ध असहनीय होती है। गन्दे-चिन्दे, चिथड़े-कपड़े पानी-कीचड़ में भीगकर लिजलिजे हो जाते है। नाली में रूका हुआ कचरा, कीचड़, सड़े रूके पानी से निकाला हुआ मलमा भी उठाकर कचरे की गाड़ी में डाल देते है। छोटे बच्चों को पाखाने के लिए लोग सड़क के किनारे, नाली के पास बैठा देते हैं। कभी-कभी रात के अंधेरे में बड़े लोग भी नाली या सड़क के किनारे बैठ जाते हैं। तब उन सबका मैला उठाकर कचरे के साथ कचरा गाड़ी में डाल दिया जाता है।"[45] 'मुन्ना' 'प्रेम भैया' की सारी बातें सुनकर विचारमंथन करते हुए आक्रोश में कहता है- "एक मानव से दूसरे मानवों का मलमूत्र उठवाना अमानवीय बात है। मानव-मलमूत्र को सिर पर रखकर ढ़ोना असहनीय बात है। लेकिन जिन्हें शुरू से मजबूर करके यह काम करवाया गया होगा, क्या उन्होंने कभी इस बात का विरोध नहीं किया होगा?.... क्या कभी उन्होंने अपने इस काम को छोड़ने के लिए विद्रोह नहीं किया होगा? जरूर किया होगा। फिर क्या कारण है कि वे अभी भी स्वेच्छा से अपने इस काम को किये जा रहे हैं?"[46]

आज भी देश भर में पांच लाख से अधिक लोग सिर पर मैला ढ़ोने का कार्य करते है। भारतीय संविधान में मनुष्य के मौलिक अधिकार व सामाजिक न्याय की अवधारणा की गारंटी के बावजूद भी अन्याय बरकरार है। एक जनहित याचिका दायर होने के नौ साल बाद भी कोई कार्यवाही नहीं होती है। 'दैनिक ट्रिब्यून' में प्रकाशित एक समाचार के माध्यम से इस तथ्य की पुष्टि होती है-"देशभर में मैला ढ़ोने के काम में 5,77,228 लोगों के लगे होने का जिक्र करने वाली वर्ष 2003 की याचिका इंप्लायमैंट ऑफ मैन्यूएल स्कैवेंजर एंड कंस्ट्रक्शन आफ ड्राइ लैट्रिंस (प्रोहिबिशन) एक्ट 1993 को लागू करने के लिए है ताकि सिर पर मैला ढ़ोने की प्रथा पर रोक लगे।"[47] समाज में दलितों को मौलिक अधिकारों से वंचित कर अन्याय को प्रस्तुत किया जाता है। दलित वर्ग को मानव अधिकार एवं मानव मानने में भी शंका जताई जाती है।

प्राचीन काल में भी दलितों को पशु के समान समझा गया है। जाति भेद से दलित वर्ग का उत्पीड़न बढ़ता जा रहा है-"अनुसूचित जाति के सोलह करोड़ छियासठ लाख पैंतीस हजार सात सौ लोग जो कि भारत की आबादी का 16.2 फीसदी हिस्सा है का जातिवादी उत्पीड़न उनके मानवी अधिकारों पर सबसे बड़ा हमला है। भूमि, पानी की आपूर्ति, सार्वजनिक रास्तों तथा अन्य सेवाओं तक पहुँच से वंचित किया जाना दलितों के जीवन के अभिशाप है। दस लाख से ज्यादा लोगों को इस प्रथा पर कानूनी पाबंदी लगाए जाने के बावजूद, दूसरों का मैला उठाने का काम करना पड़ा रहा है। दलितों पर बढ़ते अत्याचारों का पता इस तथ्य से चलता है कि अनुसूचित जाति कानून के अन्तर्गत दर्ज हो पाने वाले प्रकरणों की संख्या भी औसतन तीस हजार सालना बैठेगी। गैर बराबरी पर आधारित मौजूदा व्यवस्था औपचारिक संवैधानिक व कानूनी अधिकार तो दिलाती है, लेकिन किसी सार्थक अर्थ में उनका पालन नहीं कराती है।"[48] समाज में दलित वर्ग आज भी सदियों पुरानी गली-सड़ी परम्पराओं के साथ जीवन जीने के लिए विवश है। संविधान, कानून दलित वर्ग के प्रति अन्याय को लेकर अनजान बना हुआ है।

5.1.3 शिक्षा व आरक्षण के स्तर पर :

समाज में दलित वर्ग को समानता व न्याय प्रदान करने के लिए शिक्षा व नौकरी में आरक्षण दिया गया है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 29-30 में शिक्षा पाने का अधिकार प्रदान किया गया है। सरकार द्वारा शिक्षा-संस्थाओं में नागरिकों को प्रवेश देने में धर्म, जाति, वंश या भाषा के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाएगा। भारतीय संविधान में राज्य-नीति के निर्देशक सिद्धान्त अनुच्छेद 45 के अंतर्गत बच्चों के लिए अनिवार्य और निशुल्क शिक्षा की व्यवस्था की गई है। एवं अनुच्छेद 46 के अन्तर्गत अनुसूचित जातियों तथा कबीलों के आर्थिक और शिक्षात्मक हितों को प्रोत्साहन दिया गया है। जियालाल आर्य दलित वर्ग के प्रति शिक्षा के स्तर को लेकर सामाजिक न्याय के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते है-"सामाजिक और शैक्षणिक स्तर पर पिछड़े लोगों को वे सभी सुविधाएं ईमानदारी से उपलब्ध करानी चाहिए, जिनसे आरक्षित वर्ग के लोग सामाजिक और शैक्षणिक तौर पर अन्य लोगों की बराबरी का स्तर पर सके।"[49] परंतु वर्तमान में दलित वर्ग शिक्षा पाने में अन्याय का सामना कर रहा है। समाज में दलित वर्ग को गरीबी व जाति के कारण न्याय से वंचित रहना पड़ रहा है। रत्न कुमार सांभरिया की कहानी 'बदन दबना' में जातिभेद व गरीबी के कारण होने वाले शोषण को देखा जा सकता है। दलित छात्र 'पूछा राम' पढाई करने के साथ-साथ 'हल्का राम' के यहां नौकरी करने में अभिशप्त है। 'हल्का राम' उससे जानवरों की तरह व्यवहार करता है और उसका खूब शोषण व उत्पीड़न करता है। कहानी का निम्न प्रसंग सवर्ण 'हल्का राम' द्वारा 'पूछा राम' से शिक्षा लेकर अभद्र व्यवहार को दर्शाता है- "क्या नाम है रे, तेरा?"

> "पूछा राम"
> "बहुत खूब। सबरा राम, अमरा राम, रेमा राम, पूछा राम। जिससे पूछो, वही राम।"
> "अरे पूछिया, छात्रावासी को कपड़ा-लता, रहना-सोना, पढ़ाई-लिखाई, किताब-कॉपी; सब फ्री हैं ना?"
> सुना है, छात्रावासी थई के थई रोटियाँ खा जाते हैं, होड़-होड़।"[50]

भारत को आजाद हुए कितने वर्ष बीत चुके है। भारत में संविधान द्वारा कानून बनाये गये। संविधान भारत में सामाजिक न्याय की गारंटी देता है। संविधान के अंतर्गत अनुच्छेद 23-24 में शोषण के विरुद्ध अधिकार प्रदान किया गया है जिसमें मनुष्य का व्यापार, बेगार व अन्य किसी प्रकार से बलपूर्वक श्रम निषेध माना गया है। परन्तु फिर भी मनुष्य द्वारा मनुष्य को गुलाम बनाया जा रहा है। आजाद देश में उनसे गुलामों-सा व्यवहार किया जा रहा है। 'हल्का राम' पांच साल के लिए 'पूछा राम' को अपने हवेली में गुलाम बनाकर रखता है और उसे कहता है-"अरे पूछिया, गधे की पूंछ सा सीधा का सीधा रहेगा या कुछ करेगा -धरेगा भी।"

"हूँ।"

"हुँ ! हुँ। अरे मूढ़ी पर बैठ, पांव दबा मेरे। बदन-दबना रखा है न, तुझे।" 'हल्काराम' दलित छात्र 'पूछाराम' के आत्मसम्मान को ठेस पहुँचता हुआ आगे कहता है-"पूछिया, छात्रावास का सामान और कॉपी-किताब जमा करा आया है न, तू। अमरिया नचीत हुआ आया था। थैले में स्लेट और एक किताब थी, उसके। स्लेट मटकी पर रखी है। कॉपी के पन्ने फाड़-फाड़ हवाई जहाज बनाकर उड़ाता रहा था वह, कई दिन।"[51] सुशीला टाकभौरे की कहानी 'संघर्ष' का 'शंकर' जो बहुत मेहनती और होशियार है, स्कूल में सवर्ण जाति के सहपाठी उसे जाति के आधार पर अपमानित करते है। स्कूल के मास्टर भी उससे घृणित व्यवहार करते है। शंकर जिद्दी प्रवृति का होने के कारण से सबका विरोध करता है। एक दिन 'शंकर' सड़क के किनारे घर पर पत्थर मार कर आम तोड़ रहा होता है। तभी घर का मालिक 'राजाराम' गुस्से से चिल्लाते हुए जातिगत मानसिकता रखते हुए उसे अपमानित करता हुआ कहता है-"स्कूल में जाकर यही सीखता है.....? ठहर जा.... तेरे मास्टर को जाकर बताऊंगा। अपनी जाति-औकात की सीमा में नहीं रहता। अभी यह हाल है तब आगे चल कर पता नहीं क्या करेगा?.....जरा डरता नहीं है..... बदमाश....."[52] सुशीला टाकभौरे की अन्य कहानी 'जन्मदिन' में भी दलित छात्रों के प्रति शिक्षा को लेकर अन्याय होता है। स्कूल के मास्टर उन्हें जातिसूचक गालियां निकालते हैं एवं अत्याचार करते है। स्कूल में सवर्ण जाति के छात्र भी दलित छात्रों

को मास्टर द्वारा मारते-पिटते देख कर उत्साहित होकर कहते है-"अच्छा मारा, और मारो। ये कभी नहीं सुधरेगे। इन्हें पढ़कर भी क्या करना है? ... इनके बाप-दादो का काम कौन करेगा?"[53]

सामाजिक न्याय की अवधारणा के बावजूद भी दलितों के प्रति अन्याय कायम है जियालाल आर्य सामाजिक न्याय का उद्देश्य-"समाज के दलित पीड़ित, अनुसूचित जनजाति, पिछड़े लोगों को विकास क्रम में न्याय देना अर्थात् उनकी भागीदारी सुनिश्चित करना"[54] मानते है। परन्तु समाज सवर्ण प्रधान समाज है। वह दलित वर्ग की भागीदारी किसी भी क्षेत्र में सहन नहीं कर सकता है। सवर्ण वर्ग सदा दलित वर्ग को गुलाम बनाकर रखना चाहता है उनके जीवन के विकास प्रक्रिया में न्याय प्रदान करने के पक्ष में नहीं है। ब्रह्मा नंद की कहानी 'संकल्प' में 'मोहन लाल' सवर्ण जाति के ठाकुर 'नारायण सिंह' गुलामी, जाति के कारण अन्याय व शिक्षा को लेकर अन्याय का विरोध करता है। 'मोहनलाल' एक दिन निम्न जाति के 'तपेसर यादव' जो गांव में रहता है उसे समझाता हुआ कहता है कि आप लोग सवर्ण जाति की चालबाज प्रवृति को क्यों नहीं समझ पा रहे हो। 'तपेसर यादव' अनजान बनते हुए 'मोहन लाल' को कुछ नहीं कहता है। 'मोहन लाल' आगे कहता है-"भईया आप खुद सोचो की गांव में हमारी गिनती उन बामनों से ज्यादा है फिर भी वे हम पर हुकुम चलाते है और अगर हम चाहे दस-पंद्रह घण्टे भी उनके घर चाकरी कर लें तो मिलता क्या है? सुबह शाम का बासी खाना बस। तुम्हारे और हमारे घर की औरतें दिन-रात उनके घर के कामों में लगती रहती है। तुम्हारे बेटे की पढ़ाई तक छुड़ा दी, उस गोपेश्वर मिश्रा ने फिर भी तुम्हें नहीं दिखता कि क्या बुरा हो रहा है? थोड़ा भी विरोध करो तो गाली और पिटाई।"[55]

समाज संविधान, कानून व्यवस्था की तरह अपने आपको परिवर्तनशील नहीं बना पाया है। वह तो पुरानी परंपराओं में आज भी बुरी तरह जकड़ा हुआ है। इक्कीसवीं सदी का उनकी मानसिकता पर दलित वर्ग के प्रति कोई परिवर्तन नहीं आया है। आजाद देश में भी दलित वर्ग सवर्ण जाति के लोगों के गुलाम बनकर रह रहे है। शिक्षा के स्तर पर ऊंचा उठने के लिए सवर्ण जाति दलित वर्ग के पक्ष में नहीं है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानी 'घुसपैठिये' में दलित छात्रों के प्रति

अन्याय का स्पष्टीकरण हुआ है। जाति के आधार पर दलित छात्रों को अपमानित व अत्याचार किया जाता है। शिक्षा के स्तर में उन्हें आगे बढ़ने का अवसर नहीं दिया जाता है और उनका उत्पीड़न किया जाता है। कहानी में मेडिकल कॉलेज का छात्र 'सुभाष सोनकर' जिसे सवर्ण जाति के छात्रों द्वारा पीड़ित किया जाता है। 'रमेश चौधरी' जो एक सामाजिक कार्यकर्त्ता है। वह मेडिकल कॉलेज के सभी दलित छात्रों की समस्याएं 'राकेश' साहब के पास उन छात्रों को भी ले जाता है। 'रमेश चौधरी' बताते है कि 'अमरदीप' और 'नितिन मेश्राम' मेडिकल के तृतीय वर्ष के छात्र है। 'सुभाष सोनकर' और 'विकास चौधरी' प्रथम वर्ष के छात्र है। ये सब अपने ऊपर हुए अत्याचार, अन्याय व उत्पीड़न को व्यक्त करते हुए 'राकेश साहब' से 'अमरदीप' बताता है-"सर। हम लोग बहुत बड़ी परेशानी में हैं.... समझ में नहीं आ रहा है क्या करें? मेडिकल कॉलेज के जो हालात हैं, उसमें हमारे लिए पढ़ाई जारी रखना दिन-प्रतिदिन कठिन हो रहा है। ये साल हमने जिन यातनाओं के साथ गुजारे हैं.... हम ही जानते हैं। कई बार तो लगता था पढ़ाई छोड़कर वापस लौट जाएँ.... लेकिन माँ-बाप की, उम्मीदें रास्ता रोककर मजबूर कर देती हैं। उन सब यातनाओं के साथ पढ़ाई जारी रखना..... बहुत तकलीफदेह है.... एक रोज तो मैंने आत्महत्या तक कर लेने का निश्चय कर लिया था।"[56]

भारत में जाति-व्यवस्था के कारण दलित वर्ग अपमानित व उत्पीड़ित है। निम्न वर्ग के कारण समाज में 'सवर्ण वर्ग कहे जाने वाले लोगों का वर्चस्व कायम है जिसके तहत वह अपना अधिकार बनाए रखना चाहते है और पीढ़ी दर पीढ़ी अपनी संतानों में भी जाति-व्यवस्था के नियम घोलते जाते है ताकि परंपरा व नियम निम्न वर्ग के प्रति परिवर्तनशील न हो। कहानी में 'अमरदीप' आगे बताता हुआ कहता है-"कल पूरा दिन होस्टल के एक कमरे में विकास चौधरी और सुभाष सोनकर को दरवाजा बन्द करके पीटा गया।"

'क्यों? क्या रैगिंग चल रही थी?"

"रैगिंग होती तो फर्स्टइयर के सभी छात्रों के साथ यह सुलूक होता। लेकिन वहाँ तो सिर्फ इन दोनों को ही पीटा गया"

"दलित छात्रों को अलग खड़ा करके अपमानित करना तो रोज का किस्सा है। प्रवेश परीक्षा के प्रतिशत अंक पूछकर थप्पड़ या घूँसों का प्रहार होता है जरा भी विरोध किया तो लात पड़ती है यह दो-चार दिन नहीं साल के साल चलता है और यह पिटाई कॉलेज या छात्रावास तक सीमित नहीं है।

शहर से कॉलेज तक जाने वाली बस में भी पिटाई होती है। कोई एक सीनियर चलती बस में चिल्लाकर कहता है, "इस बस में जो भी चमार स्टूडैंट है... .. वह खड़ा हो जाए.... फिर उसे धकियाकर पिछली सीटों पर ले जाया जाता है, जहां पहले से बैठे सीनियर लात घूँसों से उसका स्वागत करते है।"[57]

जाति के कारण निम्न वर्ग शिक्षित होने के बाद भी निम्न स्तर का होने से अपमानित किया जाता है। आरक्षण मिलने के बावजूद भी शिक्षा स्तर पर भेदभाव किया जाता है। आरक्षण जो सामाजिक न्याय का एक पक्ष है जिससे दलितवर्ग को समाज में समानता व न्याय प्रदान किया जाता है। परन्तु समाज संविधान कानून व्यवस्था की तनिक भी परवाह नहीं करता है वह पुरानी से पुरानी गली-सड़ी परम्पराओं में जी रहा है। कहानी में 'राकेश' सामाजिक कार्यकता बताता है कि शिक्षा के दौरान प्रत्येक कार्य में दलित छात्र को अन्याय सहना पड़ता है-"होस्टल नं॰ एक में कमरा एलॉट हो जाने के बाद भी किसी दलित छात्र को उसमें घुसने नहीं दिया जाता है। घूम-फिरकर होस्टल नं॰ दो में ही दलित छात्रों को रखा जाता है। यही स्थिति गर्ल्स हॉस्टल की भी है। वहाँ भी सभी दलित लड़कियाँ एक ही हॉस्टल में रहती हैं। कॉलेज मैनेजमेंट को ये समस्याएँ गम्भीर नहीं लगती। उन्हें लगता है दलितों के लिए मेडिकल में आना अतिक्रमण करना है। जब उनसे शिकायत करते हैं तो ध्यान नहीं देते।"[58] 'नितिन मेश्राम' शिक्षा के स्तर पर दलित उत्पीड़न को सहन करते हुए कहता है-"इतना ही नहीं, प्रैक्टिकल की परीक्षाओं में भी भेदभाव बरता जाता है। प्रणव मिश्रा मेरे ही बैच में है। न क्लासेज अटैंड करता है, न प्रैक्टिल। फिर भी त्रिवेदी सर उसे ही सबसे ज्यादा अंक देते है। अटैंडेंस की भी समस्या नहीं होती।"[59] रजत रानी 'मीनू' की कहानी 'गिरोह' में भी दलित छात्रों के साथ शिक्षा स्तर पर भेदभाव व अन्याय किया जाता है विद्यालय में पाँच-सात सवर्ण जाति के लड़के दलित छात्रों के प्रति ईर्ष्या व घृणित व्यवहार

के चलते दलितों के साथ अन्याय करते है। सवर्ण जाति का विद्यार्थी 'राज बहादुर' अपने सवर्ण जाति के मित्रों को अनुसूचित जाति का प्रमाण पत्र बनवा लेने की सलाह देता है और कहता है-"अब देखता हूँ कि हमें अगली कक्षा में जाने पर कम मार्क्स का हवाला देकर कौन रोकता है?"

"अरे मार्क्स की तुम लोग चिंता मत करो, मार्क्स के मामले में तो हमें पूरा मार्क्सवादी बनना है।" दूसरा सवर्ण मित्र जातिगत मानसिकता रखते हुए व्यंग्यपूर्ण कहता है-"अपने अग्रवाल सर एक तो जाति देखते हैं और मिठाई का डिब्बा प्रैक्टिकल में 100 में 90 और लिखित में भी वे जुगाड़ बता देते है। गुरु द्रोण का आशीर्वाद अर्जुन की जीत और एकलव्य की ऐसी-तैसी।"[60] शिक्षा के स्तर पर भी दलित वर्ग के साथ अन्याय करने का एकमात्र परिणाम यह है कि उच्च जाति की वर्चस्वता व दलितों को हमेशा की तरह उत्पीड़न व तिरस्कृत। 'ज्ञानदेव मिश्र' आगे अपने दोस्तों को बताता है-"वैसे भी हम लोग 50-50 प्रतिशत मार्क्स लाते ही है। अब हम 93 प्रतिशत तक लायेंगे। जो असली एस०सी० है उनका रास्ता भी काटकर आग आ जाएगें। ये दरिद्र जिन्हें कभी छात्रावास तक की सुविधाएं नहीं मिली। ये अपनी जिन्दगी में 55 प्रतिशत मार्क्स ला ही नहीं पाएंगे। अब हमें परिश्रम करने की आवश्यकता नहीं। अरे एक स्कूल शिक्षक से अधिक यू०जी०सी० की छात्रवृत्ति तो 99 प्रतिशत हमें ही मिलती है एस० सी० एस० टी० को मिलता है झुनझुना।"[61] उच्च शिक्षा के स्तर पर भी दलितों के साथ अन्याय किया जाता है। दयानन्द बटोही की कहानी 'सुरंग' में डॉ० विष्णु दलित छात्र को रिसर्च करने नहीं देते और जातिगत मानसिकता रखते हुए कहते है-"कोई हो, सरकार भले कानून बना दी हो, घोड़े की रस्सी तो हमी आपके हाथ में है। आपका रिसर्च में नहीं होगा।"[62] जातिगत अन्याय करते हुए आगे कहते है-"जो चाहे करो। जब तक हूँ, हरिजनों को रिसर्च नहीं करने दूंगा।"[63]

इक्कीसवीं सदी के समाज की दशा में शैक्षणिक रूप से जाग्रति पैदा न करके जाति-व्यवस्था को बढ़ावा दिया जाता है जिससे दलित वर्ग की स्थिति सदियों पुरानी स्थिति की तरह आज की नयी सदी में भी थमी रहे। घुसपैठिये कहानी में

'राकेश' साहब जो बड़े अफसर है वे दलित छात्रों की पीड़ाजनक स्थिति को सुनकर उन सबसे पूछते है- "तुम लोग डीन से मिले?"

वे सब कहते है-"जी मिले थे.... उनका कहना है.... आरक्षण से आए ही थोड़ा-बहुत तो सहना ही होगा। सवर्ण छात्रों की ज्यादतियों को वे अनुचित नहीं मानते। क्योंकि नाईसाफी के खिलाफ ये प्रतिक्रिया है। आरक्षण के विरोध में उपजा आक्रोश"

"डीन ही नहीं प्रोफेसर भी इसी तरह की टिप्पणियाँ करते है और प्रणव मिश्रा जैसे छात्रों को शह देते हैं" 'सुभाष सोनकर' कहता है- "मैंने अपनी मेडिकल रिपोर्ट बनवाई थी जिसे लेकर पुलिस थाने गया था रपट लिखाने। इंस्पेक्टर ने रिपोर्ट लिखने से साफ मना कर दिया था-यह तुम लोगों का अन्दरूनी मामला है। पुलिस को क्यों घसीटते हो.... अब आप ही बताइए। आखिर हम जाएँ तो कहाँ जाएँ। इन स्थितियों में ठीक से पढ़ाई में भी एकाग्र होना मुश्किल हो जाता है।"[64]

इक्कीसवीं सदी में समाज शैक्षणिक रूप से सशक्त होने के बावजूद भी जाति-व्यवस्था में विश्वास रखता है और शिक्षा के स्तर दलित वर्ग के प्रति अन्याय करता है। दलित वर्ग को शिक्षा के स्तर पर आरक्षण के बाद भी अन्याय का सामना कर पड़ रहा है। कहानी में डीन डाक्टर 'भगवती उपाध्याय' दलित छात्रों की समस्याएं न सुन कर आरक्षण के पक्ष को उठाते है कि कॉलेज में आरक्षण से मेडिकल का स्तर गिर रहा है। वे दलित उत्पीड़न को रोकना नहीं चाहते है। मेडिकल कॉलेज में आरक्षण से दलित छात्र का प्रवेश भी उनके कॉलेज को प्रभावशाली नहीं बना रहा है। अंत में दलित छात्र 'सुभाष सोनकर' की हत्या कर दी जाती है जिसे आत्महत्या का नाम दे दिया जाता है। आज दलित उत्पीड़न दिन-प्रतिदिन किसी भी रूप में हो बढ़ता ही जा रहा है। "सदियों की वर्ण-व्यवस्था के कारण जातिवाद हमारी नस-नस में प्रवेश कर गया है और इस देश की एक सौ दस करोड़ की आबादी में जातिवाद से पूर्णतया मुक्त व्यक्तियों को ढूंढना मुश्किल होगा। बाहर से लोग भले ही अपने को जातिवाद से मुक्त कहें लेकिन जरा-सा कुरदने पर उनसे जातिवाद रिसने लगता है। जज, वकील, अध्यापक, वैज्ञानिक, राजनेता, व्यापारी कोई भी पेशावर्ग इसका अपवाद नहीं है।"[65] श्योराज

सिंह बेचैन की कहानी 'नॉन रिफंडेबल' में एक दलित परिवार में 'चन्दन' उसकी पत्नी 'सुक्खो' और एक बेटा 'सूरज' होता है। 'चन्दन' अपने बेटे का दाखिला गांव के पास निजी स्कूल में करवाना चाहता है। उसका बेटा 'सूरज' पढ़ाई में बहुत होशियार है। परन्तु 'चन्दन' गरीब होने के कारण अपने बेटे को पढ़ाई नहीं करवा पाया। स्कूल में प्रबंध समिति के वरिष्ठ सदस्य मिस्टर ए॰ के॰ भार्गव 'चन्दन' से पूछते है-"हाँ तो मिस्टर चंदन आप एस॰सी॰ है, यू मीन्स ब्लांगिग अनटचेबल कम्यूनिटी?"

"हमारा स्कूल पूरी तरह ब्रिटिश पैटर्न को फालो करता है। अब यह सरकारी स्कूल तो है नहीं जो गौरमैंट रूल्स फालो करे यह तो चैरटी स्कूल है। यहाँ तो बच्चों का पैसा बच्चों पर ही खर्च किया जाता है और हमें भी चार पैसे कमाने होते हैं, वरन् हम एक स्कूल चलाने के बजाय चार अंग्रेजी शराब की दुकानें खुलवा देंगे, उसमें क्या हर्ज है?"[66] समाज में निजी स्कूलों के अन्दर गरीब बच्चों का दाखिला नहीं होता है। ऐसे स्कूलों में धन कमाने की मंशा ही प्राथमिक होती है। जाति के आधार पर शिक्षा स्तर भेदभाव किया जाता है। 'चन्दन' को उसके बेटे 'सूरज' की पढ़ाई का लाभ दिखाते हुए उससे कहते है-"तो फिर देख लो, सोच लो मिस्टर चंदन जी। बेटा अंग्रेजी पब्लिक स्कूल में पढ़ेगा और तभी वह एक आई॰ए॰एस॰ बन पाएगा। क्या तुम कलैक्टर बना देखना नहीं चाहते अपने बेटे को?" 'चन्दन' कहता है -

"सो तो सोलह आने चाहता हूँ हुजूर, पर इतनी रकम कहाँ से लाऊँगा मैं?" "तो सोचो और दूर की सोच लो हम तो महज पचास हजार ले रहे हैं। ऊँची पढ़ाई में देखो-पाँच-पाँच लाख रुपया देकर एम॰बी॰बी॰एस॰ में दाखिले हो रहे हैं।"[67] स्कूल का मैनेजर 'चन्दन' की गरीबी का ध्यान न रखते हुए उसके साथ अन्याय करता है और उसे लोभ-लालच के जाल में फंसा कर शोषण करता है और कहता है-"अरे भाई, कुछ गहने-जेबर, कुछ जमीन घर का सौदा कर दो। खरीदार हम तलाश देंगे। बेटा जब अफसर बन जाएगा तो इतना तो वह चार दिन की ऊपर की कमाई से कमा लेगा। एक बार में निबट जाने वाला डोनेशन ही तो है कोई हर महीने की फीस तो पचास हजार नहीं है। फीस तो मात्र दो हजार रुपया मन्थली

है। इतना तो तुम काम-धाम करने और फसल पर उपज बेच कर भरते रह सकते हो।" "क्या चल रहा है तुम्हारे दिमाग में? किस सोच में पड़ गए हो? सीट्स लिमिटेड हैं, फैसला करो, अगर तुम तैयार नहीं हो तो दस पैरेंट्स लाइन में खड़े है नोटों के थैले भरे हुए।"[68]

आज समाज में शिक्षा को महत्त्व न देकर केवल व्यापार का माध्यम बनाया जा रहा है। इक्कीसवीं सदी में शिक्षा को खरीदा व बेचा जा रहा है। वर्तमान समय में गरीब व्यक्ति निजी स्कूलों में अपने बच्चों को दाखिला नहीं दिलवा सकता है। सरकारी स्कूलों के बारे में लोगों की मानसिकता है कि वहां अच्छी शिक्षा प्रदान नहीं की जाती बच्चों का आज के जमाने का ज्ञान सरकारी स्कूलों से नहीं मिलता है। 'चन्दन' स्कूल के मैनेजर से कहता है-"श्री मान जी सोच रहा हूँ एक तो वैसे ही मेरे पास जमीन नाममात्र की है, उसे भी बचे दूँ तो कहाँ से हर महीने फीस के लिए उपज बेचूंगा और कहाँ से अपना और अपनी 'सुक्खो' का पेट भरूंगा? आप कुछ रियासत करें तो हिम्मत जुटा पाऊं? रियासत तो ठीक, पर घोड़ा घास से यारी करेगा तो खाएगा क्या? ये देख रहे हो मेरी और प्रिंसिपल की गाड़ियाँ? इनकी कीमतें जानते हो, दस-दस लाख से एक भी कम नहीं है और ये सब पानी से नहीं चलती है। तुम्हारे जैसों को इनकी सफाई-धुलाई करने का भी मौका नहीं मिला होगा, इनमें बैठना तो दूर। इनकी बीमा इन्स्टालमेंटस कहाँ से जाती है? और टीचर्स की सेलरी हमें ही देनी पड़ती है। क्या तुम अपने जैसा बना लेना चाहते हो हमें।"[69] 'चन्दन' स्कूल के मैनेजर की बातें सुनकर बहुत परेशान हो जाता है कि आज की कानून व्यवस्था, अधिकार, सामाजिक न्याय की अवधारणा देश में कुछ मान्य नहीं रखती है। समाज में लोगों ने अपने स्तर पर शिक्षा के धंधे खोल रहे है जहां पैसा ही सब कुछ है जितना अधिक पैसा उतनी अधिक अच्छी शिक्षा। 'चन्दन' घर में निराश लौटता है और 'सुक्खो' को शिक्षा के स्तर पर अन्याय को लेकर कहता है-"कैसा दाखिला, किसका दाखिला टेस्ट पास करो। इंटरव्यू दो। ये करो, वह करो। ये सब डिरामेबाजी है। असली बात तो पैसों की लूट है। जापै कारो धनु हे बाक चांदी ही चांदी है। कोई रिश्वत की कमाई देई मिलावट खोरी के धन ते बालक पढ़ावे तो पढ़ावै शुद्ध ईमानदारी के पैसा वाले कूं कहाँ है अंग्रेजी स्कूल

की पढ़ाई? अब हम जैसे दिन-रात पसीना बहा कर कैसे पढ़ावेंगे? अमीरजादों संग। खाक है शिक्षा समानता का अधिकार, नए गुलाम, मालिक, शोषित-शोषक, शासिक-शासक के फर्क पैदा करेंगे ये नेता।"[70]

आज समाज में अंग्रेजी स्कूलों की महत्त्वता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है जिसमें अमीर व उच्च वर्ग की संताने ही शिक्षा ग्रहण कर सकती है। निम्न जाति के लोगों को ऐसी संस्थाओं में शिक्षा पाने का अधिकार है। आज गरीब बच्चों को जाति के आधार अन्याय का सामना करना पड़ता है जिससे उच्च व निम्न वर्ग के बीच की दूरी तो बढ़ती है एवं जाति-भेद की व्यवस्था को बढ़ावा मिलता है। जिसके कारण दलित वर्ग शिक्षा व आरक्षण के स्तर पर अन्याय पा कर अपने जीवन में विकास नहीं कर पाते क्योंकि समाज निम्न वर्ग को अपने साथ मिलाकर प्रगति व उन्नति नहीं करना चाहता है उच्च वर्ग केवल स्वार्थ पर टिका है वह अपना विकास दिन-रात तेजी गति से करना चाहता है। 'चन्दन' अपनी पीड़ा को व्यक्त करते हुए 'सुक्खो' को बताता है- "हम जैसे मजदूर ऊपर से अछूत, हमारे बालक ने अंग्रेजी स्कूलन में पढ़नों है तो ईसाई बनि के ही थोड़ो बहुत ज्ञान लै सकत हैं। पैट काटि के पसीना बहाइ के हम कहाँ ते अंग्रेजी बेचने वालों के बैंक खाते भर पाएँगे? एक-एक रुपया जोड़ने वाले कहाँ से लाएँगे पचास हजार का डोनेशन? ये समाज की सेवा कर रहे हैं या डाके डाल रहे है, गरीबों के घर पर? करोड़ों की बिल्डिंगे बनाते हैं, डोनेशन के रूप में, गरीबों के धन से और मालिक बन जाते हैं खुद। समाज के धन से बनते-पनते ही बपौती बताने लगते है संस्थाओं को। कि सरकार की मदद से नहीं चल रही हमारी संस्था चैरेटी ट्रस्ट भी नहीं। अगर इसमें अछूतों या शूद्रों को प्रवेश देने की कोशिश की तो हम इसमें आग लगा देंगे। अगर हमारी व्यवस्था न चलेगी तो हम खुद भी आत्महत्या कर लेंगे।"[71]

'चन्दन' अपने बेटे 'सूरज' के दाखिले के लिए अपने खेत बेचकर फीस की दर 50,000 रु० स्कूल में जमा करवा देता है। स्कूल में 'सूरज' के साथ जातिगत व्यवहार किया जाता है। 15 अगस्त के दिन स्कूल में पी०टी० मास्टर द्वारा 'सूरज' को सीढ़ियों से धक्का देकर गिराया जाता है क्योंकि उसके पास स्कूल की वर्दी नहीं होती है। 'सूरज' जब घर आता है तो उसे तेज बुखार व कमर में दर्द होता

है। 'चन्दन' 'सूरज' को शहर में डिस्पेंसरी पर ले जाता है। वहां पर डाक्टर 'सुमन दीक्षित' जो केवल अमीर बच्चों का ही ईलाज करती है। 'सूरज' को गलत दवाई देने के कारण से 'सूरज' की हालत ओर बिगड़ जाती है। अस्पताल में भर्ती करवाने पर 40,000 रुपये का बिल 'चन्दन' के हाथ में थमा देती है और कहती है कि पिछला बिल भुगतान होने पर ही उसके बेटे को आगे ईलाज किया जाएगा 'चन्दन' बिल देखकर हैरान हो जाता है और सोचता है कि पचास हजार रुपये तो 'सूरज' के दाखिले के लिए भर दिये है वो भी खेतों को बेच कर अब उसके पास कुछ भी नहीं बचा है। 'चन्दन' को गांव में किसी के पास से भी उधार रुपये नहीं मिलते है वह स्कूल की फीस वापिस लेने की सोचता है कि जो उसने दाखिले के वक्त स्कूल प्रबंधक मैनेजर को जमा करवाए थे 'चन्दन' सोचता है कि 'सूरज' की जिन्दगी बच जाए तो फिर किसी भी स्कूल में पढ़ लेगा। 'चन्दन' अपनी पत्नी 'सुक्खों' को लेकर मैनेज के घर पहुँचता और गिड़गिड़ाता हुआ कहता है-"सेठ जी हमारो बेटा, तुम्हारे स्कूल को विद्यार्थी सूरज, सख्त बीमार है। डाक्टर को हम सब जमा जोड़ बेच कर दे चुके हैं। अब भीख भी माँगे तो भी चालीस हजार इकट्ठै नांय कर सकत। पुश्तैनी धरती का टुकड़ा बेच के तो तुम्हारे स्कूल में पढ़ाने की धुन सवार थी। अमीरन जैसी तालीम दिला कर मैं अपने बेटा को बड़ो आदमी बनाना चाहता था।"[72] स्कूल प्रबंधन 'चन्दन' की बातें सुनकर कहता है कि हम स्कूल की फीस वापिस नहीं करते और अपने विचार व्यक्त करते हुए कहता है-"तो तुम्हारा मतलब मुझे से कुछ मदद माँगना है। सो भइया मैं एक स्कूल का प्रबंधक हूँ किसी शराब की फैक्टरी का मालिक नहीं। कोई डांस वार या 'चकला फाउण्डेशन' नहीं चलाता मैं।"

'चन्दन' अपने डोनेशन वापिस मांगने की बात करता हुआ कहता है-"सेठ जी, हम आप से मदद मांगने नहीं आए। हम पिछले सप्ताह दिए डोनेशन के पैसे वापस लेने आए हैं।"

स्कूल प्रबंधक गुस्से से फटकारता हुआ 'चन्दन' से कहता है- "डोनेशन क्या मतलब? क्या मैं मुफ्त में पढ़ाऊँगा? क्या मैं मैनेजर न होकर अनाथालय का मालिक हूँ? स्कूल धंधे में मोटी कमाई न होती तो मैं कोई और धंधा करता। मैं बिजनेस

मैन हूँ। मुझे भी चार पैसे कमाने हैं। एज्यूकेशन इनवेसमेंट है। जैसा धन इनवेसट करोगे वैसा रिटर्न पाओगे। इंजीनियर, वकील या डाक्टर बनेगा, तब लाखों करोड़ों कमाएगा तुम्हारा बेटा। मेरा बेटा तो नहीं। उसकी कमाई तुम्हारे घर जाया करेगी मेरे घर तो नहीं।"

"जी मेरा पैसा वापस कर दो।"

तो क्या मैं उल्लू का पट्ठा हूँ या पागल कुत्ते ने काटा है मुझे, जो डोनेशन वापस कर दूँ, क्या कोई बनिए, ब्राह्मण का बेटा अछूत जाति से सीखेगा कि पैसा कैसे कमाया जाता है।"[73]

समाज में जाति का घृणित रूप इतनी गहराई से स्थापित है कि हर क्षेत्र में विकराल रूप लेकर निम्न वर्ग प्रति प्रदर्शित होता है। गरीबी के कारण शिक्षा को लेकर जातिगत अपमान व अन्याय का सामना करना पड़ता है। 'चन्दन' के प्रति स्कूल मैनेजर के मन में तनिक भी दया नहीं आती है और आवेश में आकर 'चन्दन' और उसकी पत्नी 'सुक्खो' को फटकारते हुए कहता है-"सुनो मैडम शर्मा, गार्ड से कहो इसे धक्के मार कर बाहर करे। पैसे मांगने आया है। रिफंड लेगा उल्लू का पट्ठा। जानता नहीं, हमारी शहरी की ब्रांचों में तो ऐसे नंगे-भिखमंगे टाइप के लोग घुस भी नहीं सकते। हमारे ही कुछ कम्पलसेशन थे जो यहाँ स्कूल खोले। मल्टीनेशनल्स का दबाव था। विश्व बैंक के तहत। वरन् बच्चों को एडमिशन कराने के लिए तरसते हैं बड़े-बड़े पत्रकार, बैंक मैनेजर और हिंदी लेखक प्राध्यापक सिवाय बिजनेसमैन के हम किसी को घास नहीं डालते। ग्लोबलाइजेशन की नीतियों का दबाव था वरना।"[74]

श्योराज सिंह बेचैन की अन्य कहानी 'शोध प्रबंध' में 'रीना' प्रोफेसर प्रताप सिंह के निर्देशन में पीएच०डी० कर रही होती है। प्रो० 'प्रताप सिंह' 'रीना' के भोलेपन का फायदा उठा कर उसे शोषण का शिकार बनाता है। प्रो० प्रताप सिंह अपनी घटिया मानसिकता के चलते 'रीना' का गर्भ धारण हो जाता है। एक दिन 'रीना' बिना बताए प्रो० प्रताप सिंह के घर रात को अपनी समस्या को लेकर मिलने के लिए आती है कि प्रो० प्रताप सिंह को बताना चाहती है कि वह प्रेगनंट है। 'प्रो० प्रताप सिंह 'रीना' को देखकर चौक जाता है और उसे समझाता हुआ कहता

है-"रीना देखो गेस्ट घर में है, हमे ऐसी बातें उनके सामनें नहीं कर सकते। ये बातें मार्डन एज की बातें है और गेस्ट न प्रगतिशील विचारों के है और न वैज्ञानिक सोच के। वैसे इन्होंने ऊपरी तौर पर खुद को उत्तर आधुनिकवादी भी बनाया हुआ पर भीतर से संस्कार, आचार-विचार सबके सब जड़ है। व्यवहार का ऊपरी दिखावा जरूर बदला है। कुल मिलाकर कुंद बुद्धि और बंद दिमाग के लोग हैं।"[75] 'रीना' 'प्रो॰ प्रताप सिंह' के घर रूकने के लिए आग्रह करती है परन्तु वह तुरन्त कहते है-"नहीं-नहीं रीना यह तो घोर अनर्थ हो जाएगा, ये लोग प्रेम-प्रसंग को पता नहीं अनाचार, पापाचार, दुष्कर्म वगैरह-वगैरह न जाने क्या-क्या नाम देंगे? तुम घर बैठे नयी मुसीबत को दावत मत दो।"[76]

इक्कीसवीं सदी के समाज में शिक्षा का स्तर गिरता जा रहा है। गुरु अपने शिष्य के प्रति गलत दृष्टिकोण रख उसके साथ अन्याय करता है। सर्वप्रथम समाज में दलित छात्रों के साथ शिक्षा के स्तर में भेदभाव व अन्याय बरता जाता है अगर शिक्षा में कदम रख लिया तो आगे जाति को लेकर सवर्ण जाति के लोगों का निम्न जाति के प्रति व्यवहार व शोषण बढ़ चढ़कर दिखाई देता है। जिस तरह 'प्रो॰ प्रताप सिंह' शिक्षा के स्तर पर ऊंच पद पर विराजमान होने पर भी जातिगत आधार पर 'रीना' को अपनी हवस का शिकार बनाता है और बाद में किसी से न कहने के लिए भी आग्रह करता है ताकि उसकी समाज में साफ-सुथरी छवि बनी रहें। वह 'रीना' को समझाता हुआ कहता है-"रीना आज के जमाने में तुम्हें थोड़ा प्रैक्टिकल भी होना चाहिए। क्या तुम नहीं जानती कि रिश्तों के मामलों में हर उम्र की अपनी अलग माँग होती है। क्या यह जरूरी है कि हर प्रेम की परिणति अनिवार्यत: शादी ही में हो? ये तुम्हारी स्टूडेंट लाइफ की मौज मस्तियां है। इन्हें तुम जीवन की खास भूमिका में क्यों जोड़ना चाहती हो? हाँ विवाहेतर प्रेम सम्बन्ध अपवाद नहीं है।" 'रीना' अपने विचार रखती हुई कहती है-"तो विवाह कर लेने में क्या हर्ज है?"

"बहस के लिए वक्त नहीं है घर में जच्चा अबनार्मल सिचुएशन में है। तुम्हें इस मौके की मजबूरी को समझना चाहिए। क्या तुम्हारी जाति में मेहमान-नवाजी का चलन नहीं है?"

"सॉरी सर, पर.... मैं,
पर मैं मैं क्या....?
कुछ नहीं, कुछ भी नहीं सर।

'प्रो॰ प्रताप सिंह' 'रीना' को जाने के लिए कहते है-"रीना तुम गर्ल्स होस्टल में चली जाओ, इस वक्त मेरा फर्ज पुकार रहा है। मुझे घर में मेहमान की देखभाल करनी है।"[77] इन दोनों की वार्तालाप के बीच नौकरानी आकर प्रो॰ प्रताप सिंह से कहती है- "सर मैं कल नहीं आ सकती।" 'रीना' अपने गाइड की रंगरलिया देख कर हैरान हो जाती है। 'प्रो॰ प्रताप सिंह' शिक्षा के स्तर पर अन्याय करने के बावजूद 'रीना' को शिक्षा के प्रति भ्रमित करने का प्रयास करता हुआ कहता है-"देखो रीना तुम्हें दाखिला तो मिल गया। रिजर्व सीट भरना इस बार हमारी मजबूरी थी। परन्तु यदि हम तुम्हें लेना नहीं चाहते तो एस॰ सी॰ की मैरिट में भी तुम्हारे नाम के ऊपर एक अन्य लड़का था। पर हमारी सोच है कि दलितों में भी दलित स्त्रियाँ दोहरी-तेहरी दलित हैं प्राथमिकता के साथ उन्हें ऊपर उठाना हमारा नैतिक कर्त्तव्य है।"[78]

आरक्षण स्तर पर शिक्षा में दलित छात्रों के साथ भेदभाव बरकरार है। दलित वर्ग के अधिकारों से वंचित कर अन्याय का सामना करना पड़ता है जो सदियों से न्याय पाने के लिए विवश है। 'रीना' 'प्रो॰ प्रताप सिंह' न्याय पाने की माँग करती हुई कहती है-"सर आप "कोर्ट मैरिज" कर लीजिए?" मेरा आपका यही समाधान हो सकता है।" प्रो॰ प्रताप कहते है-"देखो रीना मांस खाने वाले गले में हड्डियाँ लटका कर नहीं घूमते। ये इंसानी कमजोरियां है कुदरत ने ज्यादातर स्त्री-पुरुषों के व्यक्तित्व में समाहित की है। शादी समेल हो तो जोड़ी जमती है। तुम रही 26 साल की और मैं 50 से ऊपर। दुनिया तुम्हारा मजाक उड़ाएगी। दो चार साल मै लाठी टेक कर चलूँगा और तुम्हारे यौवन की बगिया में बहार होगी। तुम जानबूझ कर उसमें पतझड़ का बीज क्यों बो रही हो?"[79] प्रो॰ प्रताप सिंह की बातें सुन कर 'रीना' विवश होकर रोने लगती है और सोचती है उसकी जिन्दगी बर्बाद होने के बाद भी उसे न्याय नहीं मिल पा रहा है। 'रीना' का शैक्षणिक व शारीरिक दोनों तरह से शोषण होता है। 'प्रो॰ प्रताप सिंह' 'रीना' को सलाह देता हुआ कहता है-"मै कोई पल्ला नहीं झाड़ रहा। तुम्हें मेरी आधी रात भी जरूरत हो तो चली

आना। पहले अपने पेट की सफाई यानी एर्वोशन करा आओ। वैसे तुम्हारी जाति में उच्च शिक्षित लड़कियाँ होती ही कहाँ हैं, कोई भी एस०सी० अफसर तैयार हो जाएगा तुम से शादी करने के लिए। हाँ, दहेज में बतौर गिफ्ट 10-20 हजार मैं भी भेंट कर दूंगा समझी, समस्या से निबट कर किसी दिन घर पर आकर डिनर करो और शौक से शादी करके सुख से वैवाहिक जीवन बिताओ। ओ० के०।"[80]

इक्कीसवीं सदी में जाति के कारण अन्याय व शोषण घटने की बजाए बढ़ता जा रहा है। जिसमें लोगों को संविधान, कानून व्यवस्था का कोई डर नहीं है वह सदियों से अपनी ही व्यवस्था में जीते आ रहे है। सदियों से ही नारी का शोषण, अन्याय चलता आ रहा है जिसमें पुलिस व्यवस्था, कानून, सामाजिक न्याय कुछ मान्य नहीं रखता है। 'प्रो० प्रताप सिंह' 'रीना' के साथ विवाह करने के लिए तैयार नहीं होता है वह रीना को न्याय देना नहीं चाहता है। स्वयं को बदनाम होने से भी बचाना चाहता है। प्रोफेसर अपने चैम्बर में आकर बैठता है तभी 'रीना' हाजिर हो जाती है-वह 'रीना' से पूछता है-"अस्पताल जा रही हो क्या?"

"नहीं"

"नहीं क्यों? क्या तुम्हारी समझ में यह बात नहीं आई कि... तुम्हारी प्रॉब्लम का सौल्यूशन एकदम जरूरी और सिम्पल है। तुम अभी तुरंत जाओ और अर्बोशन करा कर लौट आओ। मैं ड्राइवर को बुलाकर गाड़ी की चाबी उसे दिए देता हूँ। हाँ उसके बाद कोर्स का काम तुम 10-15 दिन रोक सकती हो। पूरा स्वास्थ्य लाभ लेकर आ जाना ठीक है।"[81] 'रीना' तभी गुस्से से कहती है- "और यदि मैं आपके बच्चे को जन्म देना चाहूँ तो?" 'प्रो० प्रताप सिंह' तुरन्त सोचते हुए कहते है-"तो तुम किसी से जल्दी शादी कर लो। एक दो दिन ससुराल गुजार आओ फिर छः-सात महीने बाद जब बच्चा पैदा होगा तो मैं अपने मित्र प्रसूति विशेषज्ञ डॉ० तिवारी के 'नर्सिंग होम' में तुम्हें भरती करा दूँगा। वे साबित कर देंगे के इशू दो ढाई महीने पहले आ गया है। इसका एक लाभ तो तुमको यह मिलेगा कि उसे 'सतमासा' मानकर तुम्हारे घर में उसकी विशेष केयर की जाएगी। दूसरे तुम्हारी परेशानी दूर हो जाएगी।"[82]

समाज में मनुष्य जाति के आधार पर शोषण को बढ़ावा दिया जा रहा है और दूसरी तरफ भ्रूण हत्या का अपराध करता है और तीसरा भ्रष्टाचार को बढ़ावा देता है। इक्कीसवीं सदी में आज मनुष्य जीवन में सुख-सुविधाओं में तरक्की करने के बावजूद पूरा भ्रष्ट आचरण को व्यक्त करता है। जिस तरह 'प्रो॰ प्रताप सिंह' ने 'रीना' के साथ हर प्रकार अन्याय किया और बढ़ावा दिया। प्रो॰ प्रताप सिंह ऊँच पद पर स्थित होने के बावजूद भी निम्न व संकीर्ण सोच रखते हुए अपराध करता है उसे संविधान, पुलिस, कानून-व्यवस्था का तनिक भी भय नहीं है। 'रीना' के साथ शिक्षा स्तर पर उसका शोषण करता है।

समाज में एक तरफ तो दलित वर्ग के साथ शिक्षा के प्रति अन्याय होता है। दूसरी ही तरफ दलित वर्ग अपनी संतान को न पढ़ा-लिखा कर उनके साथ अन्याय करता है। सूरजपाल चौहान की कहानी 'बदबू' में 'संतोष' पढ़ाई में होशियार व मेहनती है लेकिन उसके पिता 'किशोरी लाल' शिक्षा को बढ़ावा न देकर उसके विवाह की चिन्ता करते है। 'सन्तोष' को अपनी आगे की पढ़ाई जारी रखने नहीं दिया जाता है। 'संतोष' दलित परिवार की पहली लड़की है जो हाई स्कूल की परीक्षा में सत्तर प्रतिशत अंक लेकर पूरे स्कूल में अव्वल आई है। गांव का पण्डित 'मंगतराम' 'किशोरीलाल' को संतोष की पढ़ाई जारी रखने के लिए कहता है लेकिन 'संतोष' के पिता नहीं मानता है और कहता है-"तुम ऊँची जाति के लोग हो अपनी जवान होती बेटियों को शहर पढ़ने भेज सकते हो, मैं ऐसा करूँगा तो समाज में मेरी नाक कट जाएगी, बिरादरी के सभी लोग ताली देकर हँसेगे और कहेंगे कि विवाह योग्य लड़की को शहर पढ़ने भेज दिया.... ना पण्डित जी ना, मैं तो अब इसके हाथ पीले करके बेटी-ऋण मुक्त होना चाहूँ।"[83] गाँव-कस्बे के लोग संतोष को उच्च शिक्षा दिलाने की बात करता है। लेकिन 'किशोरीलाल' पर कुछ असर नहीं होता है वह अपनी बेटी के साथ शिक्षा के स्तर पर अन्याय करता है और कहता है-"मुझे दूसरो से क्या, दूसरे अपनी बेटियों को कहीं भी पढ़ने भेजें, मैं ना भेजने का इसे इतनी दूर, फिर हमने सन्तोष को आगे पढ़ा-लिखाकर कौन-सा कलट्टर (कलेक्टर) बनाना है।"[84] 'सन्तोष' अपने पिता की बातें सुनकर परेशान हो जाती है वह सोचती है कि उसे आगे पढ़ाया नहीं जा रहा है उसके विवाह को

लेकर योग्य वर तलाशने लगते है उसकी शिक्षा के कारण योग्य वर नहीं मिल रहा है। 'संतोष' का पिता पण्डित 'मंगल राम' और दूसरे लोगों की बातें बताता हुआ कहता है-"ससुरे, यूँ कहवे थे कि अब तो दलित समाज में लड़के और लड़कियाँ बड़ी-बड़ी किलासों में पढ़ने लगे हैं लगभग दो साल होने को आये हमारी सन्तोष के लिए तो दसवीं पास भी लड़का ना मिला पा रहा।"[85] 'संतोष' की माँ 'संतोष' को ही दोषी मानते हुए गुस्से से कहती है-"तुझे इतना पढ़ा लिखाकर तो हमने आफत मोल ले ली, अब बिरादरी में तेरी बराबर पढ़ा लिखा लड़का ही नहीं मिलता.... हमारी तो किस्मत ही फूट गयी।"[86]

श्योराज सिंह बेचैन की कहानी 'भरोसे की बहन' में भी शिक्षा स्तर पर जातिगत भेदभाव को लेकर अन्याय किया जाता है। कहानी में 'भरोसे' का बेटा 'भीमा' जो चौथी कक्षा में पढ़ता है। स्कूल की फीस दर बढ़ जाने से 'भीमा' का नाम काटकर हाथ में फीस की पर्ची पकड़ा दी जाती है और स्कूल से बाहर निकाल दिया जाता है क्योंकि दो महीने से 'भीमा' की फीस स्कूल में जमा नहीं हुई है। 'भरोसे' जब स्कूल के आचार्य से पूछता है तो आचार्य जातिगत आधार पर 'भरोसे' को अपमानित करता हुआ कहता है-"स्कूल हमने कोई दान या खैरात के लिए तो खोले नहीं है, जन-धन, समय-शक्ति सब लगाते हैं हम। वैसे तो अब तुम्हारी बहन जी की सरकार है, दो-चार स्कूल भंगी-चमारों के नाम खुलवा लो बहुतेरी तरक्की पा ली है आरक्षण लेकर। हम ही ने तुम्हें पढ़ा-लिखा कर मास्टर, डॉक्टर, वकील, अफसर, दरोगा, तहसीलदार और न जाने क्या-क्या बना दिया, बिना छदाम खर्च किये। तुम फर्स से उठकर अर्स पर पहुँच गए। आजादी मिली तो मिली है दलित-पिछड़ों और आदिवासियों को। अब क्रिश्चियनिटी या इस्लाम की ओर जाये बगैर प्राइवेट में भी कुछ बन कर दिखाओ अपने बलबूते पर।"[87]

समाज में सवर्ण जाति द्वारा निम्न जाति को जाति के आधार पर अपमानित करना पीढ़ी दर पीढ़ी चलता आ रहा है। जो निम्न जाति के जीवन के विकास में बाधा डाल कर अन्याय को झेलना पड़ता है। सदियों से दलित वर्ग को शिक्षा से दूर रखा जो आज नयी सदी में भी अन्याय व्याप्त है।

5.1.4 रोजगार के स्तर पर :

वर्तमान समाज समानता पर आधारित न्यायपूर्ण व्यवस्था न होकर शोषण, दमन और उत्पीड़न की व्यवस्था है, जो केवल जाति के कारण ही स्थापित है। समाज में ऊँच-नीच के भेदभाव प्रत्येक क्षेत्र में जाति द्वारा ही किया जाता है। समाज में उच्च सवर्ण जाति के लोग दलित वर्ग के प्रति घृणा व द्वेष की भावना रखते है। शिक्षा स्तर पर, आरक्षण स्तर पर एवं रोजगार स्तर पर भी दलितों के साथ अन्याय होता है। आरक्षण होने के बावजूद भी दलित वर्ग को रोजगार पाने में अन्याय का सामना करना पड़ता है।

श्योराज सिंह बेचैन की कहानी 'होनहार बच्चे' में रोजगार के स्तर पर दलित वर्ग के प्रति हुए अन्याय को प्रदर्शित किया गया। आरक्षित सीट पर भी उच्च जाति के लोग अपना कब्जा जमाए हुए है जिससे वे दलित वर्ग के अधिकारों का हनन कर अन्याय कर रहे है, परन्तु सवर्ण जाति को दलित वर्ग के प्रति अन्याय करने से कोई फर्क नहीं पड़ता है, वह केवल अपना स्वार्थ सिद्ध करना जानते हैं। कहानी में प्रोफेसर पड़ित 'सदानन्द तिवारी' जातिगत मानसिकता रखता है वह अपने बच्चों की नौकरी आरक्षित सीट के दौरान दिलवाना चाहता है क्योंकि आरक्षित कोटे की सीटे पूरी रिक्त पड़ी है। पंडित 'सदानन्द तिवारी' स्वार्थ सिद्ध करने के लिए 'धीरू' नामक दलित वृद्ध को अपने जाल में फंसा लेता है जिससे 'धीरू' कानूनी रूप से 'सदानन्द तिवारी' के बेटे का पिता बन सके। पण्डित सदानन्द तिवारी छलकपट की घटिया मानसिकता रखते हुए 'धीरू' को कहता है-"तुम बुढ़े हो चले हो धीरू, बड़ी सेवा की है तुमने बड़ी जातियों की। कितनी पीढ़ियाँ खपा दीं सेवा में, दो सौ चार सौ साल नहीं चार हजार साल? तुम्हारी मनुष्यता की अपार क्षति हुई है। अब थोड़ा अवकाश ले लो धीरू। हमें मुआवजा चुकाने का मौका दो। अब हमारी आत्मा हमें ललकारती है। सारी सुख समृद्धि हमें तुम्हारे पूर्वजों की श्रम की विरासत लगती है।"[88] वृद्ध 'धीरू' पण्डित की मानसिकता को समझ नहीं पाता है। पण्डित 'सदानन्द तिवारी' अपने जाल में फंसाता हुआ कहता है-"वह तुम जानो, हम तो तुम्हारे गोद में पढ़ा-लिखा, पला-पलाया अपना गोविन्द डाल रहे है।"

"पर काहे का मतलब है तुम्हारी?"

"मतलब यह कि तुम इसके कानूनी पिता बन रहे हो, सक्सैना जी ने सारे कागज तैयार कर लिए हैं। तुम्हें बस अंगूठा लगाना है और कोई पूछे तो हाँ करना है बस्स।"[89]

'धीरू' कहता है-"बाप तो बाप हौवे हें साब, कानूनी गैर कानूनी का? पर हाँ तुम्हारे दबे में बसत है। जैसे कहोगे करंगो साब।"[90] 'तिवारी' के घर के मेहमान आ जाने से वह 'धीरू' को अपनी झोपड़ी में चले जाने के लिए कहता है। 'तिवारी' की बहन 'सरस्वती' 'तिवारी' से अपने भतीजे 'गोविन्द' के बारे में पूछती है- "भैया हर साल इंटरव्यू फेल हो रहा, गोविन्द इस बार पास कैसे हुआ?" पंडित 'सदानन्द तिवारी' कहता है- "सब-ऊपर वाले की कृपा है, और ज्यादा क्या कहूँ, बेटा कामयाब हो गया। कामयाबी नहीं तो सारी कोशिशें-कसरतें बेकार होती हैं पर भला हो ऊपर वाले का।" तिवारी की बहन 'सरस्वती' आगे कहती है-" वह तो ठीक है पर अभी भतीजी भी तो एम०फिल् कर चुकी है, उसे भी तो स्थायी जॉब दिलाने की जरूरत है। किसी कॉलेज यूनिवर्सिटी में। पंचशील विश्वविद्यालय में तुलसी साहित्य में शूद्र, पशु नारी के कल्याण की भावना, विषय पर पीएच०डी० की है उसने और पिछले चार साल से 'प्रतिभा-कॉलेज' में तदर्थ पढ़ा भी रही हैं, रिजर्व की खाली जगह पर। सौ की एक बात तो यह है कि वह एक ब्राह्मण कन्या है।"[91]

पंडित 'सदानन्द तिवारी' दलितों के रोजगार को लेकर उनके साथ अन्याय करता है। सदियों पुरानी दलितों के प्रति उत्पीड़न को बरकरार रखना चाहता है जिससे दलित वर्ग अपने जीवन में विकास न सके। पंडित 'सदानन्द तिवारी' कहानी में 'किशन किशोर सक्सैना' से 'पुनिता' की समस्या को लेकर विचार विमर्श करता हुआ पूछता है-'क्या पुनिता के लिए भी कोई शाटकट निकाल सकते हो सक्सैना जी?"

'सक्सैना कहता है-"क्यों नहीं, आज कल हर राज्य की सरकार दस-दस पन्द्रह-पन्द्रह साल से खाली चले आ रहे बैकलाग भरने का प्रयास कर रही है। भारत की संसद द्वारा परित संविधान संशोधन 2002 के तहत अर्हताएँ भी शिथिल

कर दी है और बैकलाग है सारे के सारे रिजर्व कैटेगिरी के। अब तुम सोचो पुनीता इस बैकलाग का लाभ कैसे उठा सकती है?"[92]

सवर्ण लोगों की मानसिकता दलित वर्ग के प्रति अन्यायकारी ही रही है। संविधान कानून व सामाजिक न्याय की अवधारणा के अन्तर्गत दलितों के न्याय की बात की जाती है। जिसका लाभ सवर्ण लोग उठाने नहीं देते है। रोजगार के स्तर पर दलितों के अधिकारों को भी अपने कब्जे में कर लेते है और स्वयं लाभान्वित होते है। ओमप्रकाश गाबा दलितों के न्याय के बारे में अपने कथन प्रस्तुत करते हुए कहते है-"संगठित सामाजिक जीवन से जो भी लाभ प्राप्त होते है, वे इने-गिने लोग के साथ में सिमटकर न रह जाएं, बल्कि सर्वसाधारण को विशेषत: निर्बल और निर्धन वर्गों को उनमें समुचित हिस्सा मिलें ताकि वे सामान्यत: सुखी व सम्मानित व निश्चित जीवन जी सके।"[93] कहानी में 'पंडित सदानन्द तिवारी' 'पुनिता' के बारे में 'सक्सैना' को सलाह देता हुआ कहता है-"पुनिता के पिता को कहो व नि:सन्तान बूढ़ा एस०सी० ढूंढने के अलावा हम भी कोई अनाथ एस०सी० युवक खोज सकते हैं। लड़की को घर पर रखो और साल भर के लिए उसके साथ कोर्ट मैरिज का सर्टिफिकेट बनवा लो, कोर्ट-कचहरी का काम में देख लुंगा। ऐसा युवक भी हायर करके ला दूंगा आप उसे एक साल की इंजीनियरिंग पढ़ाई की फीस के पैसे दे दें बस्स।"[94]

उच्च वर्ग के लोग धन व जाति के बल पर दलित वर्ग को सदैव गुलाम बनाए रखना चाहते है ताकि उन्हें कभी भी न्याय न मिल सकें। संविधान के अन्तर्गत सामाजिक न्याय की अवधारणा में दलितों की समानता के साथ जीवन को सफल एवं विकासशील बनाने के बात कही है। आरक्षित सीट द्वारा दलित वर्ग नौकरी पा कर अपने जीवन में सुधार व विकास कर सकता है। परन्तु सवर्ण जाति के लोगों की मानसिकता आरक्षित सीटों को न भरने में है और दलित वर्ग के स्थान पर उच्च वर्ग को स्थापित करने में है। जिससे देश व समाज में सवर्ण वर्ग की प्रधानता कायम रह सके। जिन्होंने निम्न जाति के प्रति घृणित व्यवहार कर उन्हें अछूत समझ कर हाशिए पर रखा। आज जब सामाजिक न्याय के आधार पर उनके विकास के लिए सुविधाएं उपलब्ध करवाई गयी तब सवर्ण जाति के उनका हिस्सा

छीन पर स्वयं को स्थापित करने में तरह-तरह प्रयोजन सिद्ध करने लगे है। वह अपने सवर्ण जाति के लोगों के अनुसूचित जाति के फर्जी प्रमाण पत्र बनवाकर निम्न जाति के प्रति अन्याय व शोषण को गतिमान बनाए रखना चाहते है। 'होनहार बच्चे' कहानी के अंतर्गत प्रोफेसर पंडित 'सदानन्द तिवारी' 'सक्सैना' को फोन करके बताता है कि कॉलेज में एस०सी० की एक पोस्ट निकली है 'पुनिता' को कहे कि वह पोस्ट भर आए। वह पूछता है-"पुनीता कहाँ है?"

'अंग्रेजी मूवी देखने निकल गई है चाँदनी चौक की ओर कहिए, क्या काम है?"

"काम क्या है आई०एल० कॉलेज में पोस्ट निकली है। विज्ञापन देखा? आवेदन मंगाया है या नहीं?"

"बता तो रही थी पर वह सीट एस०सी० के लिए रिजर्व है, नौकरी तो मिलनी नहीं, क्यों समय और पैसा बर्बाद किया जाए?"

"तो क्या आपने उसका कास्ट सर्टिफिकेट नहीं बनवाया है?"

"वह तो कभी का बनवा रखा है। सक्सैना जी आए थे बनवा गए अपने दाव-पेचों के आधार पर?"

"अच्छा किया, पर अब क्या मुश्किल है?"

"यही की असल एस०सी० के मुकाबले अडोप्टिड एस०सी० को कहीं महत्त्व मिलेगा क्या? कहीं सौतेला व्यवहार तो नहीं होगा उसके साथ? हम खुद्दार है, हम ने गांधी जी से सीखा है भेदभाव हुआ था तो अफ्रीका को लात मार आए थे बापू।"

"तो क्या इसमें भी शक है, बेटे की अद्भुत कामयाबी के बाद भी ऐसा सोच रहे है आप?"

"शक तो नहीं है, पर डर तो बना ही रहता है, कोई कोर्ट कचहरी में चला जाए तो नौकरी तो जाएगी ही सजा ऊपर से होगी। अब वह जमाना तो रहा नहीं जबकि हत्या के जुर्म में भी ब्राह्मण की चोटी का एक बाल उखाड़बरना मुश्किल होता था किसी मानवीय जज को।"[95]

सामाजिक न्याय के आधार पर आरक्षण को लेकर रोजगार स्तर पर दलितों के प्रति अन्याय किया जा रहा है। स्वतंत्र भारत में भी, संविधान के अंतर्गत

सामाजिक न्याय प्रदान करने पर भी सवर्ण जाति के लोग अपने वर्चस्व को ठेस नहीं पहुँचाना चाहते है और निम्न जाति के प्रति अन्याय को दिन प्रतिदिन बढ़ावा देते आ रहे है। 'सक्सैना' पंडित 'सदानन्द तिवारी' को बताते है- "सजा क्यों होगी? ऐसे तो हम हिंदी साहित्य वाले हजारों गैर कानूनी काम करते रहते हैं? एस०सी० के आरक्षण न देने पर कब किस को सजा मिली है? उल्टे पुरस्कार जरूर मिले होंगे, क्या आरक्षण के विरूद्ध हमारे पास तर्कों की कभी कोई कमी रही है? बल्कि आरक्षण को हम ने कभी भी सम्मानित शब्द नहीं बनने दिया वैसे भी हमारी बुनियादी सत्ताएं तो स्वायत्त हैं। जो आजादी के बाद से ही सरकारों के समानान्तर चल रही है। उनमें किसी कानून-वानून का क्या मतलब? ऐसी-तैसी रिजर्वेशन, डायवर्सिटी दात्री और विशेषधिकारों की भक्षिका डैमोक्रेसी की। अब सजा किसलिए" 'सदानन्द तिवारी' कहता है-"सजा इसलिए की जाति तो जन्म से ही तय होती है, हम ब्राह्मणों से ज्यादा इस सत्य को और कौन जान सकता है? जाति के निर्माता तो हमीं है। कोई चमार-चूहड़े तो नहीं है।"[96]

रजत रानी 'मीनू' की कहानी 'गिरोह' में भी दलित वर्ग के साथ रोजगार के स्तर पर अन्याय होता है। जाति के आधार पर समाज में उन्होंने उत्पीड़न व शोषित जीवन जीने के लिए मजबूर किया है। कहानी के अन्तर्गत स्वतंत्रता दिवस पर सवर्ण जाति के लड़के विद्यालय-प्रांगण में जाति को लेकर आपस में बातचीत कर रहे है कि उन्हें आसानी से रोजगार कैसे प्राप्त होगा। सवर्ण जाति का 'राजबहादुर' अपने विचार रखते हुए कहता है-"हम लोग एस०सी०, एस०टी० या ओ०बी०सी० के सर्टिफिकेट्स बनवा लेते है। फिर देखते है, हमें कैसे नौकरी नहीं मिलती? कम परिश्रम, पूरी सुविधाएं, ऊपर से रियासतें। यह सब करके भी अगली कक्षा में प्रवेश भी आसानी से मिल जाएगा। यह सर्टिफिकेट बनने पर हमारी चांदी ही चांदी होगी। वजीफा भी मिलेगा। हमें पॉकेट मनी के लिए मम्मी-पापा के पास हर महीने गिड़गिड़ाना भी नहीं पड़ेगा।"[97] सवर्ण जाति के लोग अपनी प्रधानता का बनाए रखने के लिए दलित वर्ग के प्रति किसी भी हद तक अन्याय कर सकते है। कानूनी-व्यवस्था कायम होने के बावजूद भी दलित वर्ग न्याय से वंचित रहा है। तभी एक अन्य सवर्ण जाति से सम्बन्धित लड़का कहता है-"वजीफा की तो तू

छोड़, जितना इन्हें एक साल में सरकार देती है उतना हम दो दिन में सिगरेट फूँक देते है। हां हमें ऊँची नौकरियों पर अपनी पिछली पीढ़ियां की तरह कब्जा कायम रखना चाहिए। लेकिन बिल्ली के गले में घंटी कौन बांधेगा? अर्थात् यह फर्जी सर्टिफिकेट बनेगा कैसे? बनवाएगा कौन और बनाएगा कौन? पकड़े गए तो सजा कौन भोगेगा?"[98]

इक्कीसवीं सदी में दलितों की समानता, मान सम्मान व विकास की बात की बहुत दूर सामाजिक न्याय की अवधारणा के अंतर्गत दलित वर्ग के रोजगार व शिक्षा को भी छीना जा रहा है उन्हें हर स्तर पर उत्पीड़न व तिरस्कृत किया है। सवर्ण वर्ग मानसिकता के दौरान दलित वर्ग उपहास व कठपुतली मात्र बनकर रह गया है। कहानी में 'राजबहादुर' फर्जी प्रमाण पत्र के तरीके से नौकरी प्राप्त करता है वह अपने सवर्ण जाति के मित्रों को बताता है-"यह काम तू मुझ पर छोड़। बहुत आसान है। मेरे सगे चाचा लखीमपुर में सदर एस०डी०एम० है। हमारा सीधा एस०डी०एम० का प्रमाण पत्र होगा तब किसी को शक भी नहीं होगा कि ये फर्जी है और एक रहस्य में आज तुम लोगों का हौंसला बढ़ाने के लिए बता रहा हूँ। हमें डरने की कोई जरूरत नहीं है। हमारे पिताजी जो आजकल कर्नल की पोस्ट पर कार्यरत है। उनको फर्जी 'सर्टिफिकेट की वजह से बहुत जल्दी नौकरी मिल गई थी। असली एस०सी० के तो अफसर भी कम ही होते है, जो होते भी है। वह कानून के गुलाम भर होते है और दब्बू। हृदयहीन मशीन की तरह काम करते है। ये लोग अपने वर्ग का तो जायज काम भी नहीं कर पाते।

"मेरे पिता जी के बारे में आज तक किसी को पता नहीं चला। यह बात हम दोस्तों के बाहर नहीं जानी चाहिए। यह मेरी चेतावनी है।"[99] 'राजबहादुर चतुर्वेदी' अपने चाचा के घर लखीमपुर जाता है और स्वयं व अपने सवर्ण जाति के मित्रों के अनुसूचित जाति के प्रमाण पत्रों के बारे में बात करता है वह अपने चाचा 'अतरसिंह चतुर्वेदी' से कहता है- "चाचा हमें कुछ एस०सी० सर्टिफिकेट चाहिए, पर आप देख लें इसमें रिस्क भी है।" 'अतरसिंह चतुर्वेदी' अपने भतीजे 'राजबहादुर' की बातें सुनकर प्रसन्न होता है जिस सामाजिक न्याय के अंतर्गत दलित वर्ग लाभ उठाकर रोजगार प्राप्त करेंगे वह लाभ अब सवर्ण जाति के बच्चे उठायेंगे। वह अपने

भतीजे 'राजबहादुर' पर गर्व करता हुआ और दलित वर्ग के प्रति घृणित मानसिकता रखता हुआ कहता है-"बस इतनी-सी बात है। इसमें वायदा कराने की क्या जरूरत पड़ी। अरे बेटा ! मैं और तेरे पापा दोनों पुराने खिलाड़ी है। हम सभी ने यही काम किये थे। नहीं तो हम अभी भी मक्खी मार रहे होते या कहीं सत्यनारायण की कथा बांचते घूमते, शादी के मुहूर्त बताते अथवा हस्तरेखा देखकर पेट पाल रहे होते और हम तो अपनी तुम जैसी संतानों पर गर्व करते हैं। तुम्हारे लिए नौकरी का रिस्क क्या, अरे जिन्दगी भी दाव पर लगे तब भी हमें आरक्षण नीति को विकृत, निष्क्रिय करने में कमी नहीं छोड़ेगे। मेरा बस चले तो इन दलित जातियों को ऐसे धक्के खिलाऊंगा। इनमें स्वाभिमान पैदा न होने दूं। ये समझते रहें। हम अयोग्य है और इनकी सीटों को चोर दरवाजे से हम हड़पते रहे। अब तुम जैसे वारिसों को देखकर मन में एक सुकून का अनुभव होता है। जीते रहो मेरे बच्चे। अपनी जाति के लिए कुर्बानी भी देनी पड़े तो पीछे मत हटना। आखिर देशभक्ति का हमारा संकल्प जो है। ये कलक्टर बनकर हम पर रौब जमाते है। इन्हें जरा भी अपनी औकात को अहसास नहीं है। ठीक है बेटा तुम ठीक ही कर रहे हो। पर करो चतुराई और सावधानी से। हमारे पूर्वजों ने तीन हजार से इन अछूतों की ऐसी-तैसी की। अब ये कुछ इतिहास की चाले समझने लगें है। खैर तुम फ्रिक मत करो। कल तहसील में आ जाना, मैं तुम्हें सब कागजात कम्पलीट करवा के दे दूंगा। सब ठीक हो जाएगा।"[100]

श्यौराज सिंह बेचैन की कहानी 'होनहार बच्चे' में पंडित सदानन्द तिवारी अपनी बेटी 'पुनिता' अनुसूचित जाति के फर्जी प्रमाण पत्र से प्रवक्ता हेतु रोजगार दिलवाना चाहता है जो स्वयं हिंदी विभाग में प्रोफेसर है वह अपनी बेटी 'पुनिता' को दलित वर्ग के प्रति हो रहे अन्याय के बारे में अपने विचार व्यक्त करता हुआ कहता है- "कॉलेज विश्वविद्यालयों की तो वहां हमने दो फीसदी भी एस०सी०, एस०टी० को नहीं आने दिया है। खुद उन्हीं में मैरिट न होने का मनोवैज्ञानिक हीनता का रोग लगा दिया है हमने।"

"पिता जी आरक्षण बचा भी कहाँ है?"

"अरे तुम क्यों फिक्र करती हो तुम्हारी लिए तो आरक्षण भी है, खुले क्षेत्र भी है, निजी क्षेत्र भी और सच्ची आजादी भी?"[101]

पंडित सदानन्द तिवारी के बेटी 'पुनिता' साक्षात्कार के लिए बुलाई जाती है। 'पुनिता' का जाति प्रमाण पत्र देखकर नेशनल एस०सी०एस०टी० कमीशन के सदस्य पूछते है-"आपके हाई स्कूल प्रमाण पत्र में आपके पिता का नाम तिवारी है? क्या तिवारी हरिजन होते हैं?"

'पुनिता' जवाब देती हुई कहती है-"जी, कैसी बातें करते हैं आप? मैं कुलीन ब्राह्मण कन्या हूँ। मेरा किसी हरिजन-गिरिजन से क्या वास्ता?"

"तो आप ब्राह्मण है?"

"जी।"

तो आपके पास यह एस० सी० जाति का प्रमाण पत्र?"

पंडित 'सदानन्द तिवारी' अपनी बेटी 'पुनिता' के जवाब देने से पहले कहते है-"ये ब्राह्मण कुल में जन्मी.... जरूर हैं, परन्तु इन्होंने गांधी जी की अंतिम इच्छा पूरी करने के लिए एक 'हरिजन' युवक से शादी कर ली है।"[102]

समाज में अंतर्जातीय विवाह जाति भेद को समाप्त करने के लिए तरीका अपनाया गया है, परन्तु सवर्ण जाति के लोग जाति भेद समाप्त न करके अपने स्वार्थ पूर्ति के लिए प्रयोग में ला रहे है जिससे उसका कल्याण पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलता रहे जिसके तहत दलित वर्ग के साथ अन्याय चलता रहे। 'सदानन्द तिवारी' की बेटी 'पुनिता' अनुसूचित जाति के पद पर प्रवक्ता रूप में नियुक्त कर दिया जाता है। वकील 'किशन किशोर सक्सैना' तिवारी के इस चालबाज कार्य के प्रति प्रसन्न होकर कहते है-"वाह ! तिवारी जिन्दाबाद। काश। आप लोकसेवा और संघ सेवा की नौकरियों को भी स्वायत्त बना पाते। तो पिछले पचपन साल में ससुरा एक दलित आई०ए०एस० दिखाई नहीं पड़ता हमारी अपनी नकारा से नकारा औलाद चमार-भंगियों के प्रमाण-पत्रों पर उसी तरह राज कर रही होती। जिस तरह वह मीडिया, साहित्य और कला-संस्कृति के क्षेत्र में कर रही है। न आरक्षण का विरोध करना पड़ता है और न वर्चस्व में कोई कमी आती।"

"तब तो संसद विधान सभा में बैठ आरक्षित श्रेणी के प्रतिनिधियों का मसला भी हल हो जाता। भारतीय समाज में जाति प्रमाण पत्र इसी तरह कारगर रहें तो सब क्षेत्रों में सभी के प्रतिनिधि हमीं होंगे। जो राउण्ड टेबिल कान्फ्रेंस में गांधी जी की हसरत पूरी न हो चुकी थी, वो हम पूरी करेंगे।"[103] 'पुनिता' नौकरी के पहले दिन से वापिस घर लौटती है तो अखबार में 'फैक कास्ट सर्टिफिकेट' की खबर देखकर हैरान हो जाती है कि वह भी तो फैक सर्टिफिकेट के कारण प्रवक्ता के पद पर नियुक्त हुई है वह घर आकर अपने पिता को अपने विचार व्यक्त करते हुए कहती है-"10-20 साल बाद भी पकड़ी जाऊँगी, तब भी तो चोरी-चोरी ही रहेगी। ऐसी होनहार संतान कहलाने से तो बुद्धू ब्राह्मणी कहलाना लाख दर्जे अच्छा है।" 'पुनिता' की बातें सुनकर उसके पिता कहते है-"फर्जी प्रमाण पत्रों में 90 प्रतिशत भंगी-चमारों के नाम से है।" पिता जी यह कब से चल रहा था?" "मत पूछो बेटा, यह तो उसी दिन शुरू हो गया था जिस दिन संविधान लागू हुआ। अछूतों को अछूतोस्थान देने के बजाय देश को एक रखने के लिए सभी क्षेत्रों/सभी संस्थानों में समान प्रतिनिधित्व देना सिद्धांतया स्वीकार किया गया था। क्योंकि यह इच्छा से नहीं हुआ था। इसलिए इसे वापस ले लेने के लिए संविधान और संसद के खिलाफ कुछ चोर रास्ते निकालने पड़े।"[104]

समाज में दलितों के प्रति अन्याय सामाजिक व राजनीतिक भ्रष्टाचार सवर्ण जाति के लोगों द्वारा व्याप्त है। पंडित 'सदानन्द तिवारी' अपनी बेटी को आगे बताता हुआ कहता है-"बेटा एक बात कहूँ?"

"कहो पापा।"

"यह वक्त की मजबूरी है तुम कल जाओ नौकरी करो इन अखबारों की खबरों से कुछ नहीं होता, इन्क्वारियाँ शुरू होती है, दब जाती हैं। केस चलते हैं। चलते-चलते थक जाते हैं। कभी कोई फैसले की मंजिल नहीं पाते हैं। 25-30 साल कोई नौकरी कर जाए फिर क्या बचता है? ये चंद पकड़े गए हजारों पूरी नौकरियाँ कर गए और करते रहेंगे। हाथी चलते-चरते जाते है और कुत्ते भौंकते रहते है। तुम समझो हम जाति को नहीं पद को बेटी देते हैं। पद को सब प्रणाम करते हैं। अपना काम करो, बेटा बंद करो अखबार वाचना और तुम होनहार बच्चे हो होनहार

रहोगी अपराध बोध ग्लानि सभी को मन से निकाल दो, ऐश करो, ऐश। पकड़े भी जाएं तो क्या 30-40 साल में एस॰ सी॰, एस॰टी॰ के वंचित हकदारों के तो घर बर्बाद होते रहेंगे। उन्हें तो नौकरियाँ नहीं मिलेंगी। एक पढ़े-लिखे ब्राह्मण के लिए इससे बड़ा और क्या संतोष चाहिए?"[105] 'गिरोह' कहानी में सवर्ण जाति के विद्यार्थी रोजगार को लेकर आपस में बातें करते है कि शिक्षा के अन्तर्गत आसानी से रोजगार पाना कैसे सम्भव होगा जिससे सवर्ण जाति का अधिकार कायम रह सके। सवर्ण जाति के एक विद्यार्थी 'अरुण रस्तोगी' अपनी बात कहता है-"हम सबको पढ़ाई तो करनी चाहिए। थोड़ी सी हिसाब-किताब लायक और नौकरी का चक्कर छोड़कर बिजनेस करना ठीक रहेगा। उसमें आमदनी भी ज्यादा है, और मालिकाना हक भी बना रहेगा। हम उन निजी क्षेत्रों में इन सबको फटकने भी नहीं देंगे। आयेंगे तो मैरिट में या फिर सफाई-कर्मचारियों के रिजर्व कोर्ट से।"[106] सवर्ण जाति के सभी मित्र 'अरुण रस्तोगी' की बात सुनकर प्रसन्न होते है। तब सभी अपने मित्र की बात से सहमत होते हुए कहते है-"बात तो ठीक है, लेकिन बिजनेस हम सब लोगों के बस की बात नहीं और न ही एक ही काम सब लोग कर सकते हैं और फिर नौकरी करना इन की बपौती थोड़े ही है। वैसे भी इज्जत की नौकरियाँ पर तो हम ही हैं। जज, डॉक्टर, इंजीनियर, विश्वविद्यालयों, कॉलेजों में प्रोफेसर और प्रिंसिपल चाइस चांसलर कौन है? अखबारों-पत्रिकाओं के संपादक कौन है? अरे हम सब जगह है तो क्या आसानी से गायब हो जायेगें? निराश होने की जरूरत नहीं है।"[107] संविधान के अंतर्गत सामाजिक न्याय का पक्ष दलित वर्ग के लिए लिखित रूप तक सीमित है। दलितों के प्रति अन्याय को लेकर किसी भी प्रकार की सख्त कार्यवाही नहीं की जाती है। जियालाल आर्य दलित वर्ग के अन्याय के प्रति अपना कथन प्रस्तुत करते है-"संविधान के अनुच्छेद 46 में यह प्रावधान किया गया है कि कमजोर वर्गों के लोगों के विकास के लिए राज्य विशेष प्रावधान करेगा। अनुसूचित जाति, जनजाति के लोगों के लिए राज्य द्वारा विशेष सुविधा दी जाएगी, जिससे कि उन्हें सामाजिक अन्याय और हर प्रकार के शोषण से बचाया जा सके। राज्य ने सामाजिक न्याय के नाम पर एक के बाद एक नयी योजनाएं बनाई पर कागज पर अधिक और परिणाम सामने है। इस वर्ग विशेष के लोग आज भी सामाजिक अन्याय के शिकार हो रहे है।"[108] 'गिरोह' कहानी में 'राजबहादुर' दलितों के प्रति

रोजगार के लेकर घोटले के किस्से अपने मित्रों को बताता हुआ कहता है- "अच्छा तुम लोग चाहते हो तो सुनो, वैसे इतना ही काफी था। मेरे मामा की दोनों बेटियां और बेटे एम०ए० से पहले थर्ड क्लास थे और एम०ए० में तिवारी जी से चतुर्वेदी को चिट्ठी लिखवा कर उनका बेटा ले गया। उन्होंने रोल नम्बर दे दिए और दोनों को प्रथम श्रेणी मिली। प्रैक्टिकल में तो 100 में 99 फीसदी अंक मिले। जबकि एस०सी० मुंह ताकते रह गये और फेल कर दिए। बाद में दोनों के लिए यही हुआ। 1993 तक स्वयं गाइड ने दस हजार लेकर एक थीसिस टाईप करा दी। लेक्चरशिप के इंटरव्यू में द्विवेदी जी बैठे थे, बनारस वाले। सलैक्शन हो गया। आज पचास हजार माहवार ले रही है।"[109]

रोजगार के स्तर पर दलितों की स्थिति सन्तोषजनक प्रतीत नहीं होती है। दलित वर्ग को शिक्षा व आरक्षण के स्तर पर अन्याय झेलना पड़ता है जिसके कारण वे अपनी स्थिति में परिवर्तन लाने हेतु असमर्थ दिखाई पड़ते है। राम पुनियानी के शब्दों में दलित बेरोजगारों की स्थिति यह है-"बेरोजगारों में भी दलितों की संख्या बहुत अधिक है। आरक्षण ने न केवल दलितों के एक हिस्से के लिए स्थिति में आंशिक सुधार किया है। सत्ता में बैठे लोगों ने आरक्षणों की अनदेखी करने का रास्ता तलाश लिया है। अक्सर ही यह देखने को मिलता है कि अ०जा०/अ०ज०जा० श्रेणी में बहुत से स्थान रिक्त पड़े हैं जबकि हजारों शिक्षित दलित युवक नौकरी पाने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगा रहे होते है। पिछले दो दशकों से अपनाई जा रही आर्थिक नीतियों के फलस्वरूप नौकरियों की संख्या कम हो रही है जबकि हमें रोजगार बढ़ाने की जरूरत है।"[110] श्योराज सिंह बेचैन की कहानी 'क्या करे लड़की' में एक उच्च जाति की 'कीर्ति सक्सेना' निम्न जाति के 'सत्यपाल' से प्रेम विवाह करना चाहती है। परन्तु लड़की के परिवार वाले साफ मना कर देते है। 'कीर्ति' आत्महत्या करने के लिए घर से निकल जाती है। कहानी में 'रविराज' सैर करने जाता है वह 'कीर्ति' को देखकर उसे अपने घर ले आता है और सारी बातें पूछता है। 'रविराज' की पत्नी 'श्यामा' 'कीर्ति' को समझाती है कि आज जमाना बदल रहा है प्रेम विवाह करने में जाति बंधन मान्य नहीं रखते है। 'कीर्ति' श्यामा को बताती है कि 'सत्यपाल' एस०सी० है, बेरोजगार है, वह जातिगत अत्याचार से

परिचित है। वह मुझसे विवाह नहीं करना चाहता है। वह आगे 'श्यामा' को बताती है-"नहीं, आंटी वह नहीं करेगा। देश में हो रहे आर्थिक बदलाव से वह आंतकित रहता है। अब एस०सी०, ओ०बी०सी० का जमाना आने से पहले जा रहा है। जैसे जन्म लेते ही मारा जा रहा हो निर्दोष शिशु। एक ही तो क्रेज था कि इन्हें थोड़ा-बहुत राजकीय नौकरियों में आरक्षण मिल जाता था और वे सरकारी दामाद बन जाते थे। अब लाखों बेरोजगार हुए घर बैठे हैं। भविष्य की संभावनाएँ भी नहीं है। प्राइवेटाइजेशन हो गया है। उदारीकरण हो रहा है। वैश्वीकरण की धूम मची है। फिर भी मैं उसे ही चाहती हूँ क्योंकि मैं उसे पूर्व जन्म का ज्ञानी समझती हूँ।"[111]

भगवान गव्हाडे की कहानी 'एकलव्य का अंगूठा' में 'रामप्रसाद यादव' के साथ रोजगार को लेकर अन्याय होता है। 'रामप्रसाद यादव' उच्च शिक्षा प्राप्त कर डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त कर यूनिवर्सिटी में राजनीतिशास्त्र विभाग में नियुक्ति पाने के लिए आवेदन भरता है परन्तु आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण रोजगार प्राप्त करने में कठिनाई आती है क्योंकि 'रामप्रसाद यादव' रोजगार प्राप्त करने के लिए डोनेशन देने में असमर्थ है। 'रामप्रसाद यादव' की माँ 'सावित्री' उससे पूछती है कि वह आज कल परेशान क्यों रहता है तो वह बताता है "क्या कहूं माँ, नौकरी के लिए संस्थाचालक पांच लाख रुपये डोनेशन मांगते हैं इतने पैसे हैं हमारे पास? इससे तो अच्छा होता कि पढाई छोड़कर मैं भी आप लोगों के साथ मोल-मजदूरी करता।"[112] रामप्रसाद यादव के पिता 'गोविन्द यादव' ऑपरेटिव बैंक से कर्जा लेकर और अपनी जमीन बचे का रुपयों का इंतजाम करते है। 'रामप्रसाद' अपने पिता को लेकर संस्थाध्यक्ष से मिलने जाते हैं। संस्थाध्यक्ष उनसे कहता है-"सात लाख रुपये डोनेशन संस्था के अकांउट में जमा कर दो। आपका काम हो जाएगा।"

'गोविन्द प्रसाद' कहता है-"रकम बहुत ज्यादा है मायबाप, थोड़ी सी सहुलियत दे दीजिए। हम बहुत गरीब है।"

अध्यक्ष महोदय बताते है-"सात लाख बहुत मामूली रकम है, दूसरी संस्थाओं में तो बारह-पंद्रह लाख से एक पैसा भी कम नहीं चलता। हमारी संस्था में आरक्षण भरना था जो तुम्हें मौका मिल रहा है।"[113]

दलित वर्ग को सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक भ्रष्टाचार का सामना करना पड़ता है सरकार द्वारा दी गई सुविधाओं को जाति के कारण आसानी से उपलब्ध नहीं करवाया जाता है। 'रामप्रसाद यादव' का आवेदन भरने के बाद यूनिवर्सिटी के राजनीतिशास्त्र विभाग में 'सुयोधन चौधरी' पांच साल से प्रवक्ता पद पर कार्यरत है परन्तु जब वह स्थायी होने जा रहा होता है तो 'रामप्रसाद यादव' अपनी पूरी योग्यता के साथ अर्जी भर चुका होता है। रोजगार के स्तर पर उच्च वर्ग द्वारा 'रामप्रसाद यादव' के साथ अन्याय होता है। 'सुयोधन चौधरी' यह नौकरी पाने के लिए 'रामप्रसाद यादव' के घर उससे मिलने जाता है और 'रामप्रसाद यादव' के पिता के सामने रोने व गिड़गड़ाने का अभिनय करता है और कहता है–"देखिए रामप्रसाद के बाबूजी मेरा नाम सुयोधन चौधरी है और मैं एम॰एस॰पी॰ मंडल अहमदनगर के शाहू कॉलेज में पिछले पांच साल से राजनीतिशास्त्र पढ़ाता हूँ। इस साल परमानेंट होने ही जा रहा था कि आपके बेटे का अप्लीकेशन आ गया, इस वजह से मेरा काम बनते-बनते बिगड़ गया।"[114]

'रामप्रसाद' के पिता 'सुयोधन चौधरी' को कहता है- "तो मैं क्या कर सकता हूँ साहब। मैंने तो अपने बेटे को मर-मर के खून पसीना एक करके इतना पढ़ाया है अब वही तो हमारा सपना और सहारा है, यह नौकरी हमारे लिए बहुत जरूरी है।"[115] सदियों से शोषण व अन्याय को झेलते आ रहे दलित आज भी नई सदी में प्रवेश करने के बावजूद भी उतने ही उत्पीड़ित व अन्याय के शिकार है। उच्च जाति के लोग अपने स्वार्थपूर्ति हेतु दलित वर्ग के प्रति अन्याय करने के लिए बाध्य है। दलित वर्ग उच्च शिक्षा प्राप्त कर सवर्ण वर्ग के लोगों की बराबरी करके आगे आता है परंतु उच्च वर्ग द्वारा दलित वर्ग को दबाना या कुचलना हर प्रकार से संभव होता है। 'सुयोधन चौधरी' 'रामप्रसाद यादव' के पिता को समझाता हुआ ईर्ष्या व व्यंग्य भरे अंदाज में जातिगत मानसिकता रखते हुए कहता है-"नौकरी की जरूरत किसे नहीं होती बाबू जी? लेकिन हम चाहते हैं कि रामप्रसाद इंटरव्यू के लिए न आए तो बेहतर होगा। आप तो आरक्षण वाले हैं, आपको तो कहीं पर भी नौकरी मिल जाएगी। लेकिन हमारा क्या होगा? हमें तो यह भी सुविधा नहीं। कहां है आपके साहबजादे, जरा उनसे भी मिल लेते है।" 'रामप्रसाद यादव' के पिता उसे

बताते है-"बेटा वह तो चार दिन पहले ही पूना चला गया है, कह रहा था वहीं रहकर इंटरव्यू की तैयारी कर लूंगा।"[116] यूनिवर्सिटी में राजनीतिशास्त्र विभाग के प्रो॰ 'ओमप्रकाश वर्मा' 'राम प्रसाद यादव' को विभाग में बुलाकर 'सुयोधन चौधरी' से परिचय करवाते है और कहते है-"दस तारीख को इंटरव्यू के लिए मत जाओ, तुम्हारे लिए किसी दूसरी जगह कोशिश करेंगे, डोंट वरी माय सन।" "बेटा हिंदी के किसी कवि ने कहा है-राम तुम्हारा चरित्र ही स्वयं काव्य है। कोई कवि बन जाए सहज संभाव्य है।' मेरी बात समझ रहे हो न। तुम सुयोधन के लिए यह जगह छोड़ दो।"[117] रामप्रसाद यादव अपने अध्यापक 'प्रो॰ वर्मा' की बात मना नहीं कर सकता है वह अपने गुरु प्रो॰ वर्मा के कथन पर विश्वास करते हुए उन्हें विश्वास दिलाता है। 'रामप्रसाद' व 'सुयोधन चौधरी' दोनों फिर रात के आठ बजे प्रो॰ वर्मा के घर जाते है। इंटरव्यू में अभी तीन दिन बाकी होते है। प्रो॰ वर्मा 'राम प्रसाद' को समझाते हुए कहते है- "रामप्रसाद तुम्हें मैं निराश नहीं करना चाहता। लेकिन बेटा तुम तो जानते ही हो सुयोधन वहां पांच साल से काम करता है। अगर तुम वहां जाओगे तो यह बेचारा रास्ते पर आ जाएगा। कम से कम उसके बीवी-बच्चे के खातिर उसे यह जगह बख्श दो। तुम्हारे लिए मैं खुद प्रयत्न करूंगा। तुम चिंता मत करो। सब कुछ ठीक हो जाएगा। डोंट वरी।"[118]

समाज में आज भी दलित वर्ग के प्रति मानसिकता जातिगत आधार पर बनी हुई है दलित का अर्थ दबा हुआ, कुचला हुआ व मसला हुआ बताया जाता है आज भी उच्च जाति की मानसिकता निम्न जाति के कहे जाने वाले लोगों के प्रति उन्हें दबा कर रखने की है ताकि वह अपना विकास न कर सके। उन्हें जाति के आधार पर शोषित रखने की परंपरा को आगे बढ़ा सकें। सूरजपाल चौहान की कहानी 'तीन चित्र' में 'बद्रीनारायण' जो सवर्ण जाति से पंडित है वह गांव के 'चतर सिंह' जो निम्न जाति से सम्बन्धित है। 'चतर सिंह' के चाय की दुकान जो खूब चल रही है। बद्रीनारायण उसे देखकर असन्तुष्ट हो जाता है कि चाय की दुकान का रोजगार 'चतर सिंह' का खूब फल फूल रहा है उसकी अच्छी कमाई हो रही है। 'बद्रीनारायण' भी चाय की दुकान करता है परन्तु 'चतर सिंह' के मुकाबले उसकी दुकान नहीं चलती है वह मन ही मन ईर्ष्या करता है और हर रोज नए-नए

हथकण्डे अपनाता है कि 'चतर सिंह' का रोजगार ठप्प हो जाएं। 'बद्रीनारायण' अपने घर के सदस्यों से चर्चा करता है तो उसकी पत्नी उसको सलाह देती है कि 'चतर सिंह' को जाति के आधार पर अपमानित किया जाए और वह स्वयं अपनी चाय के रेट बढ़ा दे। 'बद्रीनारायण' प्रसन्न होते हुए अपनी पत्नी से कहता है-"अरे वाह, क्या तरकीब सुझायी है, आखिर हो तो पण्डिताइन।"

'बद्रीनारायण' की दुकान पर जब ग्राहक चाय पीने आता है तो वह ग्राहक से कहता है-"हिंया तो बड़े रेट पे ही मिलेई, एक रुपय्या में पीनी हो तो वो सामने....।"

ग्राहक पूछता है-"ऐसा काहे?"

"लूट मची है का?"

"देखो मेरौ मुँह न खुलवाओ, दो रुपय्ये में पीनी है तो पियो वरना चलते बनो।"

"वा (उस) दुकान पे भीड़ है, देखो कैसी मारा-मारी मँची है।"

"फिर मैं का करूँ?"

"अरे यह भी काऊ (किसी) मतलब की बात भई (हुई)?"

"क्या बात मतलब की क्यों ना है, यह एक पण्डित की दुकान है और सामने वाली चूहड़े की।"

"पियो, खूब पियो चूहड़े की चाय, करो अपनौ-अपनौ धरम-भिष्ट।"[119]

समाज में जाति के आधार पर दलितों के प्रति सवर्ण जाति का आंतक हमेशा से विराजमान है। उच्च जाति के लोग सदा ही निम्न वर्ग का शोषण करते आए है उन्हें गुलाम बनाकर मुक्त करने में विश्वास नहीं रखते है चाहे अंग्रेजों से गुलामी की जंजीरे भारत से हट गई हो, संविधान कानून-व्यवस्था व सामाजिक न्याय के अन्तर्गत सभी मनुष्य समान हो। परन्तु उच्च जाति दलितों के प्रति भेदभाव व अन्याय की भावना को बनाए रखना चाहती है रत्न कुमार सांभरिया की कहानी 'बदन दबना' में जातिभेद व गरीबी के कारण होने वाले शोषण को देखा जा सकता है दलित छात्र 'पूछा राम' पढ़ाई करने के साथ-साथ 'हल्का राम' के यहां नौकरी करने को अभिशप्त है। 'हल्का राम' उससे जानवरों की तरह व्यवहार करता है और

खूब शोषण-उत्पीड़न करता है और 'पूछा राम' को दस हजार रुपये के बदले पांच साल के लिए अपनी हवेली में गुलाम बनाकर रखता है और 'पूछाराम' के पिता 'रेमाराम' से कहता है- "पांच साल पहले सबरा के बेटे अमरिया को पाँच हजार रुपये में पांच साल के लिए रखा था। वक्त बदल गया है। महंगाई बढ़ी है।"[120] हल्का सिंह, 'पूछा राम' को फटकारता हुआ आगे कहता है-"अरे पूछिया, गधे की पूंछ सा सीधा का सीधा रहेगा या कुछ करेगा-धरेगा भी।"

"हूँ"

"हुँ ! "हुँ। अरे मूढ़ी पर बैठ, पाँव दबा मेरे। बदन-दबना रखा है न, तुझे।"[121] 'पूछा राम' 'हल्का सिंह' से दो घण्टे की छुट्टी मांगता है कि उसकी बहन 'जमना' का विवाह है वह अपने बहन के फेरे व विदाई करवाने के बाद तुरन्त लौट आएगा परन्तु 'हल्का सिंह' उसकी एक नहीं सुनता है। 'पूछा राम' रोता-गिड़गिड़ाता रहता है परन्तु 'हल्का सिंह' के मन में उसके लिए थोड़ी सी भी संवेदना नहीं होती। सवर्ण 'हल्का राम' 'पूछाराम' द्वारा किए जाने वाले संघर्ष को दबाने की चेष्टा करता है और उसे अपमानित व पीड़ित करता है। 'पूछाराम' अपना माथा 'हल्का सिंह' के पैरों में रख कर कहता है-"सिर्फ दो घण्टे दे दो, बाबू साब।"

"क्यों?"

"मेरी बहन की शादी है, बाबू जी।"

"बाबू साहब, मेरी बहन की शादी है, दो घण्टे की छुट्टी दे दो।"

'हल्का सिंह' भड़क जाता है और कहता है-"बेवकूफ बोले ही जा रहा है।"[122] 'हल्का सिंह' 'पूछाराम' को गुस्से से कहता है-"बहन का ब्याह है, बहन का ब्याह। तेरी बहन का ब्याह हुआ कि राजकुमारी की डोली हो गई। अरे कम अकल, उस दिन अमरिया की बहन का भी ब्याह था वह तो नहीं गया। आदमी अपनी गरज हवेली आता है और हमारी मर्जी जाता है।"

'पूछा राम' रोता हुआ 'हल्का राम' से आशा रखता हुआ विनती करते हुए कहता है-"बहन के फेरों पर तो भाई को होना ही चाहिए न, बाबू जी। लोग सात

समन्दर पार से चले आते है। कैदी को भी पैरोल पर छुट्टी मिल जाती है। मैं तो यही गांव में ही हूँ बाबू जी।"

'पूछा राम' को 'हल्का सिंह' डांटते हुए कहता है-"अकल की दाढ आई नहीं, वकील बनने चला है चुप रह। नहीं तो गज की जात सीधा कर दूंगा। बदजात कहीं का।"[123] 'पूछाराम' अपनी विवशता को व्यक्त करता है परन्तु उसे अन्याय व शोषण के सिवाय उसे कुछ कुछ नहीं मिलता वह 'हल्का सिंह' के आगे अंतिम बार प्रयास करता हुआ कहता है-"बाबू साहब, मेरी बहन की बारात तोरन तक पहुँच गई होगी। जमना बहन की कसम, फेरे पड़ते ही लौट आऊंगा, मैं।" गरीबी के कारण विवश 'पूछाराम' अपना मन मार कर रह जाता है परन्तु 'हल्का सिंह' मदद नहीं करता है और भड़क कर कहता है-"अमरिया होता, कूट-कूट सारी चमड़ी नीली कर देता, नीच की। टाबर है। नया चाकर है। लिहाज रखूँ तेरी।"[124]

भारत को आजाद हुए कितने वर्ष बीत चुके हैं। भारत में संविधान द्वारा कानून बनाये गये परन्तु फिर भी मनुष्य द्वारा मनुष्य को गुलाम बनाया जा रहा है। आजाद देश में उससे गुलामों-सा व्यवहार किया जा रहा है। "सो भारतीय समाज में दलित थे नहीं, वे एक ऐतिहासिक-सामाजिक प्रक्रिया में भारत के मूल निवासियों से ही अप्राकृतिक रूप से क्रूर सत्ता व दमन का प्रयोग कर 'दलित' बनाए गए हैं। अजीब बात है कि विश्व के अन्य देशों से दास प्रथा सैकड़ों वर्ष पूर्व समाप्त हो गई, लेकिन हमारे देश में हजारों वर्षों से जबरदस्ती थोपी जाति व्यवस्था व एक बहुत बड़े मानव समूह का जातिगत आधार पर उत्पीड़न व दमन आज तक जारी है।"[125] ब्रह्मा नंद की कहानी 'संकल्प' में 'मोहनलाल' सवर्ण जाति के लोगों द्वारा निम्न जाति के लोगों पर अत्याचार व अन्याय को देखते हुए अपने मित्र 'विजय' को उच्चजाति की प्रधानता के बारे में बताता है कि कब तक हम इनके गुलाम बने रहेंगे? 'मोहन' की बातें सुनकर 'विजय' समझाता हुआ कहता है-"मोहन क्यों मुर्दों में जान फूंकना चाहते हो, ये अपने को पूरी तरह गुलाम मान चुके हैं। अब इनके मन पर जमींदारों का कब्जा हो चुका है चाहे वे उन्हें मारे या काटे उन्हें नहीं जागना है। गलती उनकी भी नहीं है। बामन ने कभी भी हमें एक जुट रहने ही नहीं दिया, वे हमेशा हमें तोड़ते रहे है और हम हमेशा टूटते। इसे बदलना इतना

आसान नहीं है, सदियों की मानसिक गुलामी तुम एक पल में नहीं तोड़ सकते हो।"[126]

'गिरोह' कहानी में भी रोजगार के स्तर पर दलित स्वतंत्र नहीं है वह तो शोषण उत्पीड़न मात्र नमूना बनकर रह गया है। सवर्ण वर्ग दलित वर्ग को गुलाम प्रथा के बंधन से मुक्त करना नहीं चाहता है-"यार कल मेरे गांव के चमट्टे को हमारी बिरादरी ने खूब पीटा। कारण वे हरामजादे मजदूरी करने से मना कर रहे थे। इन सालो की इतनी हिम्मत? हमारी रोटियों पर पले हमसे सीनाजोरी करते हैं, इनकी औकात ही क्या है? मेरे पिता जी के कहने पर हमारे आदमियों ने तो उन्हें अधमरा कर दिया। खूबा चमार तो भंगियों के छप्परों में घुस गया। इसलिए उसे छोड़ दिया। नहीं तो उसकी तो कहानी ही खत्म हो जाती।"[127] समाज में जाति के आधार पर दलित वर्ग के प्रति अन्याय, व शोषण बढ़ता जा रहा है। जाति-व्यवस्था के कारण दलितों की स्थिति सदैव की तरह तिरस्कृत व अपमानित ही रही है।

5.1.5 मानाधिकार के स्तर पर :

वर्तमान में भी ऐतिहासिक कारणों के अनुसार सामाजिक व्यवस्था में उच्च वर्गों का वर्चस्व स्थापित है। समाज में दलित वर्ग निम्न जाति के कारण शोषण, दमन और उत्पीड़न का शिकार बनता है। सदियों से पीड़ित एवं न्याय से वंचित निम्न वर्ग को कभी मान-सम्मान का अधिकार प्राप्त नहीं हुआ है। समाज में जाति व्यवस्था के कारण निम्न वर्ग को अपमान करना स्थायी माना गया है। समाज में उसे समानता का अधिकार प्रदान न करके अपमान सहने का अधिकार प्रदान किया गया है। "उत्पीड़कों और उत्पीड़ितों वाली समाज-व्यवस्था में, जहां आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक आदि सभी स्तरों पर ऊँच-नीच, भेदभाव और अपवर्जन या अधिकार-वंचना के जरिये मनुष्यों के द्वारा मनुष्यों का शोषण किया जाता हो तथा शोषण को जारी रखने के लिए इस व्यवस्था को बनाये रखना जरूरी समझा जाता हो, वहाँ उत्पीड़ितों को मान का अधिकार कैसे मिल सकता है?"[128]

समाज में दलित चाहे आर्थिक स्तर से मजबूत हो या शिक्षा के स्तर से फिर भी जाति के आधार पर मान-सम्मान का अधिकारी नहीं है। उसे उसकी जाति को लेकर शोषित व पीड़ित किया जाता है। सूरजपाल चौहान की कहानी 'सारे जहाँ

से अच्छा' में कैप्टन 'वीरेन्द्र' के साथ जाति के आधार पर भेदभाव किया जाता है। 'वीरेन्द्र' सेना में कैप्टन के पद से रिटायर्ड होकर अपने गांव आता है और सोचता है कि वह गांव की जमीन खरीद कर खेती करेगा। गांव में 'बदनी' ठाकुर का बड़ा बेटा 'रामवीर' 'वीरेन्द्र' को जमीन देने से मना करता हुआ अपने पिता से कहता है-"तुम्हारी बुद्धि भिष्ट ना हो गयी, भंगिया कू अपनी धत्ती बेक (बेच) रहे हो.... ये गाम की रीति नायँ, ठाकुर और नीच कू धत्ती बेक दे... सुनो है एसौ कहीं, काहे नाक कटवाओ।" 'रामवीर' अपने बड़े भाई 'जयवीरा' को जातिगत मानसिकता रखते हुए कहता है-"अरे जयवीरा, ताली दैके हँसेगे गाम के... कहेंगे ठाकुर ने एक भंगी कू अपनी धत्ती बेक दीनी ! ना, कतई ना, जिनके बाप दादा हम ठाकुरों की गुलामी करते आये हों और आज वह हमारे सीना पर हल चलाएँ... . मेरे रहते ऐसौ ना होगौ। जयवीरा व भंगिया के संग रहके तेरो तो दिमाग खराब है गयो है।"[129]

कैप्टन 'वीरेन्द्र' ठाकुर को मुंह मांगी कीमत देकर जमीन खरीदना चाहता है परन्तु जाति के आधार पर उसे अपमान की सिवा कुछ नहीं मिलता। 'जयवीर' अपने छोटे भाई को समझाते हुए कहता है-"अरे मूरख समझतौ क्यों ना, वाकी (उसकी) जेब में जा टैम मोटी रकम है... मुंह मांगों रुपया दे रहो है, तोय ये तो पतो ही है कि पिपरोही गाम को.... और बिरन्दरा सात हजार बीघा के भाव से जमीन खरीदबे कू तैयार है।"[130] ठाकुर 'रामवीर' पर उच्च जाति का भूत सवार होता है कि निम्न जाति को धरती बेचने से उनकी इज्जत चली जाएगी धन व शिक्षा का महत्त्व कोई मान्य नहीं रखता है और वह अपने बापू को कहता है-"देख बापू, बिरन्दर चाहे कितनो भी अधिक रुपया क्यों न दे, मैं वाकू (उसे)धत्ती बेकने के हक में ना हूँ.... हम थोड़े पइसा में ही श्यामा को जमीन बेक देंगे, लेकिन जा भंगिया कू हरगिज ना।"[131] सवर्ण जाति का 'रामवीर' निम्न जाति के प्रति घृणित व नफरत की भावना रखते हुए अपनी उच्च जाति के अहंकार में आकर कैप्टन 'वीरेन्द्र' को अपमानित करता हुआ कहता है-"बिरेन्दरा, जे गाम है, मिल्ट्री नाय.... हमें पतौ है कि कप्तान के पद से आयौ है, गाम के कुछ रीति रिवाज होते हैं, बहनचो, तूने तो सब ताक पै धर दीने।" 'रामवीर' की बातें सुनकर वीरेन्द्र के मान-सम्मान को ठेस

पहुंचती है और वह रामवीर से कहता है-"रामवीर, जमीन नहीं बेचनी तो मत बेच, लेकिन बोल तो कायदे से।"

'रामवीर' गुस्से आकर कहता है-" लो सुन लो ठाकुर, और बैठा लो अपने साथ चारपाई पर इसे। पहले दिन ही फटकार लगा देते तो आज इतनी हिम्मत न पड़ती.... अब यह कायदा भी सिखाएगा।"[132] समाज में जाति के आधार पर ही मान-सम्मान मिलता है 'वीरेन्द्र' निम्न जाति का होने पर कप्तान पद से सेवानिवृत होने पर भी वह जाति के कारण निम्न व अपमान का अधिकारी है। समाज में सवर्ण जाति के लिए निम्न जाति का उच्चपद, शिक्षा स्तर, धन स्तर कोई मान्य नहीं रखता वह केवल जाति को देखकर व्यक्ति को सम्मान का अधिकारी मानते है। 'रामवीर' अपनी जातिगत मानसिकता रखते हुए 'वीरेन्द्र' को कहता है- "देख बिरेन्द्रर, जब से तू गाम में आयौ है, गाम की हवा दिन पै दिन बदलती जा रही है.... लोग इज्जत करना ही भूलते जा रहे हैं, तेरी देखा-देखी अब दूसरे भी ऊँची गर्दन करके चलने लगे हैं, तू तो मेरे यार, बैठक में ऐसो अररावत चलौ आवै जैसे मिल्ट्री की मैस हो.... यह ठाकुरों की बैठक है, अन्दर आने से पहले बाहर हाँक लगाया कर।"[133] कैप्टन वीरेन्द्र अपने साथ हुए अपमान को सहन न करते हुए घृणित मन से सोचता है- "ये सब बातें बहकाने के लिए हैं.... सब झूठ और पाखण्ड हैं, भारत के गांवों में न आत्मा है और न स्वर्ग.... यहाँ नरक ही नरक है।"[134]

सूरजपाल चौहान की अन्य कहानी 'कारज' में भी जब 'मगनलाल' बैंक में नौकरी करता है। 'मगन लाल' की पत्नी 'कमला' गांव में ही घर बनाने के लिए कहती है। परन्तु 'मगनलाल' गांव में फैली जातिगत मानसिकता से परिचित है कि गांव में रहकर निम्न जाति को कभी भी मान सम्मान नहीं प्राप्त हुआ उन्हें केवल अछूतों की दृष्टि से ही देखा जाता है वह अपनी पत्नी 'कमली' को समझाता हुआ कहता है- "कमली, हमारे पास विकल्प है, मैं ऑफिस से कर्जा लेकर शहर में मकान बनवा सकता हूँ.... हमारी कोई मजबूरी नहीं कि गांव में रहें, आजादी के पचास वर्षों से अधिक बीत जाने के बाद कुप्रथाओं और ऊँच-नीच के जंग खाये स्तम्भों के सहारे खड़ा है मेरा गाँव।" "जल्दी से सन्दूक तैयार कर, अम्मा के

कपड़े भी बाँध ले, इस गाँव में एक पल भी नहीं रहना।"[135] श्योराज सिंह बेचैन की कहानी 'रावण' में भी दलितों के मान-सम्मान को ठेस पहुंचती है जातिगत ऊँच-नीच का भेदभाव किया जाता है। कहानी में 'मूलसिंह' गांव में हो रही रामलीला में रावण का अभिनय करता है। 'मूल सिंह' अपनी पत्नी 'मीना' के साथ दिल्ली में रहता है। पर जब गांव आता है तो रामलीला में अभिनय करना चाहता है तो उसकी पत्नी 'मीना' कहती है-"मेरी बात तो कोई सुनतुई नायं है। का जरूरत ही गाँव में लीला खेलन की। गाँव बारे कला देखगे, हुनर की तारीफ करेंगे पर जात की तारीफ कौन करेगो सोचा तक नांय।"[136] अभिनय के दौरान 'मूल सिंह' रावण के रूप में जब दरबार के मंच पर आता है तो लोग उसकी जय-जयकार नहीं करना चाहते है क्योंकि वह जाति से निम्न है और सवर्ण जाति के लोग चिल्ला उठते है-"नहीं चमार को सिर नहीं झुकाया जा सकता।" अभिनय कर रहे राम ने सुग्रीव से कहा-"अरे ये तो नाटक है कौन से हम असल जिन्दगी में काऊ चमार भंगी को दुआ सलाम करने जा रहे है।"[137]

गांव में 'मूल सिंह' के साथ जाति के आधार पर नफरत व अन्याय करते है और उस पर अत्याचार करते है और कहते है-"होइगो बड़ों कलाकार हम ससुरे चमरा कू जय शंकर की करवाते, अरे हमारे ही राम, हमारे ही हनुमान, और हमीं मेघनाद, कुम्भकरण रामलीना-हमारी चमार भगिंनु को काम?[138] 'मूल सिंह' गांव में अपने प्रति जातिगत अत्याचार, अन्याय व अपमान को सहन करते हुए अपने पिता से कहता है- "बापा तुमाउ चलो यहाँ नफरत छूतछात के अलावा कौन सी हमारी जागीर बची है गाम में हमारी हाड़-मांस धुन के यहाँ पेट भरत है। सो जहाँ रहेंगे वहीं भर लेंगे।" 'मूल सिंह' आगे कहता है- "बापू तुम्हारी तो जिद्द है चाहे उमरि भर कुता-सुअरनु की तरह हम रहें, पर गांव में पैदा भए हैं तो मरोगेहू गांव में ही। मरो मेरी बला से मैंउ एकु पैसा नायं भेजंगो और सपने में हूँ गाम की ओर आंख खोल के नांय देखूंगो। आग लगे ससुरे ऐसे गांव में। मैं 25 साल को हो गओ एक दिन हू इज्जत की नायं गुजरो। भाड़ में जाय 'जनम भूमि' मैं नाय लौटूगा गांव में।"[139]

सूरजपाल चौहान की कहानी 'जाति' में 'चेतन सिंह' जो बैंक में जूनियर ब्रांच मैनेजर है और उसी बैंक में 'पी०सी० शर्मा हैड क्लर्क है। हैड क्लर्क 'पी०सी० शर्मा' उच्च जाति का होने के कारण 'चेतन सिंह' से जातिगत भेदभाव रखते हुए अपमानित करता हुआ है-"कैसा जमाना आ गया, अब तो इस ऑफिस के ब्रांच मैनेजर चूहड़े-चमार भी बनने लगे।"[140] सूरजपाल चौहान की कहानी 'दो रंग' में भी जाति के आधार पर किए जाने वाले भेदभाव का स्पष्टीकरण करती है। 'दो रंग' कहानी में दलित ब्रांच मैनेजर 'गंगासरन' द्वारा अपमानित किया जाता है। क्योंकि 'गंगासरन' पद में छोटा होने के बावजूद जाति से उच्च है और ब्रांच मैनेजर पद में बड़े है परंतु जाति से निम्न। 'ब्रांच मैनेजर' चपड़ासी गंगासरन द्वारा नौकरी से तबादले की इच्छा जताने का कारण जानने के लिए उससे पूछते है- 'गंगा, क्या बात है, तबीयत तो ठीक है तुम्हारी?" 'गंगासरन' कहता है- "क्यों मेरी तबीयत को क्या हुआ, ठीक हूँ।"

"मुझे आपके साथ काम नहीं करना, मेरा तबादला करवा दो।"

"क्यों?"

"बस कह दिया.... मैं आपके साथ ड्यूटी नहीं करना चाहता।" ब्रांच मैनेजर 'गंगासरन के तबादले के बारे में जानने के लिए स्टेनो 'शीला सक्सेना' से पूछते है-"गंगा हमारे साथ काम नहीं करना चाहता, क्यों?"

स्टेनो 'शीला सक्सेना' कहती है-"सर, मुझसे भी कई बार कह चुका है कि वह यहाँ काम करना नहीं चाहता।"

"पर क्यों?"

"सर, गंगा आपकी जाति का नाम लेकर बड़बड़ाता रहता है कि वह किसी चूहड़े-चमार की चाकरी क्यों करें.... वह तो सरकारी नौकर है और फिर ऊपर से पण्डित।"[141] 'जाति' कहानी में भी हैड क्लर्क 'पी०सी० शर्मा' ब्रांच मैनेजर 'सुनीश डुलगच' को अपमानित करते हुए 'शुडू' कह कर व्यंग्य से बात करता है। ऑफिस में 'पी०सी० शर्मा' अपने सवर्ण जाति के साथियों के साथ निम्न वर्ग को अपमानित करते हुए 'सुनीश डुलगच' को कहता है- "भाइयो, आज तो शुडू साहब तीनों चमचों के साथ खिचड़ी पकाने में लगे है।"

"अबे-खिचड़ी नहीं, मांस बोल मांस, ये जितने भी शुडू होते है मांस बहुत खाते है।"

"अपनी बहन बेटियों के शादी-विवाहों में ये सूअर के मांस की दावत करते है और देखते ही चट कर जाते है।"[142]

समाज में जाति-व्यवस्था की जड़े गहरे रूप से समाई हुई है उच्च जाति के लोग निम्न जाति के लोगों को समाज में समानता व मान सम्मान के पक्ष में बिल्कुल नहीं है मान सम्मान तो बहुत दूर की बात है निम्न जाति के लोगों को मनुष्य के रूप में गुलाम, व पशु ही मानते आये है। समाज में निम्न जाति के लोगों को स्वतंत्र रूप से मान सम्मान के साथ जीने का कोई हक नहीं है निम्न वर्ग के लिए चारों ओर अन्याय ही व्याप्त है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानी 'ब्राह्मास्त्र' में सवर्ण जाति से 'अरविन्द नैथानी' और दलित वर्ग से 'कंवल कुमार' दोनों अच्छे मित्र है। दोनों ही एक साथ पढ़ लिख नौकरी में कार्यरत है। 'अरविन्द नैथानी' अपने विवाह का निमंत्रण देने 'कंवल कुमार' के घर जाता है और उसे व उसके परिवार वाले को जरूर शादी में आने के लिए कहता है। 'कंवल कुमार' अपने मित्र 'अरविन्द' की शादी में जाता है तो वहां 'पंडित माधव प्रसाद भट्ट' द्वारा जाति को लेकर अपमानित किया जाता है पूछता है। "तू कहाँ जा रहा है?"

'कंवल कुमार' पंडित से कहता है-"बारात में जा रहा हूँ"

"बारात में?"

"जी हाँ"

"तू कैसे जा सकता है बारात में?"

"क्यों... मै क्यों नहीं जा सकता हूँ?"

"तुझे बारात में चलने के लिए किसने बुलाया?"

"अरविन्द ने"

"तू अपनी औकात में रह... यह बारात टिहरी जा रही है.... और टिहरी देहरादून नहीं है। यह ध्यान रखना.... जा, वापस अपने घर.... इसी में खैर है", 'पंडित माधव प्रसाद' 'कंवल कुमार' को आगे गुस्से से फटकारता हुआ कहता

है-"यह किसी डोम-चमार की बारात नहीं है। यह नैथानियों की बारात है जो टिहरी के ऊँचे ब्राह्मणों में जा रही है। इसमें एक डोम के लिए कोई जगह नहीं है.... जा.... अपने घर वापस।"[143] जातिगत आधार पर 'कंवल कुमार' जो शिक्षित व बैंक की नौकरी पर कार्यरत है। परन्तु निम्न जाति के कारण उसे अपमान झेलना पड़ता है और अपने मित्र के विवाह के दौरान अन्याय का सामना करना पड़ता है। 'अरविन्द' के पिता 'विष्णुदत्त नैथानी' पंडित जी को कहते है-पंडित जी, यह क्या कह रहे है आप?"

'पंडित माघव प्रसाद भट्ट' कहता है-"मैं ठीक कह रहा हूँ नैथानीजी.... वो जो बस के पास खड़ा है हरे रंग का एयरबैग कन्धे पर लटकाए... उसे मैं अच्छी तरह जानता हूँ। इसका बाप छावनी में जमादार था। भंगी का काम करता था। आपने भंगियों के साथ कब से रिश्ते बनाने शुरू कर दिये?"

वह आगे कहता है-"नैथानी जी, आप लोग तो भ्रष्ट हो गए हैं...पुरूखों की रीत भूलकर इन डोम-चमारों से दोस्ती करने लगे हैं... मैं कहे देता हूँ, वह बारात में नहीं जाएगा,"[144] विष्णुदत्त अपने बेटे 'अरविन्द' के खास दोस्त 'कंवल कुमार' को लेकर पंडित जी को समझाने की कोशिश करता हुआ कहता है-"पंडित जी, वहाँ किसी को कैसे पता चलेगा... वहां पढ़ा-लिखा, साफ-सुथरा लड़का है।"

पंडित विरोध करता हुआ कहता है-"नैथानी जी... मैं आपको साफ-साफ कहे देता हूँ वहाँ भले ही कोई न पहचाने, यहाँ तो मैं पहचानता हूँ.... मैं उसे अपने साथ ले जाने के पक्ष में नहीं हूँ...."[145]

सवर्ण जाति का पंडित समाज में अपनी प्रधानता को बनाये रखने के लिए निम्न वर्ग के 'कंवल कुमार' को बुरी तरह अपमानित करता है ताकि स्वयं के मान-सम्मान को ठेस ना पहुँचे 'पंडित माधव प्रसाद भट्ट' विवाह के दौरान 'अरविन्द नैथानी' के पिता को अंतिम फैसला सुनाता हुआ कहता है... "आपका दिमाग खराब हो गया है.... मैं आपसे ज्यादा बहस नहीं करना चाहता... आपको लगता है उसे ले जाना उचित और जरूरी है तो ले जाइए। लेकिन इस स्थिति में मैं बारात में नहीं जाऊँगा... मुझे क्षमा कीजिए.... मैं यही से लौट जाता हूँ.... वह डोम पढ़ा-लिखा है उसी से शादी के संस्कार भी करा लेना..."[146] 'विष्णुदत्त नैथानी' पंडित व अपने

परिवार के मान सम्मान के लिए पंडित जी को निराश न करके कहता है-"पंडित जी, आप बस में बैठिए... मैं देखता हूँ क्या हो सकता है,"[147] 'अरविन्द' के पिता 'कंवल' के बारे में उसे बताते हुए कहते है-"पंडित जी नहीं चाहते हैं कि हम कंवल को बारात में लेकर जाएँ...."

"लेकिन क्यों पापा?"

"पंडित का कहना है बारात में कोई डोम-चमार नहीं जाएगा।"

"लेकिन पापा, कंवल मेरा सबसे अच्छा दोस्त है... हमारे बीच जात-पात कभी नहीं आई... मैं उसे इस तरह घर बुलाकर बेइज्जत नहीं कर सकता..." "अब तुम ही बताओ, पंडित जी जिद पर अड़े हैं... कह रहे हैं वह जाएगा तो मैं नहीं जाऊँगा, बेटा अगर हमने पंडित की बात नहीं रखी तो जात-बिरादरी हम पर थूकेगी।" 'अरविन्द' गुस्से में आकर अपने पिता को कहता है-"ठीक है, आप जात-बिरादरी को खुश करने के लिए कंवल को धक्के देकर भगा दीजिए। कहिए कि तुम इसलिए बारात में जाने के सुपात्र नहीं हो क्योंकि तुम भंगी हो..." वह आगे कहता है-"तो बताइए मैं क्या करूँ... शादी मेरी है... पहले मैं अपने दोस्तों को घर बुलाऊँ और फिर समाज के भय से उन्हें अपमानित करके घर से भगा दूँ... यही चाहते है आप।"[148] समाज में जाति का जहर मनुष्य की नसों में खून बन दौड़ रहा है जिससे वह संपूर्णता जाति में स्थाई रूप से जम चुका है। 'अरविन्द' ने अपने मित्र 'कंवल कुमार' को बुलाकर दुखी मन से कहा-"कंवल! मुझे माफ कर देना... यहाँ कुछ नहीं हो सकता है... सड़ चुका है सब कुछ..."[149]

डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर दलित वर्ग के प्रति अन्याय व उनके अपमान का कारण समाज के बुद्धिजीवी वर्ग को मानते है जो हिंदू धर्म में सवर्ण जाति से सम्मानित है। बाबा साहब के मत से, "किसी भी बुराई को समाप्त करने में समाज के बुद्धिजीवी वर्गों की भूमिका सर्वश्रेष्ठ रहती है। प्रत्येक समाज में बुद्धिजीवी वर्ग सर्वाधिक प्रभावशाली वर्ग रहा है, भले ही वह शासक वर्ग न रहा हो, बुद्धिजीवी वर्ग वह है जो नेतृत्व प्रदान करता है और किसी भी समाज में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन लाने में इनकी अहम भूमिका होती है। परन्तु सच्चाई यह है कि भारत में ब्राह्मण लोग ही हिन्दुओं का बुद्धिजीवी वर्ग है। यह केवल

बुद्धिजीवी वर्ग ही नहीं बल्कि यह वह वर्ग है जिसका शेष हिंदू लोग बहुत आदर करते है। इसलिए ब्राह्मणों से जाति-उन्मूलन की आशा कैसे की जा सकती है।"[150] सुशीला टाकभौरे की कहानी 'बदला' में सवर्ण जाति के लड़के 'कल्लू' को जाति के आधार पर अपमानित करते है। 'कल्लू' की नानी स्कूल में सफाई का कार्य करती है। 'कल्लू' सवर्ण जाति के लड़कों द्वारा पीड़ित व अपमानित होने पर विरोध करता है और उन्हें पीट देता है समाज में निम्न वर्ग के प्रति सवर्ण जाति का आंतक फैला हुआ है नानी 'कल्लू' को समझाती है-"बेटा ऐसे दुष्ट लोगों के सामने कभी आड़े नहीं आना। वे कभी सामने से आते दिखें तो बाजू से दूर निकल जाना या पलट जाना, उनके सामने नहीं आना। न जाने वे कब क्या कर बैठे?"[151] परन्तु 'कल्लू' अपने ऊपर सवर्ण जाति के लड़कों द्वारा किया गया अत्याचार का विरोध करता है तो सवर्ण जाति के 'राजन' का भाई, गुड्डू के काका भड़क जाते है और 'कल्लू' के घर जा उन्हें परिवार सहित अपमानित करते हुए कहते है-"छौआ डोकरी, अपने नाती को बाहर निकाल। हम अभी उसका भुर्ता बना देंगे...। हमारे लड़कों पर हाथ उठाने की उसने हिम्मत कैसे की?... क्या तुम अपनी जात और औकात भूल गये...? वे आगे कहते है-"तेरा नाती हमरे मोड़ा को मारेगा और हम चुप रहेंगे, ऐसा कैसा हो सकता है। ऐसा न आज तक हुआ है और न होयगा। तू उसे बाहर निकाल....।"[152]

'कल्लू' की नानी सवर्ण जाति के लोगों को समझाती हुई न्याय की बात करती है परंतु जाति-व्यवस्था के कारण उच्च वर्ग अपने मान-सम्मान के लिए निम्न जाति के प्रति अन्याय को बढ़ावा देते है। "बेटा, वो का जाने ऊँच-नीच की बातें। स्कूल पढ़ने वाला बच्चा वो तो सबके साथ बराबरी से बैठ के पढ़े है। स्कूल में मास्टर भी जई सिखायें है कि सब बराबर है। अपने देश के नेता भी जई कहे हैं। साधू सन्त, महात्मा भी जई कहे है कि सब बराबर है.... कल्लू स्कूल में जोई पढ़े है। बेटा... वो का जाने, समाज की रीत अलग है। बासे गलती हो गई भैया जी। हम बाको समझायेंगे। आगे ऐसा कभी नहीं होयेगो। अभी माफ कर दो...मैं तुमरे हाथ जोडूं...तुमरे पावं पडूं..."[153] दलित वर्ग के प्रति सवर्णों के मन में तनिक भी संवेदना नहीं है वह केवल अपने उच्च सम्मान के साथ जीना चाहते है। 'छौआ माँ

की विनती का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है वे गुस्से से अपमानित करते हुए आगे कहते है–"भंगी की औलाद... अछूत... शूद्र... भिखारी. भिकमंगे... हमारी दया पर जीने वाले.... हमारे टुकड़ों पर पलने वाले... आजकल इनको बहुत घमण्ड आ गया है... बहुत गर्रा गये है... सण्डे–मुसण्डे हो गये है.... इनको तो गांव में घुसने नहीं देना चाहिए.... इनके लिए पहले वाले नियम ही ठीक थे... अंग्रेजों ने हमारे धर्म का सत्यानाश कर दिया है.... अछूतों को हमारे सिर पर बैठा दिया है। हमारी सरकार भी इनको बहुत बढ़ावा देती है। इनके हौसले बहुत बढ़ गये है... इनको ठीक करना ही पड़ेगा... एक–एक को मार डालेंगें इनके घरों में आग लगा देंगे.... "[154] 'कल्लू' की लड़ाई स्कूल में साथ पढ़ने वाले सहपाठियों से जाति के आधार पर होती है निम्न जाति के कारण ही उन्हें नीचा दिखाया जाता है और 'कल्लू' द्वारा थोड़ा सा विरोध करने पर लड़ाई जातिगत अत्याचार पर आ जाती है। 'छौआ मां' सवर्ण जाति के लोगों को समझाती है– "बेटा हो, तुम भी मेरे बेटा हो... तुम भी मेरे नाती हो, वो भी मेरी नाती है, अब झगड़ा खत्म करो... जातिगत मानसिकता के तहत मनुष्य ने नैतिकता व संस्कारों को भी भ्रष्ट कर दिया है। 'छौआ माँ जो गांव की बुजर्ग औरत है उसे अपमानित करता हुआ कहता है– "बूढ़ी डोकरी, तू सठिया गई है? तेरा दिमाग तो ठीक है?... तू भंगन डोकरी, हम तेरे नाती–पोते कैसे हो सकते है...?"[155]

सवर्ण जाति के कहे जाने वाले लोगों से ऐसी अपमान की बातें सुनकर छौआ मां को बहुत दुख होता है कि केवल समाज में जाति ही मनुष्य की सब कुछ है इसके बाहर कुछ भी नहीं वह स्वयं के अपमान को सहन करते हुए कहती है–"हओ बेटा, मै। बूढ़ी डोकरी... तुम सबकी सेवा करते बूढ़ी हो गई.... तुम सबको गूं मूत कियो... तुम सबकी मां को दाईपनो मैंने कियो, सबसे पहले तुमको मैंने ही देखो, मैंने ही तुम्हें आसीस दी। बेटा, मै तो तुमको अपनी सन्तान जैसे मानूं हूँ। सभी को मां जैसा प्रेम करूं हूँ। माँ जैसी आशीश देऊ हूं... तुम तो बड़े नाराज हो गये बेटा...?" [156] सवर्ण जाति में 'गुड्डू' की काकी अपनी जाति की उच्चता का ध्यान रखते हुए 'छौआ मां' को फटकारती हुई कहती है– "डोकरी, अपनी बेटी और नाती को समझा दे कि हम कौन जात है और तुम कौन जात

हो-इसका अन्तर उनको समझा दे..." 'कल्लू' की मां वर्तमान की दलितों की स्थिति के बारे में बताती है-"काहे का अन्तर है...? "आजकल तो सब बराबर हैं। देश के सब नेता यही कहते है... महात्मा जी भी...। कथा कीर्तन करने वाले भी यही कहते है..."

दलित वर्ग के प्रति अन्याय करते हुए आगे सवर्ण जाति की महिला कहती है- "रहने दे... रहने दे। ज्यादा ज्ञान मत बघारे। इन्हीं बातों ने सब व्यवस्था बिगाड़ दी है। अरे, हमरे छोरा-छोरी तुमरे छोरा-छोरी के साथ पढ़े हैं तो का सब बात में बराबर हो गये....?

'गुड्डू' की माँ अपनी उच्च जाति की प्रधानता को व्यक्त करते हुए चेतावनी देती हुई दलितों के प्रति शोषण व्यवस्था को कायम रखते हुए कहती है-"कहां गयो तेरो जवांई? बा से कह दे, बदली करा के कोई दूसरी रेलवे स्टेशन चलो जाये और अपने बाल-बच्चों को भी ले जाये। ऐसो नहीं चलेगो ये गांव में। यहां रहनो है तो तरीके से रहो। नहीं तो, हमरे घर के आदमी एक-एक को सिर फोड़ देंगे... हाँ... "[157]

संज्ञा उपाध्याय दलित वर्ग के प्रति, जो उत्पीड़ित व अपमानित है मनुष्य के आधार पर उनके मान-सम्मान के बात करते हुए कहते है-"मनुष्य होने के नाते समस्त मनुष्यों का मान और मूल्य समान है, चाहे वे किसी भी वर्ग, वर्ण, लिंग, जाति, धर्म, रंग या नस्ल के हों। अत: इन भेदों के आधार पर मनुष्यों का अपमान करना अनुचित, अनैतिक तथा अन्यायपूर्ण है।"[158] सूरजपाल चौहान की कहानी 'झूठ के दो चेहरे' में सवर्ण जाति के लोग अवर्ण जाति के लोगों के प्रति अपने चेहरे पर झूठ के नकाब ओढ़कर व्यवहार करते है। कहानी में 'बलवान सिंह' अपने माता-पिता द्वारा डाँट खाता है कि वह 'सुक्को' को भंगिन कहता है परन्तु जब 'बलवान सिंह' 'सुक्को' के बेटे 'मुखराम' के बहनोई को जीजा कह पुकारता है और अपने घर ले आता है तो "बलवान सिंह' के माँ-बाप की आँखें गुस्से से लाल हो जाता है उनके चले जाने के बाद 'बलवान सिंह' पर एक ही स्वर में फटकार लगाते हुए कहते है 'बलवान सिंह, तेरी क्या बुद्धि भ्रष्ट हो गयी है? भंगी के जीजा कूँ अपनौ जीजा कह रहौ है, मति मारी गयी है तेरी? गाम के कुछ

कायदे-कानून होवे है अरे नासपीटे, तूने सब ताक पर धर दीने।"[159] उच्च जाति के लोगों ने अपने स्वयं के कायदे-कानून बनाए हुए है क्योंकि वह सदियों पुरानी परंपराओं से बाहर नहीं निकले है। कानून-व्यवस्था, संविधान व सामाजिक न्याय की अवधारणा के बारे में न जान कर अपने ही कायदे-कानून में जीते है। भगवान दास जाति को लेकर अपमानित जीने के लिए विवश दलित वर्ग प्रति अपना कथन प्रस्तुत करते हुए कहते है-'जात-पात को खत्म करने का व्यापक आंदोलन चलाना चाहिए। यह बेहद जरूरी है, क्योंकि भारतीय समाज में दलित ही सबसे ज्यादा है और दलित ही सबसे ज्यादा शोषित, उत्पीड़ित और अपमानित हैं। इसके लिए जाति-व्यवस्था ही जिम्मेदार है।"[160] सुशीला टाकभौरे की कहानी 'संघर्ष' में निम्न जाति के कारण 'शंकर' की नानी सफाई का काम करती है जो जाति-व्यवस्था के अंतर्गत निम्न जाति वालों का ही काम है। 'शंकर' जब अपनी नानी को सफाई का कार्य करने से मना करता है और कहता है- कि यह काम करने से हमारा अपमान होता है उसकी नानी उसे समझाते हुए कहती है-"बेटा, मैंने शुरू से यही काम किया है। सभी जाने है कि मैं कौन हूँ। अब मैं यह काम छोड़ भी देऊ तो क्या मेरी जाति बदल जायेगी? जो जाति है वह तो वही रहेगी। काम करो चाहे न करो. .. कहलायेंगे हम भंगी ही...."[161]

श्यौराज सिंह बेचैन की कहानी 'ओल्डएज होम' में 'मौजी राम' व उसकी पत्नी 'सीता' ओल्डएज होम में रहते है उनका एकलौता बेटा 'तेजगुलाम' अपने माँ-बाप को आश्रम में छोड़ देता है और हर महीने अपने मां-बाप से मिलने आता है और स्वयं अपनी पत्नी के साथ अलग से रहता है। आश्रम में 'तेजगुलाम' के माता-पिता के साथ जाति को लेकर बातें होती है जब जाति का पता चलता है तो उन्हें अपमानित करते है। आश्रम व्यवस्था में लोग प्रतिदिन उनसे जाति के बारे में बातें करते हुए कहते है-"हम जाति में यकीन नहीं करते, सबसे ज्यादा जाति उन्हीं को जाननी है। एस॰ सी॰ तो तुम हो पर उसमें भी आपकी जाति कौन सी है? मन में द्वंद है। आप कहीं चमार-भंगी, माँग, महार तो नहीं है। पासी, खटिक, दुसाध आदि तक तो थोड़ा बहुत चलेगा। चमार बिल्कुल नहीं। यहाँ ओल्डएज होम में आराम कम है। हया शर्म ज्यादा है। उठते-बैठते, खाते-पीते, आते-जाते हर कोई

जाति पूछने लगा है। जाति के दर्जे के हिसाब से व्यवहार होने लगा है। जाति का होना एक सच है पर एक जाति बुरी दूसरी अच्छी, एक नीची, दूसरी ऊँच कैसे हो सकती है?"[162] 'तेजगुलाम' के माता-पिता दोनों डायरी लिखते है और अपने जीवन की तमाम घटित घटनाएँ उसमें लिख डालते है। 'तेजगुलाम' अपने पिता की डायरी को पढ़ता है उसमें लिखा है कि जाति के आधार पर उन्हें यहां मान-सम्मान नहीं मिलता है-"अब यहाँ एस०सी०एल०टी० कर्मचारी भी भेदभाव करने लगे हैं। बिस्तर बदलना, बाथरूम साफ करना, कपड़े धोना कोई नहीं चाहता। यहां तक कि अब हमें सभी के बाद में खाने को बुलाया जाता है। सबसे पहले ब्राह्मण-बूढ़े और सबके बाद हम चमार। चाय-पानी तो खुद उठा कर ले जाओ।"[163]

सुशीला टाकभौरे की कहानी 'संघर्ष' में 'शंकर' जो चौदह साल का लड़का हे वह शरारती होने के कारण लोग उसे डांटते हुए जाति पर आकर अपमानित करते है उसे मारते-पीटते है, अत्याचार करते हैं। 'शंकर' को रोता देख उसके पिता दुखी मन से कहते है-"बच्चा है... बच्चे धूम करते ही है। मगर लोगों को हमारा बच्चा ही बुरा लगता है। न जाने लोग हमारे पीछे ही क्यों पड़े रहते है? जहाँ देखो, जात-पात की बात करके हमें नीचा दिखाते रहते हैं। जैसे हमारी कोई इज्जत ही नहीं....?"[164] समाज में जाति के आधार पर ही मान-सम्मान मिलना सम्भव होता है, क्योंकि लोग समाज का आधार जाति को ही मानते है। उच्च जाति के लोग उच्च सम्मान पाने के हकदार है निम्न जाति के लोग निम्न जो सम्मान खो चुके है ऐसी धारणा समाज में प्रचलित है। "भारत में कोई ब्राह्मण, जो दलितों को अछूत मानता है, किसी दलित से हाथ नहीं मिलायेगा। कोई दलित अपने गुणों या उपलब्धियों के कारण निचली श्रेणी से ऊपर की श्रेणी में आ जाये और दलितों का अछूत मानने वाला ब्राह्मण उन गुणों और उपलब्धियों से रहित हो, तो वह उस दलित को नीची निगाह से ही देखेगा। यानी भारत में एक अशिक्षित और निर्धन ब्राह्मण का भी मानाधिकार एक सुशिक्षित और धनी दलित के मानाधिकार से अधिक है और यहाँ की जाति-व्यवस्था में दलितों के न्यूनतम मानाधिकार के लिए भी कोई जगह नहीं है। निश्चय ही ऐसी व्यवस्था वाले समाज को सभ्य और सम्यक् समाज नहीं कहा जा सकता।"[165] अभी हाल ही में एन०सी०ई०आर०टी० द्वारा ग्यारहवीं कक्षा

की पाठ्यपुस्तक में बाबा साहब अम्बेडकर के आपत्तिजनक कार्टून का चित्र छापने से डॉ० भीमराव अम्बेडकर का अपमान किया है। यह किताब राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एन०सी०ई०आर०टी०) ने प्रकाशित की है। भगवानदास कहते है अपने प्रति जातिगत अपमान को लेकर अपने अनुभव व्यक्त करते हुए कहते हैं-यह मैं अपने अनुभव के आधार पर बताता हूँ। जब मैं कहीं बाहर जाता हूँ, तो मुझे इस बात का बड़ा गर्व होता है कि मैं एक भारतीय हूँ, क्योंकि इसके बावजूद कि मैं एक अछूत समुदाय में पैदा हुआ हूँ और मैंने बड़े अपमान सहे हैं, मैं देश के सर्वोच्च न्यायालय का वकील हूँ और वकील की बिरादरी में बाकी सबके समान माना जाता हूँ। अछूत होते हुए भी मुझमें यहां तक पहुँचने की संभावना थी और मेरे देश ने उस संभावना को साकार होने के अवसर दिये, परिस्थितियाँ दीं। इसका मतलब है कि ऐसे अवसर है और परिस्थितियाँ सबको मिलें, तो उन सबमें निहित संभावनाएँ भी साकार हो सकती है। लेकिन इसके कारण मुझे अमरीका, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड आदि देशों में जाने पर जो मान मिलता है, वह मुझे अपने देश में नहीं मिलता। मैं सर्वोच्च न्यायालय में वकालत करता हूँ और हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी में लिखता हूँ और मै समाज के लिए जीवन भर कुछ न कुछ करता रहा हूँ। लेकिन इसके बावजूद अपनी जाति के कारण मुझे अपमानित होना पड़ता है।"[166] समाज में ऊँच-नीच का भेदभाव, घृणा, अन्याय, शोषण, उत्पीड़न तिरस्कृत आदि सब जाति-व्यवस्था के कारण ये समस्याएं दलित वर्ग पर बनी हुई है जिससे उन्हें न्याय नहीं मिलता है।

5.1.6 अंतर्जातीय विवाह के स्तर पर :

भारतीय समाज में जाति-व्यवस्था के अंतर्गत अंतर्जातीय विवाह के स्तर पर दलित वर्ग के प्रति अन्याय होता है। डॉ० भीमराव अम्बेडकर अंतर्जातीय विवाह को जाति-व्यवस्था के उन्मूलन के पक्ष में मानते थे। परंतु समाज में अंतर्जातीय विवाह अधिक मात्रा में सफल बनने नहीं दिया जाता है। समाज में जब अंतर्जातीय विवाह चाहे वह गांव या शहर में हो तब खाप पंचायते अपना हिसांत्मक रूप लेकर उभर आती है। समाज में दलित वर्ग के साथ किसी भी क्षेत्र में अन्याय व शोषण होता है तब खाप पंचायते नजर नहीं आती है। श्योराज सिंह बेचैन की कहानी 'सन्देश'

में भीम सिंह' जो जाति से दलित है और 'विनीता' जो उच्च जाति से ब्राह्मण है। दोनों के अंतर्जातीय विवाह को सवर्ण जाति के लोग सहन न करते हुए 'विनीता' को 'भीम सिंह' से तलाक दिलवा देते है तथा उनका एक बेटा 'सन्देश' को भी 'विनीता' के साथ घर ले आते है। 'भीम सिंह' और 'विनीता' की शादी के पच्चीस साल बाद भी 'विनीता' के घर वाले जातिगत मानसिकता रखते हुए दोनों को अलग कर देते है और अंत में अपनी बेटी 'विनीता' को मौत के घाट उतार देते है। 'विनीता' को मार देने के बाद 'सन्देश' और उसके पिता को मारने के लिए तैयार हो जाते है तो 'सन्देश' सारी बातें सुन कर वहां से भाग कर अपने पापा के पास आना चाहता है। कहानी में 'भीम सिंह' की मित्र 'मैत्रेयी' 'सन्देश' को भागते हुए देखती है और उसे रोकती हुई कहती है-"रूक जा बेटा, रुक जा।" 'सन्देश' 'मैत्रेयी' से बातें करता हुआ बताता है-'आण्टी में संदेश हूँ। सन्देश अरे विनीता का बेटा। पर तू यहां भाग क्यों रहा था रे। "इसलिए कि मेरे नाना, मामा मेरे, पापा को पुलिस से मरवा देंगे।" पुलिस से मरवा देंगे? बेटा पुलिस मारने के लिए नहीं होती, बचाने के लिए होती है। वह तो बुरे लोगों को मारती है।

बुरे लोग तो मेरे नाना-मामा है? पर उनके यहां तो पुलिस और बड़े-बड़े अफसर जुहार करते हैं, दावतें खाते हैं और उनकी हर सेवा करने को कहते हैं।

नाना-मामा बुरे लोग हैं?

वे बुरे क्यों है बेटा?

वे बुरे हैं, आण्टी, उन्होंने मेरी माँ को मरवा दिया। मेरे मामा के मौसेरे 'भाई पुलिस' ने गले में फंदा लगा कर मार दिया माँ को।

"क्यों मार दिया पुलिस मामा ने?

कह रहे थे, 'नीची जात से शादी क्यों की' हमारी नाक क्यों कटवा दी, माँ सोचती थी भूल गये होंगे इस कारण वो पापा से लड़कर अपने घर लौट रही थी।"

"सो अब वे लोग क्या करेंगे?"

"वे मुझे और मेरे पापा को मार डालेंगे।"[167]

जी०सी०एल० बोधी की कहानी 'कुसुमा' में भी अंतर्जातीय विवाह के कारण अत्याचार व अन्याय का सामना करना पड़ता है और विवाह के दो साल बाद गांव में प्रवेश करते ही दोनों मौत के घाट उतार दिये जाते है। कहानी में 'रमेश' दलित वर्ग से सम्बन्धित है और 'कुसुमा' एक ब्राह्मण कन्या, उनका एक बेटा 'दमन' जो छः माह का है। 'कुसुमा' 'रमेश' से विवाह करने के दो साल बाद अपने घर जाने की इच्छा व्यक्त करती हुई कहती है-

"सुनी जी।

हूँ।

हूँ-टू-कुछ नहीं मैं अपनी अम्मा को देखने जाना चाहती हूँ। जब से मैंने तुम्हारे साथ कोर्ट मैरिज की, लगभग दो साल हो गये। मैंने अपनी अम्मा को नहीं देखा-उन्हें देखने का बड़ा मन कर रहा है... गांव चलो मै अपनी अम्मा और बापू से मिलना चाहती हूँ... सम्भवतया... वे अब मुझे माफ कर देंगे।" 'रमेश जाटव' अपनी पत्नी 'कुसुमा' की बातें सुनकर कहता है- "तुम तो जानती हो कि भारत के गांवों में अभी भी सामन्तवादी व्यवस्था मौजूद है। गांव के लोग दकियानूसी है और जातिभेद को इक्कीसवीं शताब्दी में भी मानते हैं। हमारे देश के शहर, इक्कीसवीं शताब्दी में प्रवेश करने जा रहे हैं, जबकि हमारे देश में गांव अभी भी पन्द्रहवीं शताब्दी में रहकर पुरी के शंकराचार्य स्वामी निरंजन देव तीर्थ का आशीर्वाद प्राप्त कर रहे है।"[168]

'कुसुमा' 'रमेश' को समझाते हुए कहती है कि आज समाज में परिवर्तन आ गया है। अन्तर्जातीय विवाह करके हमने कोई अपराध नहीं किया है बल्कि समाज को नई दिशा प्रदान की है। अंतर्जातीय विवाह से दहेज प्रथा की बुराई एवं जाति प्रथा की बुराईयों का खात्मा होगा वह कहती है- "... नहीं। जिस मां/बाप ने हमें पढ़ा लिखा तथा पाल पोसकर इतना बड़ा कर दिया, वे लोग निश्चित ही हमारी भावनाओं की कद्र करेंगे।... वे हमें अवश्य माफ कर देंगे। फिर हमने समाज में बड़ा क्रान्तिकारी काम किया है। समाज परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त किया है... अमानवीय जाति प्रथा की दीवारों को अन्तर्जातीय प्रेम विवाह कर ढहा दिया है। हकीकत में सामाजिक क्रान्ति का बिगुल बजा दिया है... भारत की महिलाओं को

अन्तर्जातीय प्रेम विवाहों की तरफ कदम बढ़ाना चाहिए। तभी दहेज प्रथा एवं जाति प्रथा जैसे अमानवीय प्रथाओं का खात्मा हो सकेगा... हम दहेज की बलिदेवी पर चढ़ना नहीं चाहती... हमारी बड़ी बहन तो दहेज की बलिदेवी पर पहले ही चढ़ गयी... फिर मैं जिन्दा सती भी नहीं होना चाहती... कहने का तात्पर्य यह है कि मैं पुरी के शंकराचार्य की शिष्या नहीं बनना चाहती। मुझे तुमसे पूरी उम्मीद है कि तुम मुझे दहेज के कारण कम से कम जलाओंगे नहीं। हमारी जिन्दगी तो सुरक्षित रहेगी। आप चाहे जिस जाति के हो हमसे कोई मतलब नहीं है।"[169] 'रमेश' 'कुसुमा' और अपने बेटे 'दमन' को लेकर 'करमपुर' गांव में पहुँचता है। उन दोनों की आने की खबर पूरे गांव में आग की तरह फैल जाती है। 'कुसुमा' की मां उसे कहती है कि तूने एक शूद्र युवक से शादी की है इसलिए बदनामी हो रही है। तभी 'कुसुमा' का पिता, भाई, चाचा, गांव के सामन्ती ब्राह्मणों ने लात/घूसों/जूता/चप्पलों/ लाठियों से कुसुमा को पीटते रहे जब तक वह मर नहीं जाती है। 'रमेश' 'कुसुमा' को बचाने जाता है तो गांव की भीड़ मिलकर उसको मौत के घाट उतार देती है। 'कुसुमा' का पिता 'प्रवीण कुमार जोशी' बेटी की लाश पर थूक देता है। 'रमेश' के मां-बाप 'कुसुमा' का दाह संस्कार करते है।

समाज में जाति का जहर लोगों में खून बन कर उतर रहा है। निम्न जाति के साथ अन्याय चाहे किसी भी कार्य को लेकर ही क्यों हो, उनका शोषण अवश्य होता है। जाति-व्यवस्था में विवाह बन्धन में भी भेदभाव के कारण उच्च वर्ग अपना आंतक प्रस्तुत करते है। दयानंद बटोही की कहानी 'भूल' में 'रमेश' और 'पारो' आपस में विवाह करना चाहते है। 'रमेश' दलित जाति का है और 'पारो' सवर्ण जाति की है परन्तु समाज में जाति बंधन को लेकर विवशता जाहिर करते हुए 'रमेश' 'पारो' से कहता है-"पारो वह दिन कब आएगा जब समाज में जातिभावना का नाश हो मानवता की भावना पराकाष्ठा पर होगी। काश! हम दोनों के लिए जाति न होती।"[170] पारो जाति के प्रति संकीर्ण मानसिकता से उभर कर जाति बंधन में विश्वास नहीं रखती है और समाज में न्यायपूर्वक विचार से परिवर्तन लाने की कोशिश करती हुई कहती है-"रमेश जब तक नयी पीढ़ी इसे चुनौती नहीं देगी तब तक न जाति खत्म होगी न अन्याय, अत्याचार... हम दोनों की आत्मा, हृदय एक है

तो जाति कोई भी बाधा नहीं डाल सकती।"[171] 'रमेश' और 'पारो' दोनों समाज में जाति प्रथा को लेकर होने वाले अन्याय से परिचित है कि समाज में जाति उन्मूलन कब खत्म होगा 'रमेश' 'पारो' को समझाता हुआ कहता है-"पारो आज हम तुम दोनों प्रण करें- सत्य ही वाणी होगी, सादा जीवन होगा, उच्च विचार होंगे, गरीबों के प्रति सहानुभूति होगी, जाति के प्रति विद्रोह होगा" 'पारो' 'रमेश' से जाति बंधन को लेकर प्रश्न करती हुई कहती है-"रमेश कब वह दिन आयेगा जब मनुष्य धन के प्रति बावला न होकर, बिना जाति पूछे, समाज में आदर्श जीवन बितायेगा और बिना जाति भाव रखे देश प्रेम, मनुष्य प्रेम से अभिहित हो एक-दूसरे में बिना रोक-टोक शादी ब्याह करेगा....।"[172] श्योराज सिंह बेचैन की कहानी 'क्या करे लड़की' में 'कीर्ति सक्सेना' जो सवर्ण जाति की होने से एस०सी० 'सत्यपाल' से प्रेम विवाह करना चाहती है। 'कीर्ति' के परिवार वाले जाति अलग होने के कारण मना कर देते है तो 'कीर्ति सक्सेना' आत्महत्या करने का फैसला करके घर से चली आती है। कहानी में 'रविराज' 'कीर्ति' को आत्महत्या करते देख उसे अपने घर ले आता है तो वह अन्तर्जातीय विवाह को लेकर सारी बातें बताती है। 'रविराज' 'कीर्ति' के पिता से फोन पर बात करते हुए कहते है-"तो क्या आप कीर्ति को वापस लेने नहीं आएँगे।" "हरगिज नहीं, मर गई हमारी बेटी। नाम मत लीजिए उसका। हम नहीं देखना चाहते उसकी मनहूस सूरत। नाक कटा दी है उसने, हमारी मौहल्ले बस्ती में। हम नहीं आएँगे, किसी भी कीमत पर नहीं।"[173]

'रविराज' और उसकी पत्नी 'श्यामा' 'कीर्ति' की मदद करना चाहते है कि वह 'सत्यपाल' से विवाह करके सुख-शान्ति से जीवन व्यतीत कर सके। 'रविराज' 'कीर्ति' के कहने से 'सत्यपाल' को फोन करके बुलाता है। 'सत्यपाल' आ जाता है परन्तु वह 'कीर्ति' से अन्तर्जातीय विवाह नहीं करना चाहता और 'कीर्ति' को कहता है-"देखो अगर तुम चाहती हो कि हमारे जिस्म के टुकड़े-टुकड़े कर चौराहे पर फैंक दिए जाएं। पुलिस, कोर्ट-कचहरी हमारी रक्षा न कर सके और किसी हत्यारे को सजा न दे सके। अगर यही हश्र देखना चाहती हो तो मैं राजी हूँ। चलो इसी वक्त कहीं भी किसी भी पद्धति से शादी करें और यदि तुम खुद को महफूज और मुझको जिन्दा देखना चाहती हो तो अपनी जाति-बिरादरी में लौट जाओ। शादी ही

करनी है तो अपने पैरेंट्स की मर्जी से करो। बहुत करो तो स्वजाति या तत्सम जाति में प्रेम करो।" 'कीर्ति' जातिगत अत्याचार को न समझकर 'सत्यपाल' से कहती है-"नहीं मैं, अब घर नहीं लौटूंगी। प्रेम कोई मशीनी कसरत नहीं है। मैं अब तुम्हें किसी भी कीमत पर नहीं छोडूंगी। मै जानती हूँ तुम मुझे चाहते हो, न चाहते तो तुरंत आते भी नहीं। अब आ गए हो तो साथ चलूंगी मैं भी।"[174] 'सत्यपाल' 'कीर्ति' को समझाता है कि तुम शायद जातिगत व्यवस्था से अपरिचित हो। अंतर्जातीय विवाह के परिणाम तुम्हारे सामने नहीं आये है समाज में सवर्ण जाति के लोग निम्न जाति के लोगों को अंतर्जातीय विवाह होने पर अपना हिंसात्मक आतंक रूप धारण कर लेते है। वह आगे कहता है-"कीर्ति तुम शायद इंटरकास्ट लव मैरिज के परिणामों से बेखबर और बेअसर हो। मथुरा में जाटों की जाति पंचायत ने अपनी बेटी रोशनी और रामकिशन जाटव को फांसी लगाई। पेड़ पर लटकी हुई दोनों की लाशें देखी थीं अखबारों में? कल बुलन्दशहर को भौपुर गांव के चंदर चमार और सजनी (जाट) को दिल्ली से राजी कर गांव लाया गया और खुद लड़की पक्ष ने उन दोनों के जिस्म के टुकड़े कर लोथड़ों में बदल दिए। चण्डीगढ़ में एक जट्ट सिख ने अपनी बेटी के टुकड़े कर दिए इसलिए कि उसने चूहड़ा जाति के लड़के से शादी की। फैजाबाद के थरेरू में गांव वालों ने प्रेमी युवती को उसकी बच्ची सहित घसीटते हुए ले जाकर घाघरा नदी में फेंक दिया। शत्रोघन पासी और रामनाथ भुजकी बेटी को कोर्ट मैरिज के बाद दिल दहला देने वाली सजा दी।"[175]

'सत्यपाल' समाज में फैली जाति की आग की लहरों से परिचित है कि समाज में जाति की व्यवस्था कायम होने से मनुष्य की मनुष्यता समाप्त हो चुकी है वह केवल समाज में जाति को आधार बनाकर जाता है। 'सत्यपाल' कीर्ति से कहता है-"मैं नहीं चाहता कि मेरे साथ-साथ तुम भी बे आई मौत मरो, तुम्हें यकीन नहीं होता तो हैडिंग्स और मृतकों के फोटों देखो। क्या तुम इनसे अपने आप को असंबद्ध रख सकती हो, लेकिन मेरे तो वे सभी किसी न किसी रूप में अपने सगे थे। मैं इनके संदर्भ कैसे बर्दाशत करूँ?"[176] 'सत्यपाल' 'कीर्ति' को अंतर्जातीय विवाह के दौरान किए गये अत्याचारों के बारे में बताता है समाज में जातिगत अन्याय सदियों से होता चला आ रहा है और स्वयं अन्तर्जातीय विवाह करके जान जोखिम

में नहीं डाल सकता जिससे उसके परिवार वाले की भी जिन्दगी खतरे में आन पड़े। 'सत्यपाल' आगे कहता है-"अब कैसे मैं अपने प्रेम के बदले अपनी ओर अपने घर बस्ती के लोगों को समाजी खौफ और आंतक के साए में ले जाऊँ? उनकी जान जोखिम में डलवाऊँ? तुम इसकी वजह बनना चाहो तो इंटरकास्ट मैरिज का जुआ खेला जाए। लाशों में तबदील हुई जिंदगियों में अपनी एक लाश और रखवाऊँ? हत्याओं के मातम से भर दूँ सपनों के आंगन को? ना बाबा ना, मुझे ऐसी प्रेम क्रांति नहीं करनी, जिसके गर्भ में कौम की दुर्गति भरी हो। क्या ये समाचार धरती हिला देने वाले नहीं है? क्या मैं तुम्हारे और अपने स्वार्थ के लिए सदियों की सताई, लुटी-पिटी अपनी कौम को और नयी मुसीबत में डाल दूँ?"[177] 'सत्यपाल' जाति के आधार पर हुए आंतक को बताकर वहां से चला जाता है। सुबह अखबार में 'सत्यपाल' की मौत की खबर आती है। समाज में जाति व्यवस्था अपनी सन्तान की खुशियों व प्राणों से भी कहीं अधिक प्यारी है। संविधान व कानून व्यवस्था के अन्तर्गत अन्तर्जातीय प्रेम विवाह का कानून बनाया गया है परन्तु जाति-व्यवस्था के अंतर्गत न्याय प्रदान किया जाए परन्तु समाज की मानसिकता जाति-व्यवस्था को बनाए रखने के पक्ष में है।

5.2 दलित सशक्तिकरण : दलित संदर्भ का न्याय पक्ष

इक्कीसवीं सदी में सामाजिक न्याय की अवधारणा को लेकर जो विमर्श चल रहे हैं, उनमें दलित विमर्श प्रमुख है वर्तमान समय में दलितों ने अपनी कमजोरियों को पहचान कर अपने समाज के उत्थान तथा विकास की दिशा में कदम बढ़ाये है अर्थात् इक्कीसवीं सदी में दलितों का सशक्तिकरण हुआ है। दलित वर्ग प्राचीन काल से ही शोषित व पीड़ित वर्ग रहा है। दलित शब्द की अवधारणा के अंतर्गत दलित अर्थ इस प्रकार स्पष्ट है-"दलित किसे कहते हैं? अरविन्द कुमार कुसुम कुमार ने अपने 'हिंदी थिसारस' में दलित के कई संदर्भगत अर्थ दिए हैं। एक अर्थ है 'शोषित' एक अर्थ है 'पराजित' जिसमें 'दमित' 'विजित' आदि अनेक भावार्थ शामिल हैं। एक अर्थ 'पददलित' है जिसमें 'दलित-पदाक्रान्त' आदि अर्थ शामिल है। ज्ञानशब्द कोष में दलित का अर्थ 'रौंदा' 'कुचला', 'दबाया हुआ' 'पदाक्रान्त' के साथ हिन्दुओं में वे शूद्र, जिन्हें अन्य जाति के समान अधिकार प्राप्त नहीं है, भी

दिया है। माता प्रसाद ने अपनी पुस्तक 'हिंदी काव्य में दलित काव्यधारा' में दलित शब्द के अनेक प्रयोगात्मक अर्थों की चर्चा की है, जिसमें-'चाण्डाल', 'अस्पृश्य', 'अछूत' आदि शामिल है। 'उपेक्षित', 'अपमानित', 'उत्पीड़ित', 'प्रताड़ित' भी इसी कोटि में आने वाले शब्द हैं। दलित शब्द के व्यापाक सामाजिक अर्थों में 'गुलाम', 'भूमिहीन', 'बन्धुआ' भी शामिल है।"[178]

'दलित' शब्द की अवधारणा के पश्चात् सशक्तिकरण से अभिप्राय वर्तमान स्थिति से सुधार की ओर अग्रसर होना है। प्रत्येक क्षेत्र शैक्षणिक, राजनीतिक, आर्थिक, वाणिज्यिक, व्यापारिक तथा साहित्यिक आदि क्षेत्रों में सशक्त होना सशक्तिकरण माना जाता है। सशक्तिकरण का शाब्दिक अर्थ है-शक्तिशाली या ताकतवर बनाना। अर्थात् समाज के कमजोर वर्गों पर विशेष ध्यान देकर उन्हें सहूलियतें पहुंचाकर शक्तिशाली वर्गों के बराबर लाना, जिससे वे स्वयं में इतने सशक्त हो जाएं कि उनका शोषण या उन पर अन्याय न हो सके तथा वे भी समाज के अन्य वर्गों की तरह विकास की मुख्यधारा में जुड़कर कार्य कर सके।"[179] वर्तमान समय में दलित वर्ग न्याय के प्रति जागरूक है तथा संघर्षरत है जिससे दलित वर्ग का सशक्तिकरण हो रहा है। दलित वर्ग में शिक्षा व रोजगार के माध्यम से जागरूकता आई है। उनमें अपने अधिकारों के प्रति चेतना और जागृति आई है। दलित स्वयं की एवं अपने समाज की कमजोरियों को पहचानकर शिक्षा के रोजगार के क्षेत्रों में कदम बढ़ा रहे है तथा अपने समाज के सशक्तिकरण में अहम भूमिका निभा रहे है। जियालाल आर्य दलित समाज के सशक्तिकरण के प्रति विचार प्रस्तुत करते हुए कहते है- "दलित का सामान्य अर्थ होता है- दबा या दबाया हुआ, कुचला हुआ। इसमें अभाव, कमजोरी, विपत्ति की नियति और हीनता का भाव झलकता है दलित अर्थात् जो सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से कमजोर हो, तभी तो उसे कुचला जा सकता है। आज भी कमजोर वही होता है, जिसके पास जीविकोपार्जन के साधन नहीं होते अर्थात् कृषि, उद्योग, व्यापार, नौकरी से वंचित। परन्तु इन अभावों के होते हुए भी यदि जाति, धर्म, वर्ण का बल है तो ऐसा व्यक्ति दलित नहीं होता।"[180]

इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानी में ऐसे अनेक दृश्यों का प्रस्तुतिकरण हुआ है, जहां दलितों ने परम्परागत तिरस्कार तथा अपमान की बेड़ियों को तोड़कर स्वयं को समृद्ध, सशक्त तथा सम्पन्न बनाया है। सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक तीनों स्तरों पर आज दलित वर्ग की स्थिति न केवल संतोषजनक प्रतीत होती है अपितु कई क्षेत्रों में उन्होंने अपनी प्रतिभा तथा क्षमता का भी परिचय दिया है। कंवल भारती का मानना है कि दलित कहानी का उद्देश्य समाज में परिवर्तन लाना है। जिसके अंतर्गत दलित वर्ग समानता व स्वतंत्रता के अधिकार से अपनी सामाजिक व्यवस्था में बदलाव लाना है। उनके अनुसार-"दलित कहानी का मुख्य प्रतिमान सामाजिक परिवर्तन है, सामाजिक न्याय है और सामाजिक समता का सिद्धांत है। वह डॉ॰ अम्बेडकर की सामाजिक क्रान्ति को अभिव्यक्ति देती है, जिसका उद्देश्य है समता स्वतंत्रता और बन्धुत्व के मूल्यों का निर्माण करना और व्यवस्था को बदलना।"[181]

वर्तमान हिंदी कहानी में अनेक ऐसे प्रसंग है जहां दलित शिक्षा तथा रोजगार के माध्यम से सशक्तिकरण की ओर अग्रसर है। वर्तमान समय में दलित वर्ग प्रत्येक क्षेत्र में सशक्त होकर अपने जीवन में परिवर्तन ला रहे है। सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक रूप से हुए सशक्तिकरण का प्रस्तुतिकरण इस प्रकार से है। समाज में दलित वर्ग अस्पृश्यता से लेकर अपने प्रति अन्याय के लिए जागरूक है कि दलित वर्ग वर्तमान में अस्पृश्यता के कारण अन्याय सहन न करके विरोध करता है। सुशीला टाकभौरे की कहानी संघर्ष में 'शंकर' की नानी को सवर्ण वर्ग द्वारा जूठन दिया जाता है। शंकर को अपने परिवार के प्रति व नानी को लेकर भेदभाव सहन नहीं होता है और सवर्ण जाति के प्रति विद्रोह भावना व्यक्त करते हुए पूछता है-"तुम लोग क्यों मेरी नानी को बुलाते हो?... मेरी नानी को बुलाकर जूठन क्यों देते हो? तुम खुद चाहते हो कि मेरी नानी यह लेती रहे और हम तुम्हारा जूठा खाते रहें।.... मेरी नानी को अब किसी ने बुलाया तो देख लेना, मैं तुम सबकी पिटाई करूंगा..."[182] 'शंकर' अपनी नानी का भी विरोध करता है कि वह गांव में से जूठन खाना अपने घर क्यों लाती है। 'शंकर' जूठन खाने को फेंक देता है तो

आंगन के बाहर बिखरा जूठन को कुत्ता खाने लगता है तभी 'शंकर' चीख कर कहता है-"हम भी ऐसे कुत्ते हैं क्या?"[183]

एस॰ आर॰ हरनोट की कहानी 'सवर्ण देवता दलित देवता' में कहानी का पात्र अपने पिता के कहने पर 'लीलादास शर्मा' के घर देवता आने के कारण से भेज दिया जाता ताकि वहां पर भी वह देवता की सेवा कर सके। परन्तु वहां पर उसके साथ अस्पृश्यता का व्यवहार किया जाता है। कहानी का पात्र रात को सर्दी बढ़ जाने के कारण पुजारी पर डाली दो रजाईयों में से एक रजाई खींच लेता है। तो पुजारी चिल्लाकर कहता है कि उसने मेरी रजाई को छू कर अपवित्र कर दिया है और उसे गालियां देकर अपमानित करता है। तभी देवता का एक पंच पंडित 'नारायणू' थप्पड़ मारने के लिए आगे आता है तो वह उसे पछाड़ कर गिरा देता है और विरोध करता हुआ कहता है-"पंडत ! जितनी गालियां तुमने मेरे को दी, वह तो मैंने सहन कर ली। लेकिन मेरी एक बात का जवाब तू दे दे। तू ही क्यों, देवता के साथ जो ये पुजारी और पंच आए हैं, इनसे भी मैं पूछता हूँ कि क्या ठंड बामणों और कनैतों को ही लगती है या कि कोली-चमारों को भी? खुद तो तुम दो-दो रजाईयां लेकर खर्राटे मारने लग गए और हम लोगों को बैठने के लिए पूरा पराल भी नहीं। हमारे में भी ऐसा ही दिल है, ऐसे प्राण है जैसे तुम लोगों में है। हमारे पुजारी और पंचों को तो शर्म है नहीं, लेकिन पंडित, तेरे यहां तो बड़ा कारज है। तीन-तीन देवताओं की जातरा है। तेरे को तो समझ चाहिए थी कि देवता के साथ बाहर की बिरादरी के भी लोग हैं। इस सर्दी में उन्हें भी तो रात काटनी है।"[184]

समाज की जाति व्यवस्था के अंतर्गत अस्पृश्यता एक घिनौना रूप है। निम्न जाति के लोग सवर्ण जाति के किसी भी वस्तु को स्पर्श करें तो वह अपवित्र हो जाते है परन्तु जब स्वयं वे उन पर अत्याचार व मारपीट करते है तब वे अपवित्र नहीं होते है? सूरजपाल चौहान की कहानी 'मंगल पाण्डेय का लोटा' में मंगल पाण्डेय 'मातादीन' के द्वारा उसके लोटे को स्पर्श कर देने से वह आक्रोश में आ जाता है क्योंकि 'मातादीन' निम्न जाति से संबंध रखता है। 'मंगल पाण्डेय' के अस्पृश्यता के भेदभाव का विरोध करते हुए 'मातादीन' कहता है-"पण्डत, तेरी

पण्डताई उस समय कहाँ चली जाती है जब तू और दूसरे ब्राह्मण सिपाही गाय और सूअर की चर्बी से बने कारतूसों को मुँह में डालकर उनकी परतें खोलकर बन्दूक में भरते हो।"[185] रत्नकुमार सांभरिया की कहानी 'मुक्ति' में भी अस्पृश्यता के कारण हुए अन्याय का विरोध होता है। कहानी में गांव का महंत 'नानकराम' को मंदिर की मूर्ति छूने से मना कर देता है कि उसके स्पर्श से वह अपवित्र हो जाएगी। 'नानकराम' अपने प्रति अन्याय व अपमान की ज्वाला में भभक कर तलवार उठाता है और भागते हुए महंत पर तलवार लहरा देता है-"तेरी तो...।" महंत और मौत ! मौत और महंत !! महंत और मौत !!"[186] दयानन्द बटोही की कहानी 'भूल' में 'गोबर पांडे' अपनी सवर्ण जाति के अहंकार में निम्न वर्ग के प्रति अन्याय करता है परन्तु कहानी में 'रमेश' और 'गोबर पांडे' की बेटी 'पारो' अन्याय के खिलाफ आवाज उठाते है और न्याय प्राप्त कर लेते है अस्पृश्यता की जड़े को मिटा कर 'गोबर पांडे' कहता है- "बैठो-बैठो भाई बुद्धू। बेटा रमेश इधर आ बेटा। तुम लोगों ने मेरी आंखें खोल दी। भाई मेरी सब भूल थी। माफ कर दो। अब मैं.... मैं नहीं समझा था। तुम सब गांव के लिए आदर्श हो। बेटी पारो अब तो बैठ? हाँ भाई पानी पिला दो अपने हाथ से। अब तो मेरा पाप तुम्हीं के द्वारा कटेगा।" 'गोबर पांडे' आगे कहता है-"नहीं-नहीं यह हम सबकी भूल थी जो अलग किये हुए बैठे थे, हम सब में एक ही रक्त। एक ही सब कुछ फिर यह ढोंग ही तो है। लाओ पानी।"[187]

वर्तमान में दलित रोजगार के माध्यम से सशक्तिकरण की ओर अग्रसर है। दलित जाति जो निम्न कार्य या मैला ढ़ोने के कार्य न करने के प्रति जागरूक है वह अपनी स्थिति में परिवर्तन ला रहे है। रत्नकुमार सांभरिया की कहानी 'बिपर सूदर एक कीने' में दलित वर्ग द्वारा अपमानित व तिरस्कृत जीवन का विरोध करते हुए दिखाया गया जिससे उच्च जाति के लोग निम्न जाति के कार्य को लेकर उनसे अन्याय न कर सके। कहानी में चौपाल पर बिरादरी की पंचायत बैठती है पंचायत में सत्तर वर्षीय बूढ़ा अपनी ऊँची आवाज में कार्य के प्रति सशक्त होकर कहता है-"मेरे जात भाईयो सुनो, अपन जब तक यो धंधों करांगा। बदनामी खड़ी रहेगी। सिर ना उठा पावांगा। यो गंदो धंधो छोड़ो, मान सम्मान से सिर ऊँचो करके जीओ।

सौ को तोड़ यो है। अपनो रेजा (कपड़ा बुनना) या चेजा (मकान बनाना) को काम पकड़ लो। मिल मजूरी कर पेट भर लो, खेत क्यार कर लो। पर चमड़ा वाला काम से निजात पा लो। बड़ी जात हमसे नाक भौ चढ़ावे। नीड़े (नजदीक) ना बैठन दे। बड़ा कह गया है, आबरू से एक दिन जीनो अच्छो, बेआबरू हजार दिन बुरा।"[188] कहानी में 'सनकी' अपने पति 'श्यामूलाल' को दलित सशक्तिकरण के प्रति समझाते हुए कहती है- "छोरो इतनो बड़ो अफसर बन गयो। घर धन से अंटो पड़ो। पर रीछ मरन न मर जाएगो, झूमनो ना छोड़ेगो। जोहड़ में पटको इन आर ऊजारो (औजारों) को।"[189]

आज दलितों में अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता आई है। वे अपने साथ हो रहे अन्याय को लेकर सतर्क है एवं न्याय के प्रति जागरूक है। समाज में परिवर्तन होने के साथ-साथ दलित अपनी स्थिति में भी परिवर्तन लाना चाहते है। वे अपने न्याय को लेकर आवाज उठाते है। सूरजपाल चौहान की कहानी 'बदबू' में संतोष अत्यंत मेधावी व आधुनिक विचारों वाली लड़की है। उसके पिता उसे उच्च शिक्षा न दिलवा कर उसकी शादी नौंवी फेल 'रजिन्दर' से कर देते है। शिक्षा के कारण संतोष में आई जागरूकता से वह मैला ढ़ोने का काम करने से मना कर देती है और कहती है-"चाहे मेरी जान चली जाए पर मैं यह गन्दा काम हरगिज नहीं करूँगी।" वह आगे कहती है-"मैं पढ़ी-लिखी हूँ और फिर यह काम मैंने तो क्या मेरे माँ-बाप ने भी नहीं किया।"[190]

सुशीला टाकभौरे की कहानी 'संघर्ष' में 'शंकर' की नानी मैला ढोने का काम करती है। 'शंकर' अपनी नानी को मैला ढ़ोने के काम से मना करता है कि उसका सभी लोग मजाक व अपमानित करते है वह अपनी नानी को मैला कार्य करने के विरोध में डांट कर कहता है-"क्यों जाती तो तुम घर-घर, गली-मोहल्ले में काम करने?... क्यों जाती हो? क्यों गांव भर की गन्दगी अपने सिर पर उठाती है? तुमको गन्दा नहीं लगता है क्या? तुम्हारी नाक सड़ गई है? तुमको दुर्गन्ध क्यों नहीं आती?"[191] 'शंकर' गुस्से में आकर अपनी नानी को कहता है कि स्कूल में 'सवर्ण जाति के सहपाठी मेरा अपमान करते है। 'शंकर' रोते हुए चीख-चीख कर कहता है-"कितनी बार कहा है, स्कूल के समय में मेरे स्कूल के पास से मत

निकला करो... लड़के मेरा मजाक उड़ाते है। मुझे शर्म आती है। तुमको अपने आप पर शर्म क्यों नहीं आती...?" वह अपनी नानी से विरोध करता हुआ आगे कहता है- "तुम यह काम छोड़ दो... मेरे मां बप्पा तुमको खाना खिलायेंगे, तुम्हारा खर्च उठायेंगे। तुम मानती क्यों नहीं हो....?"

"अभी छोड़ दो.... आज से काम पर नहीं जाना..."[192]

'शंकर' की नानी सफाई का काम करती है जिससे उसके वस्त्र भी मैले कुचैले होते है 'शंकर' यह सब देखकर अपना आपा खो देता है और अपनी नानी को सुधारने के लिए गुस्से से कहता है- "तुम भिखारिन हो? सबसे भीख मांगती रहती हो?"

"तुम पागल हो? पागल जैसी क्यों रहती हो? तुम्हें जेल में बन्द कर देना चाहिए तब तुम सुधरोगी"

नानी अपनी गलती मानती हुई 'शंकर' को कहती है-"हाँ बेटा, अब मैं ऐसा नहीं करूंगी। तू गुस्सा मत हो... मैं कपड़ा लत्ता अच्छे से पहना करूंगी... ऐसी बुरी हालत में नहीं दिखूंगी।"[193] 'शंकर' की नानी मैला ढ़ोने के कार्य को लेकर भी शंकर को विश्वास दिलवाती हुई आगे कहती है-"आज से मैंने सब छोड़ दिया... अब मैं सुअर कभी नहीं पालूंगी...। अब मैं गांव बस्ती का काम कभी नहीं करूंगी. ...। मैंने सब छोड़ दिया आज से...। मैं कसम खा रही हूँ, मैं शंकर की सौगन्ध खाकर कह रही हूँ... बेटा, आज से मैंने सब छोड़ दिया..."[194]

सुशीला टाकभौरे की अन्य कहानी 'जन्मदिन' का नायक 'मुन्ना' दलित समाज को जागरूक करने में अपनी अहम भूमिका निभाता है-"बस करो, शर्म नहीं आती तुम्हें? इतनी गन्दगी की बातें, इतनी आसानी से हंसते हंसते तुम कैसे कह लेते हो? कैसे जीते हो तुम ऐसा नरक का जीवन.?"

"भैया, सच कहो, क्या तुम्हें अपने आप से घृणा नहीं होती? इतना गन्दा काम करते हो भैया, आज से यह गन्दा काम छोड़ दो"[195]

'मुन्ना' दलित वर्ग की स्थिति में सुधार लाना चाहता है। वह प्रत्येक क्षेत्र में दलित समाज को सशक्त करने के लिए अपने विचार प्रकट करते हुए कहता

है-"अगर तुमने यह गन्दा काम नहीं छोड़ा तो देख लेना, एक दिन तुम्हारा पप्पू भी यही गन्दगी समेटने का काम करेगा। क्या तुमको यह अच्छा लगेगा?"

वह आगे कहता है-"साहब बनाना इतना आसान नहीं है भैया। इसके लिए मां-बाप को बहुत त्याग करना पड़ता है। तुम भी अपने पप्पू के अच्छे भविष्य के लिए इस नौकरी का त्याग कर दो। कुछ दूसरा अच्छा काम करके इज्जत की जिन्दगी जियो।"

"छोड़ दो यह गन्दी जगह, 'गाड़ीखाना' भंगी मोहल्ला। दूसरे लोग मेहनत मजदूरी का काम करके सम्मान का जीवन जीते है मगर हमारे लोग? गन्दगी के कीड़ों की तरह गन्दगी का जीवन क्यों जीते है?"[196]

'मुन्ना' दलित समाज को बताता है कि आजादी के बाद भी उनकी स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आया है। उन्हें अपने प्रति हुए अन्याय व शोषण के प्रति स्वयं जागरूक होकर न्याय की मांग करनी होगी ताकि वे भी समाज को एक नई दिशा प्रदान कर सके। 'मुन्ना' अपने सशक्त कथन प्रस्तुत करता हुआ दलित समाज को जागरूक करता है-"हमारा देश स्वतंत्र होकर कितने वर्ष बीत गये फिर भी हम वहीं के वहीं हैं। हमारी आजादी हमें कब मिलेगी? आज तक, आप लोगों में से किसी ने भी यह नहीं सोचा। किसी ने भी अपने इस पुश्तैनी काम को छोड़ने का साहस नहीं किया। हम क्यों उठायें, अपने सिर पर, दूसरों का मैला? ऐसा आपने कभी क्यों नहीं सोचा?"[197]

'मुन्ना' वहां उपस्थित महिलाओं से पूछता है-"बताइये, आपको यह काम अच्छा लगता है? सिर से पैर तक गन्दगी में लिथड़ जाना क्या आपको अच्छा लगता है?" महिलाएं 'मुन्ना' को अपने काम करने की विवशता को व्यक्त करती हुई कहती है- "अरे भैया, हम भी इन्सान हैं। हमारे दिल का दु:ख हमीं जाने है कि कैसे नरक सफाई का काम करे हैं। तुम पढ़े-लिखे हो बेटा, तुम अपने लोगों को समझाओ। तुम्हीं हम सबको बताओ कि हम सब क्या करे?"[198] 'मुन्ना' दलित समाज के लोगों की बातें सुन उसका आत्मविश्वास बढ़ जाता है और कहता है-"सब मिलकर हड़ताल कर दो। आज से कोई भी कच्ची सडांसे साफ नहीं करेगा। सिर पर मैला कोई नहीं उठायेगा। कच्ची नाली साफ नहीं करेंगे। जब तुम

काम पर नहीं जाओगे तब लोग अपना इन्तजाम खुद कर लेंगे।" 'मुन्ना' अपनी बात को जारी रखते हुए समझाता है-"तब लोगों के घरों में कच्ची संडास नहीं होगी। वे फ्लश की पक्की लैट्रिन बनवा लेंगे ओर उसकी सफाई खुद कर लेंगे। गांव में कच्ची नालियों की जगह अण्डर ग्राउण्ड पक्की नालियाँ बन जायेंगी। हमें गन्दगी नहीं उठाना पड़ेगा। बड़े-बड़े शहरों में फ्लश की लैट्रिन हैं मगर गांव के लोग पुरानी पद्धति ही पसंद करते हैं। वे यह बात भूल जाते हैं कि जो सफाई का काम करते हैं, उन पर क्या बीतती है।"[199]

वर्तमान में दलित वर्ग मैला ढ़ोने का कार्य कर रहा है। मैला ढ़ोने की सदियों पुरानी इस प्रथा से निजात पाने के लिए दलित वर्ग में चेतना आई है, वह अब यह काम न तो स्वयं करना चाहता है और न अपनी आने वाली पीढ़ियों को यह काम करवाने के पक्ष में है। 'मुन्ना' की बातों को सुनकर पंचायत के मुखिया 'घिस्सू दादा' पंचायत में जो निर्णय सुनाते हैं-"भाईयो, माताओं, बहनों और बेटियों। यह पंचायत का फैसला है, कल से कोई भी अपने काम पर नहीं जायेगा। हम हड़ताल करेंगे। एकता और संगठन के साथ हम यह कदम उठायेंगे तभी गांव वालों को समझ में आयेगा। हम अपना मानव होने का अधिकार लेकर रहेंगे...।"[200]

सुशीला टाकभौरे की कहानी 'छौआ माँ' में 'तुलसा' अपनी 'छौआ माँ' को मैला ढ़ोने के कार्य के प्रति जागरूक करती है ओर स्वयं व अपने बच्चों को भी यह गन्दा काम भविष्य में न करने का निश्चय करती है और अपनी माँ को कहती है- "अपनो कैसो गांव? गांव का काम करने के लिए अपनों गांव है और किस बात के लिए अपनों गांव? चुपचाप काम करते रहो... सबसे डरते रहो... सबका कहा, बुरा-भला सुनते रहो, गाली-गलौच खाते रहों.... सबका दलिद्दर उठाते रहे-तो अच्छा है, नहीं तो कौन पूछे अपन को? मैं नहीं करूं गांव का काम, न मेरे मोड़ा मोड़ी करेंगे। हमें नहीं अच्छो लगे ये सब गन्दो काम..." 'तुलसा' हमेशा बच्चों से भी यही कहती है-"अपमान भरी इस नरक की जिन्दगी से बाहर निकलो, इन्सान बनकर जीना सीखो...."[201]

'छौआ मां' को जातिगत आधार पर गांव वाले अपमानित करते है। 'छौआ मां' अपने प्रति हुए अन्याय का विरोध करती हुई कहती है-"बहुत कर ली मैंने

तुम्हारी सेवा, अब नहीं करूंगी। तुम मेरे नहीं तो मैं भी किसी की नहीं। तुम्हारे पाप धोते-धोते मैं पापन हो गई?" अपने गुस्से को प्रकट कर विद्रोह करती है और आगे कहती है- "हमको नीच कहो हो-हम गरीब हैं हमारे पास धन साधन नहीं है, जई से हमें छोटे कहो हो...? हमें डराओ हों हमें धमकाओं हो... हमें लाचार बनाकर रखो हो...। मगर तुम भी समझ लो, अब छोटो को कम मत समझना-जरा सी चींटी भी हाथी को पछाड़ देती है। हम ऐसे भी गये बीते नहीं है। हमको गये गुजरे नहीं समझना। अगर हम अपनी वाली पर आ गये तो बहुत नुकसान में रहोंगे तुम... मेरी सेवा को नीच कहो हो, हमको नीची जात का कहो हो। जाओ, अब अपने काम खुद संभालो.... खुद करो अपने सब काम....।"[202]

भारतीय संविधान में मनुष्य के मौलिक अधिकार व सामाजिक न्याय की अवधारणा की गारंटी के बावजूद भी अन्याय बरकरार है, परंतु दलित वर्ग कानून स्तर पर भी इस प्रथा से छुटकारा पाने के लिए संघर्षरत है। 'दैनिक ट्रिब्यून' में प्रकाशित एक समाचार के माध्यम से इस तथ्य की पुष्टि होती है-जनरल हरेन रावल ने प्रधान न्यायाधीश एस॰ एच॰ कपाड़िया की अध्यक्षता वाली पीठ के अंतर्गत कहा है-"मुझे (यह बताने का) लिखित निर्देश मिला है कि एक विधेयक मानसून सत्र में संसद में पेश किया जाएगा, जिसमें पूरे मामले को निपटाया जाएगा। उन्होंने न्यायमूर्ति कपाड़िया, न्यायमूर्ति ए॰ के॰ पटनायक और न्यायमूर्ति स्वतंत्र कुमार की पीठ से कहा, 'हम इसके लिए (सिर पर मैला ढ़ोने की प्रथा खत्म करने के लिए) कटिबद्ध है। मानसून सत्र तक इंतजार कीजिए।"[203]

आज भी देश भर में पांच लाख से अधिक लोग सिर पर मैला ढ़ोने का कार्य करते है। 'जन्मदिन' कहानी में 'मुन्ना' मैला ढ़ोने के कार्य को लेकर मन में विचार करता है-"किसने यह नियम बनाया?"

"किसने उन पर जबरन यह काम सौंपा?"

"सभी लोग प्रगति के मार्ग पर आगे बढ़ गये। हम ही क्यों पीछे रहे?"

"कौन से कारण है? कौन जिम्मेदार है इन सबका?"[204]

'मुन्ना' जिस स्कूल में पढ़ने जाता है वहां गांधी टोपी पहनना आवश्यक है। गांधी जयंती पर 'मुन्ना' 'गांधी' पर दलित समाज के प्रति विचार करता हुआ

सोचता है-"क्या गांधी जी हमारी जाति की पीड़ा को जानते थे?... तब उन्होंने हमारे लिए क्या किया? हमारे लोग तो अभी भी झाड़ू लगाने और मलमूत्र उठाने का काम कर रहे हैं। तब गांधी जी ने हमें क्या दिया? हरिजन नाम देकर उन्होंने हमारा कौन सा उद्धार किया है?"[205] 'मुन्ना' अपनी नई सोच को नए ढंग से नई दिशा प्रदान करता हुआ सशक्त होता है और सोचता है- "बाबा साहब अम्बेडकर की प्रेरणा से महाराष्ट्र में महार जाति के लोगों ने सफाई का काम छोड़ दिया है। क्या बाबा साहब अम्बेडकर की प्रेरणा से भंगी जाति के लोग भी इस काम को छोड़ देंगे?... मगर बाबा साहब का संदेश इन तक पहुंचायेगा कौन?"

'मुन्ना' निश्चय करता हुआ कहता है-"मैं बाबा साहब के कार्यों और विचारों से अपनी बिरादरी को परिचित कराऊंगा, उन्हें सच्चाई का ज्ञान कराऊंगा...."[206]

सुशीला टाकभौरे की अन्य कहानी 'सिलिया' में 'सिलिया' भी 'जन्मदिन' कहानी के 'मुन्ना' की तरह मैला ढ़ोने के कार्य को लेकर जागरूक है वह इस अन्याय से दलित समाज को छुटकारा दिलवाना चाहती है 'सिलिया' भी अपने मन में विचार करती है-"कैसे बदला जा सकता है इस हालात को? कैसे हम अपनी इज्जत और बराबरी का दर्जा पा सकते है? और 'झाड़ू'?... कम्बख्त यह तो जानवरों से बदतर जीवन कायम रखने का हमारे लिए दुष्चक्र है। किसने थमा दी हमारी जाति के हाथों में ये झाड़ू? इस समाज में पैदा होना-नहीं होना तो हमारे हाथ में नहीं था परन्तु इस अपमानजनक गुलामी के चिन्ह को छोड़ना तो हमारे हाथ में है। यह हम कर सकते है....।"[207]

सुशीला टाकभौरे की अन्य कहानी 'नयी राह की खोज' में 'रामचन्द' अपने बेटे 'लाल चन्द' को पढ़ाना चाहता है परन्तु 'लालचन्द' शिक्षा प्राप्त न कर सफाई का कार्य करता है जिससे 'रामचन्द' बहुत दुखी होता है। जब 'लालचन्द' को एहसास हुआ कि उसका बेटा भी उसी की तरह सफाई मजदूरी का काम करेगा तो वह चौंक जाता है और मैला ढ़ोने के कार्य के प्रति सशक्त होता है और कहता है-"क्या एक दिन उसका बेटा भी सफाई मजदूरों की लिस्ट में आ जायेगा-जैसा कि वह आ गया है? ऐसा कब तक चलेगा? कहीं न कहीं और कभी न कभी तो

इस परम्परा को तोड़ना ही पड़ेगा।"[208] 'रामचन्द' दलित समाज में जाग्रति लाने के लिए लोगों के साथ मिलकर एक सामाजिक संस्था बनाता है जिसका नाम होता है-'जागरूक' 'रामचन्द' दलित समाज में नई चेतना लाकर आत्मसम्मान को जगाने की कोशिश करता है ताकि सदियों से पीड़ित दलित समाज को न्याय प्राप्त हो सके। वह जागरूक करता हुआ कहता है-"हमारी सन्तान हमारी तरह दूसरों की गुलामी करें- ऐसा नहीं होना चाहिए।" 'रामचन्द' आगे कहता है-"यह भी कोई जिन्दगी है? हाथ बांधे, सिर झुकाये, सबकी हांजी हांजी करते रहो....। वही जानवरों जैसा जीवन, गन्दगी को साफ करते रहो और गंदगी में पड़े रहो। यह कब तक चलेगा? कहीं न कहीं तो इसकी रोक होनी चाहिए।"[209]

दलित वर्ग पुरानी परम्पराओं की जकड़न को तोड़कर प्रगतिशील व परिवर्तनशील मार्ग को अपना रहा है। 'लालचन्द' का बेटा 'हरिचन्द' अपने दादा और पिता के प्रति कृतज्ञ है और वह स्वयं दलित समाज को शिक्षित बनाने व रोजगार के माध्यम से आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता हुआ कहता है-"समाज के ये जागरूक लोग प्रशंसा के पात्र हैं जिन्होंने यह सोचा और समाज को दिशा दी कि वह व्यवसाय क्यों न छोड़ दिया जाये जिसके कारण लोग हमें घृणा की नजर से देखते है? हमें तुच्छ समझते हैं। हम भी अपनी इस मजबूरी को रहने नहीं देंगे, समाज को पुरानी परम्परा से मुक्त कर, नयी परम्परा से जोड़ेंगे। हम नयी राह की खोज करेंगे। जिस पर चलकर हमारा जाति समुदाय सम्मान के साथ सिर उठाकर चल सकेगा। बेरोजगारी और गरीबी से हम मुक्त हो सकेंगें। इस तरह हमारी अगली पीढ़ियों का भविष्य सुरक्षित बन सकेगा। ऐसी नयी राह की खोज जागरूक लोगों ने कर ली।"[210]

दलित वर्ग वर्तमान में मैला ढ़ोने के कार्य को न करने में सशक्त है। वह समाज में पुरानी परम्पराओं में जकड़ित न रहकर अपने पुश्तैनी काम से निजात पा रहा है। एस॰ आर॰ हरनोट की कहानी 'एम॰ डॉट कॉम' में गांव में रहने वाली महिला पात्रा की भैंस मर जाती है तो उसके घर पर कोई नहीं होता है। वह अपनी जाति के 'परसे' नामक व्यक्ति के घर जाती है ताकि उसकी मरी हुई भैंस को उठाकर ले जाए। मैला ढ़ोने व मृत पशुओं को उठाने का काम सदियों से निम्न

जाति ही करती आई है परंतु 'परसा' मैला ढ़ोने के कार्य से मना कर देता है और कहता है-"माफ करियो भाभी, तू तो म्हारी आपणी घर की है। कोई बामण-कनैत आया होता तो आंगण में खड़े बी नी होणे देता। अब म्हारे घर में न कोई बूट-जोड़ा गांठता है, न पशु फेंकता है। बच्चे नी मानते। बड़ा तो शिमला में अफसर बण गया है। छोटा बस टेशन पर दूक्वान करता है। तेरे को कैसे नी पता भाभी। मैं तो अब कहीं न आता न जाता।"[211] 'परसा' अपने दलित समाज में मैला ढ़ोने के कार्य को लेकर सशक्त हुआ है कि वह अब भविष्य में यह कार्य नहीं करेगा और उसके बच्चे भी इसका विरोध करते है। वह महिला सुनकर हैरान हो जाती है। 'परसा' आगे कहता है- "वो देख उधर, मेरा ठीया होता था। लड़कों को बथेरा समझाया कि मुए इसको तो रैहणे दो। पर कहां माने। अपणे काम से इतणी नफरत, जैसे ये बामण म्हारे से करते है। तोड़ दिया उसको। सारा समान बी पता नहीं कहां फेंक दिया। वहां अब लैटरींग बणा दी।"[212] 'परसे के घर से लौट कर महिला को 'बुधराम' नाई देख लेता है। वह सारी बात 'बुधराम' को बता देती है। 'बुधराम' 'परसे' के लड़के 'महेन्द्र' की दुकान पर ले जाता है। 'बुधराम' समझाता हुआ कहता है-"ताई ! देख उधर, गांव के जितने भी आदमी है, उनके नाम पशुओं के साथ लिखे हैं। वो देख मेरा बी नाम है (उंगली से बताने लगा)। जब कोई पशु मरता है या पैदा होता है, इसमें दर्ज हो जाता है। फीस लगती है उसकी। अगर तेरा नाम होता, मिनट में ई-मेल करके महेन्द्र शहर से दो-चार आदमियों को बुला देता है और शाम तक तेरी भैंस ओबरे से बाहर।"[213] 'महेन्द्र' बताते हुए कहता है-"माता जी। आपका नाम हमारे पास नहीं है। न ही पशुओं की लिस्ट। पंडतो-ठाकुरों ने तो पहले ही अपना रजिस्ट्रेशन करवा दिया है। आप भी करवा लो।" महिला 'बुधराम' को चिन्ता जताते हुए हैरान व परेशान होकर पूछती है-"पर बुधराम, वो भैंस को कैसे फैंकगे?" 'बुधराम' कहता है-"ताई। वो लोग शहर से अपनी गाड़ी में आएंगे। तेरी भैंस को ओबरे से बाहर निकालेंगे। ले जाएंगे। उसे काटेंगे, पर फेकेंगे नहीं। जैसा म्हारे चमार करते थे। मांस, हड्डियां, खाल सब अपने साथ लेते जाएंगे। न खेतों में गंदगी रही, न गिद्दों और कुतों का हुड़दंग।"[214]

दलित समाज अपने आपको सशक्त करके मैला ढ़ोने के कार्य से मुक्त हो रहा है। ताकि वह अपने जीवन में परिवर्तन ला सके। आज दलित वर्ग शिक्षा के माध्यम से न्याय प्राप्त करने में सक्षम है। सूरजपाल चौहान की कहानी 'बहरूपिया' में 'विशाल' दलितों को डॉ॰ अंबेडकर के विचारों में विश्वास रखने में प्रेरित करता है कि शिक्षा के माध्यम से ही जीवन में विकास लाया जा सकता है- "दलित समाज के लोग बाबा साहेब डॉ॰ अम्बेडकर की शिक्षाओं को अपनाकर और पढ़-लिखकर आज कहां से कहां पहुंच रहे हैं-आप लोग भी उनके बताये मार्ग पर चलना शुरू कर दो, अपने बच्चों के हाथों से झाड़ू छीनकर दूर फेंक दो और कलम थमा दो, देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना व पाखण्ड आदि से दूर रहो।"[215] सुशीला टाकभौरे की कहानी 'सिलिया' में भी सिलिया शिक्षा के प्रति सशक्त होती हुई विचार करती है-"झाड़ू नहीं कलम। हां, कलम ही उसके समाज का भाग्य बदलेगी। वह खूब पढ़ेगी। सम्मान के उच्च शिखर पर पहुंचेगी। वह एक चिन्गारी है जो मशाल बनकर अपने समाज की प्रगति के मार्ग को प्रकाशित करेगी।"[216] 'सिलिया' अपने मन में दृढ़ संकल्प लेती हुई शिक्षा के माध्यम से परंपराओं का पतन करने हेतु कहती है-"मै बहुत आगे तक पढ़ूंगी, पढ़ती रहूंगी। उन सभी परम्पराओं के मूल कारणों का पता लगाऊंगी, जिन्होंने हमें समाज में अछूत बना दिया है। मै विद्या, बुद्धि और विवेक से अपने आपको ऊंचा साबित करके रहूंगी। किसी के सामने झुकूंगी नहीं। न ही कभी अपना अपमान सहन करूंगी।"[217] सुशीला टाकभौरे की कहानी 'बदला' में 'कल्लू' को स्कूल में 'सवर्ण जाति के सहपाठी तंग करते है उसे मारते पीटते है तथा जाति के आधार पर उसका अपमान करते है। 'कल्लू' द्वारा सवर्ण जाति के प्रति विद्रोह की भावना का निर्णय लेता हुआ कहता है-"वे लोग मेरे साथ स्कूल में खेलते है तब भी चिढ़ाते है। हमेशा जात-पात निकालते है। मेरा मजाक उड़ाते है, मुझे मारते हैं। इसलिए मैंने भी सोच लिया था एक दिन उनका खूब जमकर मजा चखाऊंगा, उनसे बदला लूंगा....।"[218]

ब्राह्मा नंद की कहानी 'संकल्प' में 'मोहन' द्वारा शिक्षा के माध्यम से दलित सशक्तिकरण को जागरूक किया है। गांव में जातिगत भेदभाव के कारण 'हीरा डोम' मोहन से अपने प्रति हुए भेदभाव को स्पष्ट करता हुआ कहता है-"भईया हम

अछूत क्यों हैं? हमें मंदिर में पंडित क्यों नहीं जाने देता है। स्कूल का मास्टर साहब हमें सबसे पीछे क्यों बिठाता है?" 'मोहन' 'हीरा' की बातों में सशक्तिकरण व जिज्ञासा प्रवृति को देखकर जवाब देता है-"तुम इसलिए अछूत तो क्योंकि तुम्हारे अन्दर एक आग है। ऐसी आग जिसे ठाकुर छू ले तो जल कर भस्म हो जाएगा। तुम्हारे बाबा मेहनती थे, स्कूल के मास्टर को डर है कि यदि तुम पढ़ाई में उतनी ही मेहनत कर लो तो उससे ज्यादा बुद्धिमान बन जाओगे। इसलिए स्कूल का मास्टर तुम्हें सबसे पीछे बैठाता है और रहा सवाल मंदिर का, तो बामनों को मंदिर में जाकर क्या मिलता है? कुछ नहीं। इसलिए तुम पढ़ाई करो और उस मास्टर से ज्यादा बुद्धिमान बनो। समझे।"[219] 'मोहन' शहर जाने को तैयार होता है तो गांव की 'कंतो काकी' का बेटा 'शिवा' 'मोहन' के साथ शिक्षा ग्रहण करने के लिए शहर जाना चाहता है जिससे 'शिवा' शिक्षा के माध्यम से सशक्त होकर बाबा साहेब के विचार शिक्षा, संगठन, संघर्ष उसके जीवन का मूल मंत्र बन गया और शिक्षा पूरी होते ही वह 'मोहन भईया' को कहता है-"भईया मैं प्रण लेता हूँ कि मैं अपने समाज एक व्यक्ति को जरूर शिक्षित करूंगा, दलित समाज पर अन्याय होता देख कभी भी समझौतावादी दृष्टि नहीं अपनाउंगा।"[220]

रत्न कुमार सांभरिया की कहानी 'बात' में भी 'सुरती' का पति अपने बेटे 'राधू' की शिक्षा के प्रति जागरूक एवं महत्त्व को स्पष्ट करता हुआ कहता है-"गरीब के लिए पढ़ाई ही उसकी पूंजी होती है। अपना बेटा पढ़ाई में अव्वल है। अफसर बनेगा। कितने किसट उठा लेना। राधू के हाथ में किताब रखना।"[221] डॉ॰ अम्बेडकर ने दलितों को एक नारा दिया था- 'शिक्षित बनो, संगठित रहो, संघर्ष करो।' डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर के इस नारे से प्रेरणा पाकर दलित वर्ग सशक्तिकरण की ओर अग्रसर है। सुरेश मारुतिराव मुले की कहानी 'कहाँ गया तुम्हारा स्वाभिमान' में शैक्षणिक रूप से जागरूकता एवं अन्याय पर न्याय का विरोध करना दर्शाया गया है कि शिक्षा के माध्यम से सशक्त होकर अपने जीवन में सुधार लाना चाहिए। कहानी में गांव के अन्दर 'मारूती पताके' गुरु जी की नियुक्ति गांव के माध्यमिक स्कूल में होती है। कहानी में 'सुलोचना' पर 'राजाराम' 'मराठा' बुरी नजर रखता है और अपने जाल में फंसा लेता है। गुरु जी को इस बात का पता चलता है वह

'सुलोचना' के घर जाकर उसके भाई 'बलवीर' को शिक्षा के माध्यम से सशक्त करता हुआ कहता है-"बाबा के स्वाभिमानी विचारों को अपनाकर समाज में सम्मान से जीना चाहिए। बलवीर तुम तो बी०ए० तक पढ़े हो, घर में अम्बेडकरी विचारों को अपनाने की सीख देनी चाहिए और जो कोई हम पर अत्याचार करता है। उसका विरोध करने की शक्ति और ज्ञान को दलितों में जगाना चाहिए। कब तक ऐसा ही हमारे मां-बहनों की इज्जत लुटते रहे और हम आंख मूंदे बैठे रहे। कब तक हमारा समाज गुलामी के जंजीरों में कड़े रहे। क्यों आप युवा पीढ़ी संघटित होकर ऐसे कुकर्त्यों का विरोध नहीं करते? शिक्षित अशिक्षितों का मार्गदर्शक बने, उन्हें कानून और जीवन के महत्त्व का परिचय करायें, उनके मन में अपनों के प्रति स्वाभिमान जगाए।"[222]

दलित समाज में पीढ़ियों से जहां अशिक्षा चली आ रही है वर्तमान में दलित शिक्षा को पाने के अधिकार से जागरूक होकर महत्त्व को पहचान रहे है कि शिक्षा के कारण ही वह अपने जीवन में सदियों पुरानी गुलामी की मानसिकता एवं अन्याय के प्रति संगठित होकर संघर्ष कर सकते है जिससे वे न्याय व वंचित अधिकारों को प्राप्त कर सकें। राजेन्द्र बड़गूजर की कहानी 'हमारी जमीन हम बोएंगे' में 'राजकमल' द्वारा शिक्षा के माध्यम से दलित सशक्तिकरण को जागरूक किया है वह कहता है- "हमारे समाज को अगर किसी चीज की जरूरत है तो वह है शिक्षा, शिक्षा और केवल शिक्षा। शिक्षा के बिना ऐसे कोई भी साधन नहीं है, जिसकी मार्फत हमारा विकास हो सकता हो।"[223] सुशीला टाकभौरे की कहानी 'नयी राह की खोज' में 'लालचन्द' शिक्षा के प्रति जागरूक होकर समाज में चेतना जगाना चाहता है कि जीवन में साक्षरता का प्रसार सबसे पहले जरूरी है। वह शिक्षा के महत्त्व पर प्रकाश डालता हुआ बताता है-"भैया, सबसे पहले अपने बच्चों को पढ़ाओ। बिना पढ़ाई के कुछ नहीं हो सकता। पढ़ाई के लिए भी सिर्फ बच्चों पर भरोसा न करो, बल्कि मां-बाप खुद भी अपनी जिम्मेदारी को समझो। बच्चों की पढ़ाई का खर्च, उनकी जरूरतें, पढ़ाई के लिये समय और सुविधा सबका इन्तजाम किया जाये। तभी हमारे बच्चे पढ़ सकेंगे। मेहमाननवाजी में खर्च, मटन, मछली, तेल, मसालों का खर्च, शराब पीने-पिलाने का खर्च हमें नहीं करना चाहिए, तभी बचत

करके हम बच्चों की पढ़ाई में कुछ कर पायेंगे। यह जो हमारा बारहों महिना, सालों साल, जिन्दगी भर कर्जा लेना और ब्याज भरते रहना चाहता है, इसमें हमारी पसीने की कमाई का कितना रुपया जाता है। हम हिसाब नहीं लगा पाते हैं। इसलिये हमें बात-बात में दौड़ कर कर्ज लेने की आदत को बदलना होगा।"[224] 'लाल चन्द' बताता है कि शिक्षा से ही जीवन सुधारना हमारा कर्त्तव्य है। शिक्षा हमारे जीवन में अति आवश्यक है वह अपनी बात को जारी रखते हुए आगे बताता है-"अगर अचानक मेहमान आ जाये तो हम कर्ज जरूर ले लेते है और अगर बच्चों की कॉपी-किताब खरीदना हो या उनकी फीस भरना हो तब कर्ज नहीं लेते है। तब यह सोच लेते है कि हम तो गरीब हैं, लाचार हैं बच्चों की पढ़ाई का खर्च नहीं उठा सकते हैं-ऐसा करना और सोचना नासमझी है। बच्चे ही हमारा भविष्य है, हमारी अगली पीढ़ी है। उनका जीवन सुधारना हमारा कर्त्तव्य है। बंगाली कहावत है-'रोटी कम खाओ मगर अपने बच्चों को पढ़ाओ' यह बात हमारे पूरे समाज ने सीखना चाहिए।"[225]

दयानंद बटोही की कहानी 'सुरंग' में दलित छात्र शिक्षा के माध्यम से अपने अधिकारों के लिए लड़ते है। 'सुरंग' कहानी में शिक्षा के अंतर्गत दलित छात्रों के प्रति किए जाने वाले भेदभाव को देखा जा सकता है। डॉ॰ विष्णु दलित छात्र को रिसर्च करने नहीं देते है दलित छात्र अपने प्रति अन्याय का विरोध करता हुआ कहता है-"डॉ॰ साहब आप भूल जाएँ कि मै हरिजन हूँ, गुलाम हूँ। पराधीनता की जंजीर टूटनी है। आज तक आप जैसे तानाशाह ने अंधेरे में हम लोगों को रखा है। अब मै पूछता हूँ-आप क्यों रिसर्च नहीं करने देंगे?" वह आगे कहता है-"डॉ॰ साहब आप भूल जाएं कि आप लोग अंधेरे के बीच कुतर-कुतर कर हम दलितों को खाते डकारते रहे हैं, अब पचेगा ही नहीं आपको।"[226] डॉ॰ विष्णु दलित छात्र को एम॰ए॰ सेकेंड क्लास होने के कारण रिसर्च करने नहीं देते है और उसे वाईस चांसलर के पास जाने के लिए कहते है दलित छात्र विरोध करता हुआ कहता है-"क्यों जाऊँ?"

"क्योंकि आप सेकेंड क्लास एम॰ ए॰ है। मार्क्स कम है रिसर्च नहीं कर सकते।'

'केवल मैं या और कोई। सभी डिपार्टमेंट में थर्ड क्लास रिसर्च कर रहे हैं मेरा तो सेकेंड क्लास है, केमिस्ट्री, फिजिक्स, हिस्ट्री इकानामिक्स में। अब अन्याय के खिलाफ विरोध करता हुआ करता है-"डॉ॰ साहब यह भूल जाइये कि आपसे दया की भीख मांग रहा हूँ। मैं पूछता हूँ आप लोग हरिजन कल्याण का ढिंढोरा क्यों पीटते हैं, आरक्षण कहां दे रहे हैं। जब लोग अच्छा कर रहे हैं तो आप कल्याण क्या करेंगे? चौदह प्रतिशत सुरक्षित का फतवा क्यों देते है? सरकार को तथा मानवता की आंख में धूल झोंक रहे हैं। मुझे आप रिसर्च नहीं करने दे कोई बात नहीं। लेकिन कोटा आपको पूरा करना है।"[227]

दलित छात्र सामाजिक न्याय की अवधारणा को स्पष्ट करता है कुछ छात्र मिल कर वाइस चांसलर के पास जाते है। आरक्षण के हक में अपनी बात को स्पष्ट करते हुए पूछते है-"बात है हम लोग जानने आए हैं हरिजनों को सुविधा सिर्फ कागज पर है या व्यवहार में।

"सर ये गरीब हरिजन जाति के हैं हिंदी में सेकेंड क्लास एम॰ ए॰ पास हैं, विभागाध्यक्ष रिसर्च करने नहीं दे रहे जबकि अन्य लोग (हरिजन छोड़कर) हिंदी अलावा विज्ञान में जो थर्ड क्लास हैं रिसर्च कर रहे हैं।'

वाइस चांसलर 'मिश्रा' ने कहा-'क्या इसमें भी थर्ड क्लास रिसर्च कर रहे हैं। "जी हाँ लीना, नरोत्तम सिंह थर्ड क्लास है रिसर्च कर रहे हैं? सेकेंड क्लास तो कई हैं इनसे कम अंक वाले।"

वाइस चांसलर 'मिश्रा' ने न चाहते हुए भी लिखा-"हेड प्लीज कंसीडर द केस"[228] दलित विद्यार्थी लम्बे समय के संघर्ष के बाद न्याय प्राप्त कर लेता है वह अपने अधिकारों की मांग करता है वह न्याय के प्रति जागरूक व सशक्त है वह स्पष्ट करता है- "आप भी भानू जैसा कान में शीशा उड़ेलना चाहते हैं, द्रोणाचार्य जैसा अंगूठा का दान चाहते हैं। मगर याद रखिये। अंधेरे का सैलाब फाड़कर अपना हक लेंगे। आप जैसे कुटिल लोगों ने ही तो हरिजन-दुर्जन का भेद बनाने में सहयोग दिया है। आपका हम घेराव करेंगे।"[229] विश्वविद्यालय में छात्रों की भीड़ देख कर 'डॉ॰ विष्णु पाखना' माफी मांगते हुए कहने लगे-"आप लोग घेराव क्यों कर रहे हैं? आखिर आप सब हरिजन तो नहीं है? आप इनका साथ क्यों दे रहे हैं?" डॉ॰

विष्णु अपनी जातिगत संकीर्ण मानसिकता में रह की ही यह सब बातें कहता है। सभी छात्र जाति को लेकर शिक्षा में हुए अन्याय का विरोध करता है। एक छात्र ने गरजते हुए कहा-"आप अपने विभाग में थर्ड क्लास रिसर्च करा रहे हैं, हरिजन सेकेंड क्लास भी रास न आया। रामनगीना की पत्नी सुरेश की बहन कौन क्लास एम॰ ए॰ में लायी है।"

चारों तरफ शोर गुंजने लगता है-"मुर्दाबाद ! मानवता जिन्दाबाद। हम सब एक है।" एक छात्र 'रघुनाथ सिंह' डॉ॰ विष्णु द्वारा किए गए अभिनय को देखकर विद्रोह करते हुए कहता है- "बस-बस रहने दीजिए अपना फिलासफी, अनुमति देते हैं या आऊं।" 'डॉ॰ विष्णु' द्वारा किए गए अन्याय का विरोध कर दलित छात्र न्याय को प्राप्त कर लेता है-'डॉ॰ विष्णु' धीरे से कहता है-"ठीक है इन्हें रिसर्च करने की अनुमति देता हूँ लाइये एपलीकेशन और कुछ ही क्षणों में भीड़ इधर से उधर होने लगी।"[230]

'शंकरलाल' मीणा मानते हैं शिक्षित होकर व वैज्ञानिक सोच को अपनाकर ही दलित सशक्तिकरण हो सकता है। दलित वर्ग के प्रति हुए अन्याय व गुलामी का विरोध करते हुए स्पष्ट कहा है-"भीतरी अन्याय और बाहरी गुलामी से मुक्ति के साधन अलग नहीं है या यूं कहा जा सकता है कि भीतरी अन्याय जो ऐतिहासिक और दूसरे कारणों से दलित पिछड़े आदिवासी समाज के साथ होता रहा है, उसका प्रतिशोध शिक्षित होकर, तार्किक व वैज्ञानिक सोच अपनाकर संगठित रहते हुए साहस के साथ किया जा सकता है।"[231] श्योराज सिंह बेचैन की कहानी 'शोध प्रबंध' में 'प्रो॰ प्रताप सिंह' शिक्षा को माध्यम बना अपनी विद्यार्थी 'रीना' को शोषण का शिकार बनाता है और उसे किसी से कुछ न कहने के लिए कहता है। 'रीना' जब अपने प्रति हुए अन्याय को लेकर 'प्रो॰ प्रताप सिंह' के घर जाती है, तो प्रो॰ प्रताप सिंह उसके अचानक आने की वजह पूछता है। तो रीना विरोध करती हुई स्पष्ट कहती है-"कुछ भी तो ठीक नहीं है, और उसकी वजह आप हैं। आप दो-दो चेहरे रखते हैं। सच कहूँ तो गिरगिट की तरह रंग बदल रहे हैं आप।"[232] 'प्रो प्रताप सिंह' 'रीना' की बातों से थोड़ा परेशान हो जाते है। उनके द्वारा किया गया 'रीना' के प्रति अन्याय को दबा कर रखना चाहते है कि समाज में उन्हें इस अन्याय,

शोषण को लेकर हम दोनों को अनेक समस्याओं का सामना कर पड़ सकता है। 'रीना' मन में क्रोध और आक्रोश को लेकर प्रो॰ प्रताप को बताती है-"असलियत जान लेंगे बस्स। इससे ज्यादा तो नहीं, और फिर आपने मुझसे प्रेम किया। बड़े-बड़े दार्शनिक उद्धरणों के साथ सम्बन्धों को पुष्ट किया है, कि प्रेम में न उम्र देखी जाती है, न रंग-रूप न जाति और न धर्म। बस एक मात्र दिल की दिलदारी देखी जाती है। तो उन दिनों आपके सीने से बाहर निकली पड़ रही दिलदारी को अब कौन सा सांप सूंघ गया।"[233]

'प्रो प्रताप सिंह' समाज के डर से 'रीना' को बहुत समझाता है। परन्तु स्वयं 'रीना' के प्रति न्याय के करने के लिए असमर्थ है। 'रीना' अपनी सहेली 'अर्चना' को स्वयं पर हुए अत्याचार व अन्याय के बारे में सब कुछ बताती है। 'रीना' की सहेली 'अर्चना' उसे जागरूक व सशक्त करते हुए आग-बबूला हो उठती है और 'रीना' से कहती है-"रीअली बड़ा धूर्त है यह प्रो॰ का बच्चा, अब इसके लिए सीधी उँगली से घी नहीं निकलेगा। उँगली टेढ़ी करनी ही पड़ेगी। पहुँचने दो इसे डिपार्टमेंट में, मैं चूलंगी मनवीर को साथ लेकर। जब इसकी गंजी खोपड़ी पर एक दर्जन चप्पलों की बरसात होगी तब पता चलेगा इस कमीने कुत्ते को, कि असल में नारी मुक्ति है किस चिड़िया का नाम।" 'अर्चना' आक्रोश से भर जाती है और समस्या पर विचार विमर्श करने लगती है और आगे कहती है-"बदमाश कहीं का हम लड़कियों को पश्चिम की संस्कृति में सराबोर कर माडर्न बनने की सलाह देते हैं और खुद सामंती भेड़िया बने रहना चाहते हैं। ये लोग अपनी खोपड़ियों में कितना भी यूरोपियन लिटरेचर ठूँस लें, परन्तु भेजे से दकियानूसी संस्कारों का कूड़ा कभी बाहर नहीं निकाल पाएँगे।"[234]

समाज में आज गुरु-शिष्यों के सम्बन्धों पर भी कंलक लग चुका है। 'रीना' अन्याय के खिलाफ संघर्ष करती हुई न्याय पाने के लिए जागरूक होती है और निर्णय लेती है-"मेरा निश्चय यह है कि अब मैं संघर्ष करूंगी, 'महिला आयोग' और एस॰ सी॰ एस॰ टी॰ कमीशन' से लेकर स्त्री संगठनों तक में जाऊँगी पर गर्भपात नहीं कराऊँगी। संघर्ष में आत्महत्या करनी पड़ी तो प्रो॰ को जिम्मेदार साबित करके मरूँगी। कोई भी पत्रकार होगा दलित पक्ष सुनने वाला। सभी अखबारों को

प्रोफेसर के प्रेम पत्र सौंप दूँगी।[235] 'रीना' जागरूक होकर थोड़े समय बाद 'प्रो० प्रताप सिंह' के घर जाती है। 'रीना' को देखकर 'प्रो० प्रताप सिंह' प्रसन्न होते है और सोचते है कि वह शोध प्रबंध तैयार करके लायी है वह कहते है-"आओ रीना आओ।" 'रीना' बिना कुछ कहे आगे बढ़ती है और प्रो० प्रताप सिंह की गोद में बच्चा रख देती है और कहती है। "यह लो अपना प्रबंध।"[236] और पूरे जोर से गाल पर तमाचा जड़ देती है और सामने वकील, डॉक्टर और पुलिस, अर्चना, मनवीर और दर्जनों दलित छात्र आक्रोश में मुट्ठियाँ बाँधे सामने से आते है। 'रीना' अपने प्रति अन्याय को लेकर सशक्त होकर 'प्रो० प्रताप सिंह' के नकाब का पर्दाफाश करती है। वह अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होकर संघर्ष होकर समाज को चुनौती देती है।

इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानी ने दलित वर्ग की सामाजिक-राजनीतिक स्थितियों, उनके शोषण-उत्पीड़न तथा अन्याय के प्रति उनके संघर्ष और प्रतिशोध को गहराई से प्रस्तुत किया है। ओम प्रकाश गाबा दलितों के प्रति सामाजिक न्याय को लेकर अपने कथन की पुष्टि इस प्रकार से करते है-"सामाजिक जीवन में सब मनुष्यों की गरिमा स्वीकार की जाएं, स्त्री-पुरुष, गोरे-काले या जाति, धर्म, क्षेत्र इत्यादि के आधार पर किसी व्यक्ति को बड़ा-छोटा या ऊँचा-नीचा न माना जाए, शिक्षा व उन्नति के अवसर सबको समान रूप से सुलभ हो और सब लोग मनुष्य-मनुष्य के नाते मिल-जुलकर साहित्य कला, संस्कृति और तकनीकी साधनों का प्रयोग कर सके।"[237] दलित वर्ग आज समाज में रोजगार के पक्ष को लेकर अन्याय के प्रति सर्तक है। वह न्याय के प्रति जागरूक होकर अपने अधिकारों की मांग करता है। रत्नकुमार सांभरिया की कहानी 'काल' में 'मिनखू' गांव में अकाल पड़ने के कारण गरीब 'मिनखू' सरकार द्वारा दी गई सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए जागरूक है 'मिनखू' गरीब व अनपढ़ होने के कारण भी अपने प्रति हुए अन्याय को लेकर जागरूक है। जब वह गांव में काम मांगने जाता है तब उसे काम नहीं दिया जाता है तब विरोध करता हुआ कहता है-"खूब मखौल है। जिनको भूख है, उनको काम नहीं है।" 'मिनखू' घर आकर अपनी पत्नी 'मल्ली' से कहता है-"राज के आदमी राज को उल्लू बना रहे हैं, मल्ली। गरीब के लिए भेजी इमदाद और हमदरदी गरीब

तक पहुंच ही नहीं रही है। रोटी उन्हें खिलाई जा रही है, जिन्हें अपच है। दस्त है।"[238] ब्राह्मनंद की कहानी 'संकल्प' में 'मोहन' अपने गांव के लोगों को उच्च जाति के खेतों में काम न करने में जागरूक करता है कि दलित समाज कब तक गुलामी की जंजीरों में जकड़ा रह कर काम करता रहेगा। 'मोहन' अपने गांव के 'तपेसर यादव' को जागरूक करता हुआ कहता है- "आखिर कब तक चलेगा ऐसे? हम लोग कुछ करते क्यों नहीं है। तुम्हें नहीं लगता कि हमें मिलकर रहना चाहिए और अपने ऊपर हो रहे अत्याचारों का विरोध करना चाहिए।" 'मोहन' आगे कहता है- "मुझे इसी बात का डर था कि तुम लोग उनके लिए अब अपनी जान तक की बाजी लगा सकते हो, जो तुम्हारा सर्वनाश करने पर तुले हैं। तुम्हारी बुद्धि पर भी आखिर जमींदारों का कब्जा हो गया, जो कल तक हमारे खेत के मालिक थे, अब वे हमारी बुद्धि के मालिक हो गए है। वाह रे तपेसर। आज तुझे अपने लोग दुश्मन दिखने लगे और बामन तेरे करीबी हो गए, इसी का फल तो तुम लोग आज तक भोग रहे हो।"[239]

दलित वर्ग पर सदा ही उच्च जाति के लोगों का कब्जा रहा है कि उनके खेत हड़प लिये जाए उन्हें रोजगार के साधन उपलब्ध न करवाये जाएं ताकि सदा ही दलित सवर्णों के गुलाम रह सकें। उनकी छत्रछाया में ही काम करके अपना गुजारा चला सकें। 'मोहन' द्वारा गांव में सवर्ण जाति के फैले आंतक को लेकर विद्रोह पर उतर आता है और चिल्लाते हुए कहता है-"तुम लोग अगर आज मुझे रोकने की कोशिश करोगे तो मुझसे बुरा कोई नहीं होगा, आज मैं उन भेड़ियों को सबक सिखा के रहूँगा।" 'मोहन' ठाकुर के लठैत को ढ़ेर कर दूसरा प्रहार ठाकुर पर करता है और कहता है-"ठाकुर ! अब करेगा गांव वालों पर अत्याचार? जलायेगा हम दलितों के खेत और झोपड़ियां?" गांव वाले युद्ध स्थल पर पहुंच कर चिल्लाने लगे- "मोहन भईया इस राक्षस को मत छोड़ना। मार डालो इसे।" "हाँ-हाँ मार डालो इसे।"[240]

सामाजिक न्याय की अवधारणा के अंतर्गत प्रावधान बनाने से समाज की मानसिकता पर कोई असर नहीं पड़ता। सदियों से चली आ रही परम्परा को तोड़ने के लिए आगे होकर संघर्ष करना होगा। 'मोहन' गांव वालों को समझाते हुए कहता

है- "हम शोषित इसलिए है, क्योंकि हमें शोषण सहने की आदत पड़ गई है। जब भी किसी भी खेत जलता है, आप लोग भगवान की मर्जी कहकर अपना पिंड छुड़ा लेते हैं। अब ऐसा नहीं चलेगा। हमें आज ही निर्णय करना है कि आज से हम ऊँची जात वालों के घर का कोई काम नहीं करेंगे, अपने बच्चों को उनके खेतों में काम करने की जगह स्कूल भेजेंगे।"[241] सुशीला टाकभौरे की कहानी 'नयी राह की खोज' में भी दलित वर्ग को कार्य के प्रति जागरूक कर सशक्तिकरण किया जाता है। कहानी में 'रामचन्द' दलित समाज के परिवर्तन के लिए उन्हें जागरूक करता हुआ कहता है-"अब हमारे समाज का भविष्य उद्योगों की सफलता में है-हम उद्योगों से जुड़ेंगे। हमारे बच्चे उद्योगी-व्यवसायी बनेंगे, सम्पत्ति हमारे हाथों में खेलेगी, हम भी लखपति-करोड़पति बनेंगे, बड़े लोगों, सवर्णों की तरह शान से बंगले और कोठियां बनाकर रहेंगे। अपने समाज के नाम के साथ जुड़ा शूद्र अछूत शब्द हम खुद अपने हाथों से हटायेंगे। हमारे समाज की महिलाएं सम्मान के साथ रहेंगी। हमारे बच्चों को खाने-पीने, पहनने-ओढ़ने और पढ़ने-लिखने के खर्च में भी कोई तंगी नहीं होगी।"[242]

श्योराज सिंह बेचैन की कहानी 'होनहार बच्चे' में सवर्ण वर्ग रोजगार के स्तर पर दलित वर्ग के प्रति अन्याय करते है वे अपनी संतानों को आरक्षित कोर्ट से अनुसूचित जाति का प्रमाण-पत्र बनवा कर नौकरी दिलवाना चाहते है। साक्षात्कार में कमीशन का एस०सी० सदस्य जाति प्रमाण-पत्र देख कर कहता है-"इन्हें एस० सी० का बैनीफिट नहीं मिलना चाहिए।"

'विभूति पाण्डे' विरोध करते हुए पूछते है-"क्यों?"

"इन्होंने एस० सी० होने की पीड़ा नहीं भोगी है। ये जन्म से एस० सी० नहीं है?"[243] कहानी में प्रवक्ता के साक्षात्कार के अंतर्गत 'पुष्पा वाल्मीकि' से रोजगार के स्तर पर जातिगत भेदभाव को लेकर बातें पूछी जाती है 'पुष्पा' सशक्त होकर रोजगर के प्रति अन्याय को लेकर जागरूक है। साक्षात्कार के अंतर्गत निम्न संवाद से प्रकट हो जाता है -

"अब तक नौकरी क्यों नहीं की?"

"नहीं मिल सकी सर?"

"अनुभव क्यों नहीं है तुम्हारे पास?"

"नौकरी ही नहीं तो अनुभव कहाँ से आए सर?"

"सुना है एस०सी० में भी करोड़पति बन गए हैं म० प्र० सरकार के दलित एजेण्डा के तहत।"

"बन गए होंगे सर, हम तो अभी आप के भवन जैसा घर नहीं बना पाए हैं। कार, कम्प्यूटर, फ्रिज, ए०सी० कुछ भी नहीं है हमारे पास सर।"

"कहाँ से आती हो?"

"गोहाना, हरियाणा से।"

"सुना है वहाँ सफाई करना छोड़ कर औरतें जाट-गूजरों की औरतों का मुकाबिला करने लगी है।"

"मुकाबिला नहीं सर, उनसे आगे हैं पर पढ़ाई-लिखाई में और नौकरियों में।"[244]

राजेन्द्र यादव दलित वर्ग के सामाजिक न्याय को लेकर आरक्षण पर विचार करते है कि दलित वर्ग जो सदियों से पीड़ित है। आरक्षण के आधार पर ही शिक्षा व नौकरी में न्याय प्राप्त कर सकते है। दलित वर्ग को वर्तमान में सामाजिक न्याय प्रदान करने के लिए आरक्षण देकर ही सामाजिक न्याय प्रदान किया जा सकता है वे कहते है- "अब सवाल उठता है कि यह होगा कैसे? आरक्षण को कई लोग बहुत बुरा समझते है। कहते हैं कि आरक्षण इस समस्या का हल नहीं है। लेकिन मैं मानता हूँ कि आरक्षण एक हद तक इस समस्या का हल जरूर है। आरक्षण अगर नहीं होगा, तो दलित और स्त्री सामाजिक न्याय की लड़ाई कैसे लड़ेगें? यह असमान शक्तियों की लड़ाई है। कमजोरों की ताकतवरों से लड़ने के लिए कोई सहारा तो चाहिए। जिनको आपने कभी बढ़ने नहीं दिया, जिनको आपने कभी अवसर नहीं दिया, उन्हें शिक्षा और नौकरियों आदि में आरक्षण नहीं मिलेगा, तो वे कभी आगे आ ही नहीं सकते। अगर आप उनसे कहेंगे कि पहले शिक्षा लो, पहले मेरिट लाओ, पहले काम का अनुभव लाओ, तब तो आप इन चीजों की दौड़ में उनसे

इतना आगे निकल चुके होंगे और इनका रूप इतना बदल चुके होंगे कि वे तो आपके बराबर कभी आ ही नहीं सकते। जब तक आप यह अवसर नहीं देंगे, वे आगे नहीं आ सकेंगे। आरक्षण से आगे आये बहुत से दलित अफसर आज दिखायी देते हैं। उनको सम्मान मिलता हो या न मिलता हो, लेकिन वे दिखायी तो देते हैं। आगे तो आये हैं। इसलिए आरक्षण जरूरी है।"[245]

भगवान् गव्हाडे की कहानी 'एकलव्य का अंगूठा' में 'रामप्रसाद यादव' के साथ रोजगार स्तर पर उसी के गुरु द्वारा अन्याय दर्शाया है। यूनिवर्सिटी के राजनीति शास्त्र विभाग के प्रो॰ ओमप्रकाश वर्मा' 'रामप्रसाद यादव' के स्थान पर 'सुयोधन चौधरी' को नौकरी में नियुक्त करने का वचन देते है कि दलित 'रामप्रसाद यादव' को विभाग में प्रवक्ता के पद पर नहीं रखा जाता। 'रामप्रसाद यादव' अपने गुरु का कहना इंकार नहीं कर सकता उनकी हर आज्ञा का पालन करता है। 'सुयोधन चौधरी' 'रामप्रसाद यादव' के चरित्र पर लांछन लगाने के लिए अपनी प्रेमिका 'शीला कुलकर्णी' को घर में अकेला छोड़ देता है। 'सुयोधन चौधरी' 'रामप्रसाद यादव' के प्रति जातिगत भेदभाव व ईर्ष्या करता है। 'रामप्रसाद यादव' की कुछ समझ नहीं आता और उस लड़की को दूर करते हुए कहता है-"यह आप क्या कर रही है शीलाजी! मुझे माफ कीजिए मैं उन मर्दों जैसा नहीं हूँ जो मौका देखते ही हुस्न पर सब कुछ न्यौछावर कर देते हैं। कम से कम आप अपने नाम को इस तरह बदनाम मत कीजिए। आप यही चाहती है न कि आपके यार की नौकरी सलामत रहे? तो ठीक है मैं नहीं जाऊँगा इन्टव्यू के लिए। आपकी जानकारी के लिए एक बात बता देता हूँ, मैंने अपने द्रौणाचार्यों को यह वचन दिया है कि मैं इन्टरव्यू को नहीं जाऊँगा। इस एकलव्य का अंगूठा उन्होंने पहले ही काट लिया है। उन्होंने मेरी श्रद्धा और विश्वास को छीन लिया है। प्लीज आप मेरे चरित्र को मत छीनिए।"[246]

समाज में दलित वर्ग के प्रति आरक्षण के आधार पर भी अन्याय होता है। उन्हें शिक्षा व रोजगार के क्षेत्र में आरक्षण देने के पक्ष में नहीं होते है। ताकि वह समाज में सामाजिक न्याय प्राप्त न कर सके। जाति-व्यवस्था के अंतर्गत दलितों की स्थिति में परिवर्तन न लाने की बजाय सामाजिक न्याय को पक्षों को भी नकारा जाता है। शंकरलाल मीणा आरक्षण के तथ्य की पुष्टि करते हुए अपने विचार प्रस्तुत

करते है-"आरक्षण के आधार पर भरती नहीं होनी चाहिए। ऐसा कहने वालों से पूछा जाना चाहिए कि भाईजान, उन विभागों के बारे में आपका क्या विचार है, जहाँ नब्बे प्रतिशत भरती रिश्वत से और दस प्रतिशत सिफारिश से होती है? कौन नहीं जानता कि सेवाओं में नियुक्तियों और तबादलों का असली आधार क्या होता है। ठेका लेने या टेंडर छुड़ाने जैसी शैली में नियुक्तियाँ हों, तो कोई आपत्ति नहीं, क्योंकि यह साधनसंपन्न वर्ग को माफिक आ रहा है, पर आरक्षण के आधार पर कोई आ गया तो, समझते है कि देश रसाताल में चला जायेगा।"[247] समाज में मनुष्य धन के प्रति बावला हो गया है वह अपने जीवन में धन को ही महत्त्वता प्रदान करता है जिसके अन्तर्गत सामाजिक न्याय का अस्तित्व टिक नहीं पाता है जिससे अन्याय को बढ़ावा मिलता है-"सामाजिक न्याय का मकसद हासिल हो, इसके लिए नितांत जरूरी है कि साधनसंपन्न आदमी आम आदमी के मुकाबले ज्यादा तरजीह न पा सके। सभी जगह धन ही एकमात्र आधार न हो। यह धन का ही तो प्रभाव है, जो वैधानिक व्यवस्था को गांधी जी के तीन बंदरों में तबदील कर देता है और वह गूंगी, बहरी और अंधी हो जाती है। धन के बलबूते पर एक समानांतर व्यवस्था के निर्माण का कुचक्र प्रगति पर है, जिसमें अंततोगत्वा कमजोर खत्म हो जायेगा।"[248]

दलित वर्ग जो सदियों से अपमानित होता आया है। निम्न जाति के कहे जाने वाले लोगों को कभी भी समाज में मान-सम्मान प्रदान नहीं किया गया। सदियों से ही इन पर अत्याचार होते आये है। परन्तु इक्कीसवीं सदी के अंतर्गत दलित वर्ग शिक्षा व रोजगार के माध्यम से सशक्त होने के कारण अपने मान-सम्मान की रक्षा के लिए भी जाग्रत है। एस०आर० हरनोट की कहानी 'सवर्ण देवता दलित देवता' में कहानी का पात्र शिक्षित होकर सवर्ण जाति के जुल्म-अत्याचारों के विरुद्ध विरोध करता है। शिक्षा के स्तर पर सशक्त होने पर अपने पिता का भी विरोध करता है कि हम सवर्ण जाति के गुलाम न बनकर स्वयं अपने आत्मसम्मान व अस्तित्व की रक्षा करें। वह कहता है-"मैं आपसे माफी चाहता हूँ पिता जी। सच तो यह है कि आपकी इज्जत कोई नहीं करता। आप भले ही बड़े शहनाई मास्टर हों, पर है कोली-चमार ही। आपकी इज्जत इसलिए बनी रही कि आपने कभी इनके आगे

जुबान नहीं खोली। दरवाजे पर टुकड़ा दिया, चाहे दहलीज के बाहर, आप कबूलते रहे। इनकी नफरत की नजरों ने आपको कभी जख्मी नहीं किया। देवता के साथ इतने सालों से चल रहे हैं आप। एक रुपया दिया तो वह सिर-माथे। दो रुपये दिए तो भी कबूल। खेत-खलिहान में सुलाया वह भी ठीक है, ऐसे ही रात बितानी पड़ी तो वह भी गनीमत। पर क्या हमारी बिरादरी ये सब सहने के लिए ही है....? हमारी न कोई इज्जत, न परतीत। न हम अपने लिए कुछ मांग सकते हैं, न बोल सकते है। हम इस तरह इनसे दबकर कब तक रहेंगे?"[249]

सुशीला टाकभौरे की कहानी 'बदला' में भी गांव के लोग 'कल्लू' की नानी का अपमान करते है उसकी सारे गांव में दाईपना का काम करती है। सवर्ण जाति के लोग 'कल्लू' के झगड़े से उसकी नानी का बहुत अपमान करते है तो 'कल्लू' की माँ अपनी 'छौआ मां' के अपमान का विरोध करती हुई कहती है-"जिन्दगीभर मेरी मां ने तुम्हारी सेवा की, इसके बदले में तुम यही पुरस्कार दे रहे हो? अपनी खुद की फिकर छोड़कर वह पूरे गांव की फिकर करती फिरे है। दिन नहीं देखे-रात नहीं देखे, ठंड नहीं देखे- बरसात नहीं देखे, दौड़ती चली जाये है तुम्हारे घर। तुमरो काम करके ही लौटे है.... जई इज्जत करो हो तुम उसकी....?" वह अपनी मां को भी डांटते हुए अपने आत्मसम्मान की रक्षा करने के लिए समाज का विरोध करती हुई आगे कहती है.... "देख लियो अपनो गांव?.... मरी जाये है गांव के लिये।... रात दिन जिनकी गुलामी करे है, का दे रहे हैं तेको? ये कहीं अपने हो सके हैं?... इनके दिल में पाप भरो है.... ये कोई पे दया नहीं करे..."[250] 'कल्लू' का झगड़ा सवर्ण जाति के लड़कों से हो जाता है। क्योंकि वे 'कल्लू' को जाति के आधार पर अपमान व अत्याचार करते है 'कल्लू' उनका विरोध करता है तो सवर्ण जाति के लोग 'कल्लू' को मारने के लिए उसके घर आ जाते है। 'कल्लू' का बप्पा उनके द्वारा अन्याय व अपमान को सहन न करते हुए विरोध करते है और कहते है-"सालों.... तुम्हारी तो, ऐसी की तैसी...। बहुत इज्जत की है हमने तुम्हारी...। अब देखना, हम भी तुम्हें चैन से नहीं रहने देंगे। अभी तुमने हमको देखा नहीं है...। सालों... कमीनों... डरने वालों को डराते हो... तुम्हारी तो..." 'छौआ माँ' के मन का भी ज्वालामुखी फूट पड़ता है वह भी विरोध करती

हुई कहती है-"बेईमानों... कमीनों.... तुम्हारा नाश हो जायेगा। तुम्हारे पेट में काट चलेगी... तुम्हारा काल मुंह हो जायेगा...तुमको मरई माता खा जायेगी.... पापियों, तुम्हारा पाप तुमको ले डूबेगा...सत्यानाशियों...."[251]

समाज में जाति के आधार पर भी अत्याचार बढ़ रहे है जिससे दलित वर्ग अब सहन न करके विरोध करता है। कहानी में 'कल्लू' के बप्पा जातिगत अन्याय को सहन न करके विद्रोह की भावना को व्यक्त करते है-"अब मैं देखूंगा, कौन उसे हाथ लगाता है मेरा बेटा अब किसी से नहीं डरेगा। हम भी उनसे बदला लेंगे।"

'छौआ मां' भी अपने मन में जाग्रति लाकर सशक्त होते हुए कहती है-"अब हम किसी से नहीं डरेंगे... हम भी ईंट का जवाब पत्थर से देंगे। वे शेर हैं तो हम सवाशेर बनकर रहेंगे। एक दिन ऐसा आयेगो कि लोग हमसे डरेंगे। मेरो कल्लू इसी गांव में रहेगो, शेर बनकर।"[252] श्योराज सिंह बेचैन की कहानी 'रावण' में भी सवर्ण वर्ग के प्रति इसी तरह का आक्रोश, अत्याचार व अपमान का बदला लेने के लिए 'मूल सिंह' और उसकी पत्नी 'मीना सशक्त व जागरूक होते है, कि गांव के सवर्णों द्वारा उनके साथ किया गया जातिगत उत्पीड़न का विरोध करने के लिए गांव में वापिस लौटते है-'मूल सिंह' सशक्त होकर कहता है- "गांव नाय जांगो। काए नांय जांगो, गांव का वामन वनिए नु को ही है चमार चुहिडनु को कछु नायं है गाम में? का गांव में वे ही रहंगे? हम डर-डर के गामन्ते भागत रहेंगे और वे हमारे घर मड़इयनु पै कब्जा करत रहगे। नांय अब जे ज्यादा नायं होइगो। हम गाँव में हू जायंगे शहर में हूँ रहेंगे। असली लड़ाई तो अपने आगन में जाइके लड़ी जाइगी। हमें अपने मोर्चा पै लौटनो है।"[253]

वर्तमान में भारतीय सामाजिक व्यवस्था में दलित शिक्षित होकर एवं रोजगार के क्षेत्र में उच्च पद पर विराजमान होने के बावजूद भी जातिगत संकीर्ण मानसिकता वाले सवर्ण जाति के लोग उनका अपमान करने से बाज नहीं आते है। परंतु आज दलित वर्ग में नई चेतना आई है। सूरज पाल चौहान की कहानी 'जाति' में 'चेतन सिंह' शाखा कार्यालय में जूनियर असिस्टेण्ट है और वही हैड क्लर्क 'पी०सी० शर्मा' भी काम करता है। 'पी०सी० शर्मा' अपने से उच्च पद के स्तर पर 'चेतन सिंह'

को जाति से सम्बन्धित पूछताछ करता रहता है-'चेतन सिंह' ब्रांच मैनेजर 'सुनील डुलगच' से गुस्से में आकर शिकायत करता हुआ कहता है-"सर, यह पी०सी० शर्मा समझता क्या है, बामन का चौ.... जब भी मिलता है मेरी जाति ही पूछता है, कई बार उसे बता चुका हूँ कि शिड्यूल्ड-कास्ट हूँ, लेकिन हरामी कुरेद-कुरेदकर मेरी उप-जाति के बारे में जानना चाहता है... सर, इसने फिर कभी पूछा तो साले के होश ठिकाने लगा दूँगा।"[254] कहानी में ब्रांच मैनेजर जो स्वयं दलित जाति से सम्बन्धित होते है वह जाति के कारण अपमान को लेकर सभी को बुला लेते है तो शाखा कार्यालय में कार्यरत 'सुखदेव सिंह' 'पी० सी० शर्मा' को झिड़कते हुए कहता है- 'ओए पंडत दे पुत्तर, तेनू हौर कम भी है कि नयी, 'माईयावे हरेक दी जात ही पूछदा फिरदा हैं.... तूने क्या जात पूछन दा ठेका ले लिता है?" ब्रांच मैनेजर 'चेतन' सिंह से कहते है-"चेतन बताओ मेरे सामने पडंत को अपनी जाति, सच बताने में आखिर बुराई क्या है... मैं चाहता हूँ कि रोज-रोज की यह आपस की चकल्लस आज इस ब्रांच से समाप्त हो ही जाए।"

"सर....।"

"हाँ-हाँ, बताओ-बताओ, झिझको मत... मैं भी तो शिड्यूल्ड-कास्ट हूँ।"

'पी० सी० शर्मा' सुनकर हैरान हो जाता है और कहता है- "सर आप भी कैसी बातें करते हैं, आप तो इस ऑफिस के मैनेजर है।"[255] जाति के कारण हुए अपमान को लेकर 'चेतन सिंह' 'पी०सी० शर्मा' के अन्याय का विरोध करते हुए कहता है- "शर्मा जी, मेरे पिता ने प्रेम-विवाह किया है, वह खटीक हैं और मेरी माँ पण्डिताइन, अब आप ही बताएँ कि मै खटीक हूँ या पण्डित।"[256]

समाज में निम्न जाति वाले दलित वर्ग को ही अपनी जाति के कारण अन्याय का सामना करना पड़ता है क्योंकि समाज में वही अछूत माना जाता है। निम्न जाति के लोगों को ही निम्न कार्य करने का अधिकार है। उच्च जाति द्वारा उनका शोषण होना सार्थक है दलित वर्ग को नीचा दिखाना, अत्याचार करना, तिरस्कृत करना एवं उत्पीड़न केवल दलित वर्ग के हक में लिखा गया है। उच्च वर्ग की मानसिकता में दलित वर्ग की महिलाओं को शोषण का शिकार बनाना उनके चरित्र पर लांछन लगाना उच्च जाति में निहित है। समाज में निम्न जाति को ही

चरित्रहीन माना जाता है। एस०आर० हरनोट की कहानी 'सवर्ण देवता दलित देवता' में पुजारी की दूसरी पत्नी बावड़ी से पानी लेकर आ रही होती है। जिस पगडंडी से पुजारिन आ रही होती है उसी पगडंडी पर दलित लड़का सामने से आ रहा होता है। दोनों में से कोई पीछे न हट कर एक दूसरे को कहते है तो पुजारिन सिर पर उठाई पानी की टोकणी को नीचे पटक देती है और दलित लड़के के स्पर्श का अभिनय करके चिल्लाने लगती है। तो दलित लड़का सशक्त होकर सहजपूर्वक पुजारिन से पूछता है- "छोटी पंडताणी पहले तू एक बात तो बता। मैं तो तेरे में छूआ तक नहीं और तैने इतनी गाली-गलौज शुरू कर दी। उस दिन जो तू अपनी गौशाला के पिछवाड़े, जगरू चमार के लड़के की टांगों के बीच नंगी पड़ी थी, उससे तो तेरे को छोत लगी ही नहीं?"[257] सुशीला टाकभौरे की कहानी 'छौआ मां' में 'छौआ मां' गांव में दाईपना का काम करती है। निम्न जाति की होने के कारण उसकी बेटी 'तुलसा' को अपमानित करते हुए गांव वाले कहते है कि तेरी बेटी क्या बामन-बनिया की बेटी है जो गांव का गन्दा काम वह नहीं करेगी। 'छौआ मां' अपने अपमान को लेकर एवं गांव वालों से स्वयं के लिए चरित्रहीन कहलाना उसे आक्रोश से भर देता है और वह कहती है- "मेरे ईमान धरम को यही ईनाम दियो है सबने?"

"गांव वाले ऐसी कहे है-मेरी बेटी बामन बनिया की छोरी है। इनके मुंह में आग लग जाये, इनको शरम नहीं आये? मोहे पाप लगाये हैं... इनको सत्यनाश हो...." 'छौआ मां' के अन्दर ज्वालामुखी फूट जाता है वह सशक्त होकर पूरे गांव का सामना करती हुई आगे गुस्से से अपने प्रति हुए अपमान को लेकर कहती है-"अरे, इस गांव की एक-एक बात को मैं जानूं हूँ। सबको कालो-पीलो मैं जानूं हूँ। बामन-बनिया कौन से भले होय है? सब में कालो-पीलो भरो है। वे हमको बुरा कहें हैं, वे तो हजार गुना बुरे होय है...।"[258]

सामाजिक तौर पर जातिभेद के कारण ही निम्न जाति वालों के मान-सम्मान को ठेस पहुंचाई जाती है। 'छौआ मां' चरित्रवान और स्वाभिमानी स्त्री है। वह गुस्से से पूरा विरोध करके ऊँची आवाज में बोलती है-"बड़े कहलाने वाले, तुम सबके घर की पोलपट्टी मैं जानूं हूँ.... रात दिन पूजा पाठ करने वाले कितने ही पंडितों की काली करतूत मैं जानू हूँ। रात दिन व्रत उपवास करने वाली पतिव्रता बनी,

कितनी ही बदमाश कुलटा लुगाइयों की काली करतूते में जानूं हूँ। गांव की गरीब बेबस लड़कियों और औरतों पर अत्याचार-बलात्कार करने वाले ऊँची जात के कितने ही पापी पाखण्डियों को मैं जानूं हूँ"[259]

समाज में उच्च जाति के लोग अपने सत्य से परिचित होकर भी निम्न जाति पर ही लांछन लगाते है। 'छौआ मां' अपने मानाधिकार के प्रति सशक्त है वह उच्च जाति का विरोध करना जानती है। 'छौआ मां' उच्च जाति के मान सम्मान व चरित्रवान के ढोंग का पर्दाफाश करती हुई कहती है-"मैंने अभी तक सबके पाप अपने दिल में छिपाकर रखे हैं। अब मैं कोई से नहीं डरूंगी।.... अरे, जिनकी क्वारी बेटियों के पेट मैंने गिराये हैं, वे मैं से कौन से मुंह से बात कर सके हैं? बड़े कहलाने वाले, जिनके घरों की विधवा बहू-बेटियों के पेट मैंने चुपचाप गिराये, समाज में उनकी इज्जत, उनकी नाक बचाई-तब तो मेरे पांव पड़-पड़ के नहीं थकते थे.... आज मेरी मोड़ी को और मोहे लांछन लगा रहे हो.... अरे, हम तुम्हारे जैसे नीच नहीं है...."[260]

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानी 'अम्मा' में नायिका 'अम्मा' चरित्रवान व स्वाभिमानी स्त्री है जो पखाना साफ करने का कार्य करती है। इस कहानी में 'अम्मा' की मालकिन मिसेज चोपड़ा का प्रेमी एकांत में 'अम्मा' का शोषण करने का प्रयास करता है, परन्तु अम्मा उसका विरोध कर उसकी झाड़ू से पिटाई कर देती है। 'अम्मा' अपने अस्तित्व व आत्मसम्मान की रक्षा करते हुए गुस्से में मिसेज चोपड़ा से कहती है-"भैण जी इस हरामी के पिल्ले से कह देणा --- हर एक औरत छिनाल ना होवे है।"[261]

रत्नकुमार सांभरिया की कहानी 'डंक' में भी 'सतना' पुजारी 'मांगी' का अपमान करता है परन्तु मांगी 'सतना पुजारी' का विरोध करती है और मान सम्मान व अस्तित्व की रक्षा करती है। 'मांगी' के पति खेरा' ने 'सतना पुजारी' की मदद के लिए बीस हजार रुपये दिये थे। 'मांगी' का पति 'खेरा' अपनी पत्नी को 'सतना पुजारी' के घर से बीस हजार रुपये लेने के लिए भेजता है तो 'सतना पुजारी उसे अपमानित करता है। 'मांगी' आक्रोश में आकर विरोध करती है-"पुजारी के जाये हो न। पूरे बीस हजार गिन दो हमारे।"

"नीच तेरे कीड़े पड़ेंगे।"

'मांगी' की बातें सुनकर पुजारी उस पर अत्याचार व अपमानित करते हुए कहता है-"जाती है कि लाठी निकालूं।"

'मांगी' बातें सुनकर आक्रोश से भर जाती है और अपने अपमान व अन्याय का विरोध करती हुई सतना पुजारी को युद्ध क्षेत्र में शत्रु के समान ललकारती हुई कहती है-"जा निकाल कर ला लाठी। मैं देखती हूँ, तुझे। मरद हो, सामने से वार करते मेरे आदमी पर।"[262]

'सतना पुजारी' द्वारा किए गए अन्याय को लेकर सारा गांव 'मांगी' के साथ होता है गांव वाले 'सतना' जैसे शैतान को घेर लेते है और 'सतना बिल में घुसे सांप सा अपने घर में दुबका होता है। सुशीला टाकभौरे की कहानी 'सिलिया' में 'सिलिया' सुदृढ़ और पक्के इरादों वाली है जिसने सामाजिक अन्याय सहे है परंतु 'सिलिया' जातिगत अन्याय से निकल कर सम्मान से जीना चाहती है और जागरूक व सशक्त होकर कहती है- "और फिर दूसरों की दया पर सम्मान....? आपने निजत्व को खोकर दूसरों की शतरंज का मोहरा बनकर रह जाना... बैसाखियों पर चलते हुए जीना....? नहीं, कभी नहीं....। हम क्या इतने भी लाचार हैं, आत्म सम्मान रहित है? हमारा अपना भी तो कुछ अहंभाव है। उन्हें हमारी जरूरत है, हमको उनकी जरूरत नहीं। हम उनके भरोसे क्यों रहें... अपना सम्मान हम खुद बढ़ायेंगे....।"[263]

सुरेश मा॰ मुले की कहानी 'दूसरी शादी' में 'नारायण' अपनी पत्नी 'द्राक्षायणी' को अपने कार्य के प्रति व मान सम्मान के प्रति जागरूक एवं सशक्त करता हुआ बताता है- "ये कहां का नियम है कि चमार चप्पल ही बनावे, कुम्हार, मटकी ही बनावे, ढोर चमड़ा ही का काम करे। यह नियम तो हम इनसानों ने ही बनाएं है। मैं बारहवीं कक्षा तक पढ़ा हूँ फिर समाज में सम्मान जनक जिन्दगी जीने की इच्छा मन में जागी इसलिए चप्पल बनाना छोड़कर, कपड़े सीना सीखा। आज मैं टेलर तो कहलाता हूं फिर भी लोग मुझे, चमार का, नारायण के नाम से ही जानते है। यह तो देश की विडंबना है। इन नियमों को बदलने के लिए, पहले हमें बदलना होगा। हमें अपनी मानसिकता बदलनी होगी। हमें यह आशा रखकर जीना चाहिए कि पुस्तैनी काम भी एक ना एक दिन, हम छोड़ देंगे और खूब पढ़ेगें तभी हमें समाज में सम्मान मिलेगा।"[264] सुशीला टाकभौरे की कहानी 'नयी राह की खोज'

में 'हरिचन्द' दलित वर्ग को जागरूक व सशक्त करता है। दलितों के मसीहा बाबा भीमराव अम्बेडकर जिन्होंने दलितों को भी संविधान के अन्तर्गत अधिकार प्रदान किए। शिक्षा के प्रति सशक्त किया। 'हरिचन्द' बाबा भीमराव अम्बेडकर का आभार व्यक्त करते हुए समुदाय को जागरूक करता हुआ कहता है- "हम सभी अपने देश के प्रति निष्ठा रखते है। हम अपने देश के संविधान का आदर करते हैं। संविधान निर्माता भारतरत्न डॉ॰ अम्बेडकर के प्रति हम आभारी हैं जिन्होंने संविधान के द्वारा हमें समता-स्वतन्त्रता का अधिकार देकर सम्मान का जीवन जीने की राह बतायी है। उन्होंने हमें नया जीवन देकर हमारी जिन्दगी में रोशनी फैलाई है। हम सभी प्रतिज्ञा करते हैं। हम हमेशा डॉ॰ अम्बेडकर जी द्वारा बताई राह पर आगे बढ़ते रहेंगे।"[265]

ब्राह्मानंद की कहानी 'संकल्प' में भी 'मोहन' शिवा को बाबासाहेब की बताए मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है कि वह अपने मान-सम्मान व अस्तित्व की रक्षा करे। 'मोहन' कहता है-"शिवा अगर तुम प्रण लेना चाहते ही हो तो बाबा साहेब के चित्र को देखकर प्रण लो। सबसे पहले बाबा साहेब ने ही हमारे समाज को हिंदू जड़ता से मुक्त कराने का आह्वान किया था। इसलिए तुम बाबा साहेब के बताए गए समता के रास्ते पर चलो, कभी किसी निर्दोष व्यक्ति को मत सताओ, भेदभाव को जन्म देने वाली हर बात का विरोध करो।"[266]

भगवान दास का मानना है कि दलित वर्ग शिक्षा के स्तर पर जागरूक होकर आगे बढ़ रहे है। वे रोजगार के स्तर पर भी सशक्त हो रहे है परन्तु दलित समाज में जातिगत अपमान को लेकर अधिक विरोध नहीं करते है। दलितों को अपने मान-सम्मान के लिए भी उतना ही सशक्त होना पड़ेगा जितना वे अन्य क्षेत्रों में सशक्त हुए है या हो रहे है। "नीची कही जाने वाली जातियों के जो लोग पढ़-लिखकर, अच्छी नौकरियाँ पाकर, अच्छे ढंग से कमाने खाने लगते हैं, उनका आर्थिक स्तर तो बदल जाता है, लेकिन सामाजिक स्तर पर उनके साथ होने वाला जाति-आधारित भेदभाव जारी रहता है। यानी समाज में उनका 'स्टेटस' (प्रतिष्ठा) तो है, पर 'डिग्निटी' (मानाधिकार) नहीं है। ऊँची कही जाने वाली जातियों के लोग उन्हें उतना मान भी नहीं देते, जितना अपनी जाति के गरीबों को देते हैं। इसमें कुछ गलती इस भेदभाव के शिकार उन लोगों की भी है जो अपनी आर्थिक दशा सुधार लेने पर अपने मानाधिकार के लिए नहीं लड़ते।"[267] प्रो॰ चमनलाल

दलित वर्ग का जाति सूचक नामों से किया गए अपमान को लेकर जागरूक व सशक्त करते है कि समाज में उच्च जाति के लोगों के आगे दलित वर्ग को संकोच न करके गर्व महसूस करना चाहिए। प्रो॰ चमनलाल कानून व्यवस्था के अंतर्गत भी अपने विचार प्रस्तुत करके समस्या का समाधान करना चाहते है इक्कीसवीं सदी के लिए दलित एजेण्डा के तहत कहते है-"दलितों को अपने जाति-वाचक नाम प्रयोग करने में संकोच नहीं करना चाहिए। उन्हें दुनिया के काले रंग के लोगों की तरह, जिनका नारा है- 'काला ही सुन्दर है', अपनी पृष्ठभूमि पर गर्व महसूस करना चाहिए। भंगी, मेहतर, चमार या चाण्डाल आदि के उपमान उन्हें उतने ही गर्व से प्रयोग करने या बताने चाहिए, जितने गर्व से कोई शर्मा, गुप्ता या सिंह बताते हैं। अन्तिम तौर पर तो सभी तरह की जाति-वाचक नामों का प्रयोग समाप्त हो जाना चाहिए। राज्य को भी ऐसे कानून बनाने चाहिए, जिससे जातिवाचक नाम का प्रयोग इस तरह न हो सके, जिससे कुछ जातियां कुछ अन्य जातियों से उच्च प्रतीत हो।"[268]

हरिशरण गौतम की कहानी 'अन्तर्द्वन्द्व' में 'केदारनाथ' अनुभाग में सबसे वरिष्ठ अधिकारी है और सभी कनिष्ठ परन्तु जाति से उच्च। सभी कर्मचारी दलित 'केदारनाथ' पर व्यंग्य करते हुए अपमान करते है। 'केदारनाथ' अपमान का विद्रोह इस प्रकार से करता है-"तुम मुझसे झगड़ा करना चाहते हो?" "नहीं मैं तुम्हारे जैसे नीच व्यक्ति से झगड़ा नहीं करना चाहता। झगड़े की शुरूआत तुमने की है परन्तु इतना समझ लो कि मैं तुमसे किसी मामले में पीछे नहीं रहूंगा। जब मैं अपने पर उतर जाऊंगा तो डॉ॰ त्यागी, निदेशक, जो तुम्हारे सहपाठी भी है, तुम्हें नहीं बचा पायेंगे। आइन्दे से यदि इस प्रकार की कच्ची जबान बोल दिया तो मैं तुम्हारी जबान काट लूंगा।"[269]

वर्तमान में दलित वर्ग प्रत्येक क्षेत्र में परंपराओं रूढ़ियों को नकारते हुए अपनी मानसिकता में परिवर्तन ला रहे है। शिक्षा और रोजगार के स्तर पर जागरूक होकर पांरपरिक बेड़ियों को तोड़ रहे हैं। समाज में दलित वर्ग धार्मिक स्तर पर भी सशक्त हुए है। धर्म के नाम पर हुए अंधविश्वास से अब दलित वर्ग को चेतना आई है जिस हिंदू धर्म ने दलितों को दास बनाए रखने की परम्परा चलाई है दलित उन परंपराओं की बेड़ियों को तोड़कर आगे निकल रहा है। जयराज खुने उस्मानाबादे

की कहानी 'दावत' में 'दगडोवा जाघव' गांव में बेटी के विवाह तय होने पर पांच बकरे की बलि देकर देवी-देवताओं को संतुष्ट करने की परंपरा है जिसे वह निमंत्रण देने आता है तो कहानी का पात्र सशक्त होकर कहता है-"देवी देवताओं के नाम समाज में बरसों से चल रहा यह सिलसिला अंधविश्वास और मूर्खता का प्रमाण है। इसे हमारे धर्म की मान्यता नहीं। मैं बुद्ध धर्म का अनुयायी हूँ। पढ़ा-लिखा हूं इसलिए ऐसे अंधविश्वास पर चल रहे कार्य में शामिल होकर मैं मूर्ख नहीं बनना चाहता। आगे भी कभी मुझे ऐसी दावत देने मत आओ।"[270] कहानी में 'वाघ साहेब' भी धार्मिक स्तर पर सशक्तिकरण को प्रकट करते हुए 'जाधव' को समझाते हुए कहते है- "इसका कहना बराबर है। अगर आप खुद बाबा साहेब का अनुयायी मानते हो, जय भीम करते हो तो आपको पुराने रीति-रिवाज को त्याग देना चाहिए। बाबा साहेब की दिखाई राह पर चलकर अपने आप में बदलाव लाना जरूरी है।"[271] एस०आर० हरनोट की कहानी 'सवर्ण देवता दलित देवता' में कहानी का पात्र धर्म को लेकर दलितों के प्रति अन्याय को लेकर सशक्त होता है कि धर्म के नाम पर आडंबर और पाखण्ड को लेकर पुजारियों की स्थिति के बारे में सोचता हुआ कहता है-"गांव में इन सवर्ण पुजारियों और गूरों का ही तो बोलबाला है। वर्चस्व है। देवता के नाम पर ऐश...। आप इनसे कभी मिलें तो जानेंगे कि अपने परिक्षेत्र में ये भी किसी मन्त्री या अफसर से कम नहीं। कोई नौकरी नहीं। चाकरी नहीं। बस पीढ़ी-दर-पीढ़ी देवता के पुजारी या गूर। गांव में सबसे ज्यादा हैसियत है इनकी। साहूकारी अलग चलती है। दबदबा... वह अलग। और दलित? वे इनकी नौकरी-चाकरी में। देवता के द्वारपालों की तरह सवर्ण। ये तो घर में भी राजे और देवता के साथ बाहर भी। रोटी तब तक नहीं खाएंगे जब तक बकरे का मीट और बोतर भर दारू न मिले। देवता के नाम पर सब कुछ माफ...।"[272]

एस० आर० हरनोट की अन्य कहानी 'जीनकाठी' में भी धर्म के प्रति सशक्त होकर दलित वर्ग ने न्याय प्राप्त किया है। दलित वर्ग धार्मिक स्तर पर सवर्ण जाति का विरोध करते है। इस कहानी में 'सहजराम' जो दलित है। पहाड़ी समाज में भुण्डा नामक विचित्र उत्सव पुराने समय में हर 12 वर्ष के बाद मनाए जाने की परंपरा प्रचलित होती है। परंतु गांव में अब यह उत्सव डेढ़ सौ साल बाद मनाया जा रहा है। इस विचित्र उत्सव के दौरान दलित को पंडित बनाया जाता है। इस

धर्माचार के तहत ऊँची पहाड़ी से नीचे की ओर एक लम्बा रस्सा बांध दिया जाता है। इस बेड़ा को पार करने के लिए 'सहजू' निर्णय लेता है। तहसीलदार 'भगवानदत्त शर्मा' इस उत्सव को आयोजित करता है। बेड़ा पार करते समय 'सहजू' दलित वर्ग के प्रति हुए अन्याय का विरोध करता हुआ कहता है-"कैसा देवता...? कौन-सा देवता? मैं तो एक अछूत हूं। कठपुतली मात्र हूं। सारे पुण्य तो तुम सभी के लिए है। अपने स्वार्थ के लिए ऊंचे लोगों ने भी क्या-क्या परपंच रचे है? जानते हो शर्मा जी, मैं इस घड़ी तो सबसे बड़ा पंडित हूं। देवता हूं और सभी का ईश्वर। लेकिन नीचे उतरते ही मैं सहजू अछूत... और तुम सभी उच्च कुल के पंडित और ठाकुर। तुम्हारे जो ये देवता आज मेरी विजय पर नाच रहे हैं, मुझे भगवान मान रहे है, कल इन्हें मेरी परछाई से भी दोष लगने लगेगा। अपवित्र हो जाएंगे ये !!"[273] 'भगवानदत्त शर्मा' 'सहज राम' को समझाते है कि आज तो तुम हमारे भगवान हो जो तुम कहोगे, वही होगा। 'सहजू' कहता है-"सोच लो शर्मा जी।"

"हमारी जमीन लौटा दो शर्मा जी। हम यहीं बसना चाहते हैं। इसी गांव में, जहां से आप लोगों ने हमारे पूर्वजों को भगाया था।"[274] उत्सव के आयोजन के दौरान विधायक और मुख्यमंत्री 'सहज राम' से प्रसन्न होते है और उसे लोकसभा के सदस्य के लिए राजनीति में चुन लेते है जिससे दलित का राजनीतिक सशक्तिकरण भी होता है। मुख्यमंत्री और विधायक निराश खड़े शर्मा जी की पीठ थपथपा कर कहते है- "भई शर्मा जी, मान गए आपको। इतना बड़ा आयोजन तो आप ही करवा सकते थे। सांप भी मर गया और लाठी भी सलामत। आपने हमारी तो एक बड़ी दुविधा मिटा दी। क्या नाम था इसे बेड़ा का...? हां, सहजू... सहज राम। क्यों विधायक जी यही था न... उसने तो कमाल कर दिखाया... हमें तो लोकसभा के लिए कोई दलित मिल ही नहीं रहा था... भाई शर्मा जी कमाल कर दिया आपने।"[275] समाज में दलित वर्ग सशक्त होकर प्रत्येक स्थिति में परिवर्तन ला रहा है और समाज को एक नई चुनौती भी दे रहा है। सदियों से परंपरागत गुलामी की जंजीरें अब टुटने लगी है।

5.3 निष्कर्ष :

इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानी में लेखकों ने दलित वर्ग के उत्पीड़न की गहराईयों की जड़ तक पहुँच कर समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है एवं साथ-साथ दलित वर्ग के तिरस्कृत व अपमानित जीवन के विरोध को लेकर सशक्तिकरण को भी उजागर किया है। दलित वर्ग जिसे समाज में 'कुचला हुआ' माना जाता है। आज वर्तमान में भी दलित वर्ग के प्रति अनेक प्रकारों से समाज में अन्याय व उत्पीड़न बरकरार है। संविधान, कानून व सामाजिक न्याय के तहत भी दलित वर्ग आज इक्कीसवीं सदी में भी अपमानित जीवन जीने के लिए विवश है। संविधान के अंतर्गत दलित वर्ग के अन्याय की समस्याओं का भले ही अंत हो चुका है परन्तु सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत ज्यों की त्यों दलित वर्ग के प्रति अन्याय कायम है। चाहे वो अस्पृश्यता के स्तर हो, चाहे वो मैला ढ़ोने के स्तर पर हो, चाहे वो शिक्षा व रोजगार के स्तर पर हो, चाहे वो मानाधिकार के स्तर पर हो, चाहे वो अन्तर्जातीय विवाह के स्तर पर हो केवल और केवल दलित वर्ग ही उत्पीड़ित किया जाता है।

इक्कीसवीं सदी की प्रगति होने के साथ-साथ मनुष्य की जाति-व्यवस्था के निम्न वर्ग के प्रति प्रगति असंभव प्रतीत होती है। इक्कीसवीं सदी में दलित शिक्षा व रोजगार के माध्यम से अल्प मात्रा में सशक्त हुए है। शिक्षा के अंतर्गत दलित वर्ग को अपने अधिकारों के प्रति चेतना आई है। दलित वर्ग धीरे-धीरे अपने जीवन की हर स्थिति में परिवर्तन ला रहे हैं। परन्तु दलित वर्ग समाज में स्वयं समानता का अधिकारी नहीं बन सकता जब तक समाज के अन्य जाति के लोग दलित वर्ग को समानता का दर्जा नहीं देंगे। समाज में जातिगत मानसिकता रखने वाले लोग भारतीय संविधान, कानून व सामाजिक न्याय की अवधारणा में विश्वास न रखकर जातिभेद में विश्वास रखते है। भारतीय समाज में रहकर ये लोग जीवन की प्रत्येक परिस्थितियों में परिवर्तन लाना चाहते हैं परन्तु मानसिक स्थिति में परिवर्तन लाना नहीं चाहते। सवर्ण जाति के लोग जाति व्यवस्था को समाप्त करने के पक्ष में नहीं है। समाज में जाति-व्यवस्था के कारण दलित-शोषण को समाप्त करने के लिए लोगों को मानसिक स्तर पर फैली संकीर्णताओं को मिटाना होगा, जिससे दलितों को अन्याय व शोषण का सामना नहीं करना पड़ेगा और समाज में दलित भी

मान-सम्मान का अधिकारी होगा। भारतीय संविधान के अंतर्गत समानता व सामाजिक न्याय की अवधारणा लिखित रूप में सीमित न रहकर व्यवहारिक रूप में लागू होने पर ही दलित-सशक्तिकरण सही मायनों में संतोषजनक कहा जाएगा।

संदर्भ सूची :

1. रमेश उपाध्याय, संज्ञा उपाध्याय, उत्पीड़ितों का मानाधिकार, पृ॰ 36
2. कंवल भारती, दलित विमर्श की भूमिका, पृ॰ 22
3. रमेश उपाध्याय, संज्ञा उपाध्याय, उत्पीड़ितों का मानाधिकार, पृ॰ 44
4. रत्नकुमार सांभरिया, खेत तथा अन्य कहानियाँ, पृ॰ 104
5. श्योराज बेचैन, भरोसे की बहन, पृ॰ 33
6. सुशीला टाकभौरे, संघर्ष, पृ॰ 10
7. वही
8. एस॰ आर॰ हरनोट, जीनकाठी तथा अन्य कहानियां, पृ॰ 69
9. वही, पृ॰ 70
10. चित्रा मुद्गल, लपटे, पृ॰ 105
11. वही, पृ॰ 105
12. रत्नकुमार सांभरिया, खेत तथा अन्य कहानियाँ, पृ॰ 65
13. सुरेन्द्र कटारिया, सामाजिक प्रशासन (कल्याण प्रशासन), पृ॰ 38
14. सूरजपाल चौहान, नया ब्राह्मण, पृ॰ 75
15. प्रत्यूष रंजन बालव, अस्पृश्यता एवं विधिक प्राविधान, पृ॰ 2
16. सूरजपाल चौहान, नया ब्राह्मण, पृ॰ 118
17. वही
18. वही, पृ॰ 66
19. मनीषा भल्ला, आज भी छुआछूत के 154 प्रकार, बयान पत्रिका अगस्त, 2010, पृ॰ 8
20. सुशीला टाकभौरे, संघर्ष, पृ॰ 52
21. मनीषा भल्ला, आज भी छुआछूत के 154 प्रकार, बयान पत्रिका अगस्त, 2010, पृ॰ 9
22. सूरजपाल चौहान, नया ब्राह्मण, पृ॰ 104
23. सुशीला टाकभौरे, संघर्ष, पृ॰ 28
24. वही
25. सूरजपाल चौहान, बदबू, पृ॰ 17
26. वही
27. वही, पृ॰ 18
28. वही, पृ॰ 19
29. वही
30. वही, पृ॰ 20

31. वही
32. वही
33. सुशीला टाकभौरे, संघर्ष, पृ॰ 14
34. वही
35. वही, पृ॰ 70
36. वही
37. वही, पृ॰ 71
38. वही
39. वही, पृ॰ 73
40. वही, पृ॰ 34
41. वही
42. वही, पृ॰ 36
43. वही
44. वही, पृ॰ 37
45. वही, पृ॰ 35
46. वही, पृ॰ 34
47. दैनिक ट्रिब्यून, समाचार पत्र, 3 अप्रैल, 2012, पृ॰ 9
48. वही, पृ॰ 8
49. जियालाल आर्य, आरक्षण और राज्य का दायित्व, पृ॰ 25
50. रत्न कुमार सांभरिया, खेत तथा अन्य कहानियाँ, पृ॰ 104
51. वही, पृ॰ 105
52. सुशीला टाकभौरे, संघर्ष, पृ॰ 8
53. वही, जन्मदिन, पृ॰ 31
54. जियालाल आर्य, दलित समाज आज की चुनौतियां, पृ॰ 31
55. ब्रह्मानंद, संकल्प, बयान पत्रिका फरवरी, 2010, पृ॰ 21
56. ओमप्रकाश वाल्मीकि, घुसपैठिये, पृ॰ 15
57. वही
58. वही, पृ॰ 17
59. वही, पृ॰ 18
60. रजत रानी मीनू, 'गिरोह', बयान पत्रिका जुलाई, 2011, पृ॰ 23
61. वही,
62. दयानंद बटोही, सुरंग, पृ॰ 17
63. वही, पृ॰ 20
64. ओमप्रकाश वाल्मीकि, घुसपैठिये, पृ॰ 18
65. मस्तराम कपूर, वर्तमान राजनीति के तीन रोग, समाचार-पत्र, 21 अक्तूबर, 2009, पृ॰ 6
66. श्योराज सिंह बेचैन, भरोसे की बहन, पृ॰ 124
67. वही, पृ॰ 125
68. वही, पृ॰ 126
69. वही
70. वही, पृ॰ 128

71. वही
72. वही, पृ० 132
73. वही
74. वही, पृ० 133
75. श्योराज बेचैन, शोध प्रबंध (भरोसे की बहन), पृ० 97
76. वही, पृ० 98
77. वही
78. वही, पृ० 99
79. वही, पृ० 106
80. वही
81. वही, पृ० 107
82. वही, पृ० 108
83. सूरजपाल चौहान, नया ब्राह्मण, पृ० 15
84. वही, पृ० 16
85. वही
86. वही
87. श्योराज सिंह बेचैन, भरोसे की बहन, पृ० 144
88. वही, पृ० 38
89. वही, पृ० 40
90. वही
91. वही, पृ० 41
92. वही, पृ० 42
93. ओम प्रकाश गाबा, राजनीति सिद्धांत के आधार, पृ० 127
94. श्योराज सिंह बेचैन, भरोसे की बहन, पृ० 43
95. वही
96. वही, पृ० 44
97. रजत रानी 'मीनू', गिरोह, बयान पत्रिका, जुलाई 2011, पृ० 22
98. वही
99. वही
100. वही
101. श्योराज सिंह बेचैन, भरोसे की बहन, पृ० 45
102. वही, पृ० 49
103. वही, पृ० 50
104. वही, पृ० 52
105. वही
106. रजत रानी 'मीनू', गिरोह, बयान पत्रिका, जुलाई 2011, पृ० 22
107. वही
108. जियालाल आर्य, आरक्षण और राज्य का दायित्व, पृ० 46
109. रजत रानी 'मीनू', गिरोह, बयान पत्रिका, जुलाई 2011, पृ० 22
110. राम पुनियानी, सामाजिक न्याय एक सचित्र परिचय, पृ० 41
111. श्योराज सिंह बेचैन, भरोसे की बहन, पृ० 86

112. भगवान गव्हाड़े, एकलव्य का अंगूठा, बयान पत्रिका, अक्टुबर, 2010, पृ॰ 22
113. वही, पृ॰ 23
114. वही
115. वही
116. वही
117. वही
118. वही
119. सूरजपाल चौहान, नया ब्राह्मण, पृ॰ 74
120. रत्न कुमार सांभरिया, खेत तथा अन्य कहानियां, पृ॰ 109
121. वही, पृ॰ 105
122. वही, पृ॰ 112
123. वही, पृ॰ 113
124. वही, पृ॰ 114
125. चमनलाल, दलित साहित्य एक मूल्यांकन, पृ॰ 14
126. ब्रह्मनंद, संकल्प, बयान पत्रिका, फरवरी, 2010, पृ॰ 21
127. रजत रानी 'मीनू', गिरोह, बयान पत्रिका, जुलाई, 2011, पृ॰ 21
128. रमेश उपाध्याय, संज्ञा उपाध्याय उत्पीड़ितों का मानाधिकार, पृ॰ 7
129. सूरजपाल चौहान, नया ब्राह्मण, पृ॰ 35
130. वही
131. वही
132. वही, पृ॰ 36
133. वही
134. वही, पृ॰ 37
135. वही, पृ॰ 71
136. श्योराज सिंह बेचैन, भरोसे की बहन, पृ॰ 60
137. वही, पृ॰ 58
138. वही, पृ॰ 60
139. वही, पृ॰ 61
140. सूरजपाल चौहान, नया ब्राह्मण, पृ॰ 84
141. वही, पृ॰ 91
142. वही, पृ॰ 86
143. ओमप्रकाश वाल्मीकि, घुसपैठिये, पृ॰ 83
144. वही, पृ॰ 84
145. वही
146. वही
147. वही
148. वही, पृ॰ 86
149. वही, पृ॰ 87
150. भीमराव अंबेडकर, सम्पूर्ण वाङ्मय, खण्ड-1, पृ॰ 95
151. सुशीला टाकभौरे, संघर्ष, पृ॰ 52
152. वही, पृ॰ 55

153. वही
154. वही
155. वही, पृ॰ 56
156. वही
157. वही, पृ॰ 57
158. संज्ञा उपाध्याय, रमेश उपाध्याय, उत्पीड़ितों का मानाधिकार, पृ॰ 7
159. सूरजपाल चौहान, नया ब्राह्मण, पृ॰ 105
160. संज्ञा उपाध्याय, रमेश उपाध्याय, उत्पीड़ितों का मानाधिकार, पृ॰ 38
161. सुशीला टाकभौरे, संघर्ष, पृ॰ 16
162. श्योराज सिंह बेचैन, भरोसे की बहन, पृ॰ 29
163. वही
164. सुशीला टाकभौरे, संघर्ष, पृ॰ 8
165. रमेश उपाध्याय, संज्ञा उपाध्याय, उत्पीड़ितों का मानाधिकार, पृ॰ 12
166. वही, पृ॰ 44
167. श्योराज सिंह बेचैन, भरोसे की बहन, पृ॰ 18
168. जी॰ सी॰ एल॰ बोधी, कुसुमा, पृ॰ 24, बयान पत्रिका, जुलाई, 2010
169. वही
170. दयानंद बटोही, सुरंग, पृ॰ 53
171. वही
172. वही
173. श्योराज सिंह बेचैन, भरोसे की बहन, पृ॰ 85
174. वही, पृ॰ 90
175. वही, पृ॰ 91
176. वही, पृ॰ 92
177. वही, पृ॰ 93
178. प्रो॰ चमन लाल, दलित साहित्य एक मूल्यांकन, पृ॰ 14
179. सं॰ विकास नारायण राय, लड़कियों का इंकलाब जिंदाबाद, पृ॰ 62
180. जियालाल आर्य, दलित समाज आज की चुनौतियां, पृ॰ 2
181. कंवल भारती, दलित साहित्य की अवधारणा, पृ॰ 105
182. सुशीला टाकभौरे, संघर्ष, पृ॰ 12
183. वही, पृ॰ 13
184. एस॰ आर॰ हरनोट, जीनकाठी तथा अन्य कहानियाँ, पृ॰ 70
185. सूरजपाल चौहान, नया ब्राह्मण, पृ॰ 118
186. रत्न कुमार सांभरिया, खेत तथा अन्य कहानियाँ, पृ॰ 66
187. दयानंद बटोही, सुरंग, पृ॰ 55
188. रत्न कुमार सांभरिया, खेत तथा अन्य कहानियाँ, पृ॰ 93
189. वही, पृ॰ 96
190. सूरजपाल चौहान, नया ब्राह्मण, पृ॰ 19
191. सुशीला टाकभौरे, संघर्ष, पृ॰ 13
192. वही, पृ॰ 14
193. वही, पृ॰ 16

194. वही, पृ॰ 20
195. वही, पृ॰ 37
196. वही, पृ॰ 38
197. वही, पृ॰ 38
198. वही, पृ॰ 38
199. वही, पृ॰ 39
200. वही
201. वही, पृ॰ 72
202. वही, पृ॰ 74
203. दैनिक ट्रिब्यून, समाचार पत्र, पृ॰ 9
204. सुशीला टाकभौरे, संघर्ष, पृ॰ 42
205. वही
206. वही, पृ॰ 43
207. वही, पृ॰ 49
208. वही, पृ॰ 82
209. वही, पृ॰ 83
210. वही, पृ॰ 88
211. एस॰ आर॰ हरनोट, जीनकाठी तथा अन्य कहानियाँ, पृ॰ 46
212. वही
213. वही
214. वही, पृ॰ 48
215. सूरजपाल चौहान, नया ब्राह्मण, पृ॰ 24
216. सुशीला टाकभौरे, संघर्ष, पृ॰ 49
217. वही, पृ॰ 48
218. वही, पृ॰ 60
219. ब्रह्मानंद, संकल्प, पृ॰ 24, बयान पत्रिका, फरवरी 2010
220. वही, पृ॰ 25
221. रत्न कुमार सांभरिया, काल तथा अन्य कहानियाँ, पृ॰ 15
222. सुरेश मारुतिराव मुले, कहाँ गया तुम्हारा स्वाभिमान, पृ॰ 41, बयान पत्रिका, सितम्बर 2009
223. राजेन्द्र बड़गूजर, हमारी जमीन हम बोएंगे, पृ॰ 13
224. सुशीला टाकभौरे, संघर्ष, पृ॰ 83
225. वही
226. दयानंद बटोही, सुरंग, पृ॰ 17
227. वही
228. वही, पृ॰ 19
229. वही, पृ॰ 20
230. वही, पृ॰ 21
231. रमेश उपाध्याय, संज्ञा उपाध्याय, सामाजिक न्याय की अवधारणा, पृ॰ 38
232. श्योराज सिंह बेचैन, भरोसे की बहन, पृ॰ 96
233. वही, पृ॰ 98

234. वही, पृ॰ 107
235. वही, पृ॰ 108
236. वही, पृ॰ 116
237. ओमप्रकाश गाबा, राजनीति सिद्धांत के आधार, पृ॰ 126
238. रत्न कुमार सांभरिया, काल तथा अन्य कहानियाँ, पृ॰ 75
239. ब्राह्मनंद, संकल्प, पृ॰ 21, बयान पत्रिका, फरवरी 2010
240. वही, पृ॰ 25
241. वही, पृ॰ 25
242. सुशीला टाकभौरे, संघर्ष, पृ॰ 88
243. श्योराज सिंह बेचैन, भरोसे की बहन, पृ॰ 40
244. वही, पृ॰ 48
245. रमेश उपाध्याय, संज्ञा उपाध्याय, सामाजिक न्याय की अवधारणा, पृ॰ 30
246. भगवान गव्हाडे, एकलव्य का अंगूठा, पृ॰ 24, बयान पत्रिका, अक्टूबर 2010
247. रमेश उपाध्याय, संज्ञा उपाध्याय, सामाजिक न्याय की अवधारणा, पृ॰ 36
248. वही
249. एस॰ आर॰ हरनोट, जीनकाठी तथा अन्य कहानियाँ, पृ॰ 78
250. सुशीला टाकभौरे, संघर्ष, पृ॰ 59
251. वही, पृ॰ 62
252. वही, पृ॰ 63
253. श्योराज सिंह बेचैन, भरोसे की बहन, पृ॰ 66
254. सूरजपाल चौहान, नया ब्राह्मण, पृ॰ 84
255. वही, पृ॰ 88
256. वही, पृ॰ 89
257. एस॰ आर॰ हरनोट, जीनकाठी तथा अन्य कहानियाँ, पृ॰ 67
258. सुशीला टाकभौरे, संघर्ष, पृ॰ 73
259. वही, पृ॰ 74
260. वही
261. ओमप्रकाश वाल्मीकि, सलाम, पृ॰ 116
262. रत्न कुमार सांभरिया, काल तथा अन्य कहानियाँ, पृ॰ 118
263. सुशीला टाकभौरे, संघर्ष, पृ॰ 48
264. सुरेश मा॰ मुले, दूसरी शादी, पृ॰ 17, बयान पत्रिका, फरवरी 2010
265. सुशीला टाकभौरे, संघर्ष, पृ॰ 89
266. ब्राह्मनंद, संकल्प, पृ॰ 25, बयान पत्रिका, फरवरी 2010
267. रमेश उपाध्याय, संज्ञा उपाध्याय, सामाजिक न्याय की अवधारणा, पृ॰ 36
268. प्रो॰ चमनलाल, दलित साहित्य एक मूल्यांकन, पृ॰ 95
269. जयराज खुने उस्मानबादे, दावत, पृ॰ 57, बयान पत्रिका, मई 2010
270. वही
271. वही
272. एस॰ आर॰ हरनोट, जीनकाठी तथा अन्य कहानियाँ, पृ॰ 76
273. वही, पृ॰ 34
274. वही, पृ॰ 35
275. वही, पृ॰ 36